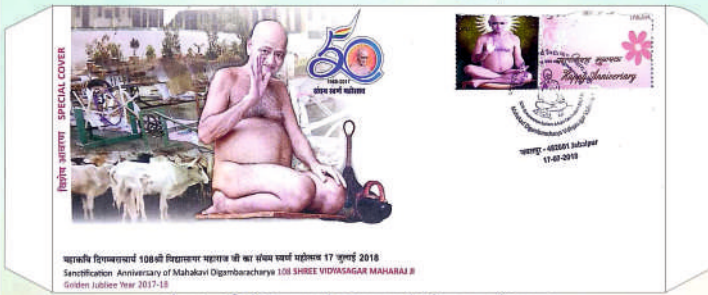


इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिण्डल भारतीय डाक विभाग के परिण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।

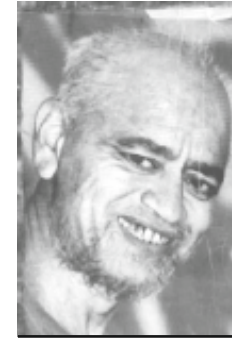


आचार्य दिगम्बर 108वीं विद्यासागर महाराज जी का संयम स्वर्ण महोत्सव 17 जुलाई 2018
Santharpan Anniversary of Mahatma Digambaracharya 108 SHREE VIDYASAGAR MAHARAJ
Golden Jubilee Year 2017-18

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पुण्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देखें व एड मुक्त हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	माह के प्रमुख वत
16	रविवार	चतुर्दशी	आर्द्रा	18 जुलाई: अधिक मास प्रारंभ
17	सोमवार	अमावस	पुनर्वसु	06 अगस्त: 13, 20, 27 रविब्रत
18	मंगलवार	प्रतिपदा	पुष्य दिन-रात	10 अगस्त: रोहिणी व्रत
19	बुधवार	द्वितीया	पुष्य	
20	गुरुवार	तृतीया	आश्लेषा	
21	शुक्रवार	चतुर्थी	मघा	
22	शनिवार	पंचमी	पूर्वाफाल्गुनी	23 जुलाई: 05/54 बजे से 29/54 बजे तक।
23	रविवार	षष्ठी	उत्तराफाल्गुनी	27 जुलाई: 25/28 बजे से 29/56 बजे तक।
24	सोमवार	षष्ठी	हस्त	28 जुलाई: 05/56 बजे से 24/55 बजे तक।
25	मंगलवार	सप्तमी	चित्रा	30 जुलाई: 05/57 बजे से 21/32 बजे तक।
26	बुधवार	अष्टमी	स्वाती	06 अगस्त: 25/43 बजे से 30/00 बजे तक।
27	गुरुवार	नवमी	विशाखा	08 अगस्त: 25/32 बजे से 30/01 बजे तक।
28	शुक्रवार	दशमी	अनुराधा	09 अगस्त: 06/01 बजे से 30/01 बजे तक।
29	शनिवार	एकादशी	ज्येष्ठा	14 अगस्त: 11/07 बजे से 30/03 बजे तक।
30	रविवार	द्वादशी - त्रयोदशी	मूल	15 अगस्त: 13/59 बजे से 30/04 बजे तक।
31	सोमवार	चतुर्दशी	पूर्वाषाढ़	
अगस्त 2023				शुभ मुहूर्त
1	मंगलवार	पूर्णिमा	उत्तराषाढ़	मशीनरी प्रारंभ: जुलाई-24, 28 अगस्त-3, 7, 14
2	बुधवार	प्रतिपदा	श्रवण	वाहन खरीदने: जुलाई-24, 26 अगस्त-2, 3, 7, 11, 14
3	गुरुवार	द्वितीया	धनिष्ठा	नवीन वस्त्राभूषण: जुलाई-26, 27, 28 अगस्त-10
4	शुक्रवार	तृतीया	शतभिषा	औषधी सेवन: जुलाई-24, 26, 28, 30
5	शनिवार	चतुर्थी/पंचमी	उत्तराभाद्रपद	अगस्त-3, 7, 11, 14
6	रविवार	षष्ठी	रेवती	
7	सोमवार	सप्तमी	अश्विनी	
8	मंगलवार	अष्टमी	भरणी	
9	बुधवार	नवमी	कृत्तिका	
10	गुरुवार	दशमी	रोहिणी	
11	शुक्रवार	एकादशी	मृगशिरा दि./रा.	
12	शनिवार	द्वादशी	मृगशिरा	
13	रविवार	त्रयोदशी	आर्द्रा	
14	सोमवार	चतुर्दशी	पुनर्वसु	
15	मंगलवार	चतुर्दशी	पुष्य	
सूर्योदय-सूर्यास्त				
	ता.	माह	सूर्योदय	सूर्यास्त
20	जुलाई	05/53	19/13	
25	जुलाई	05/55	19/11	
30	जुलाई	05/57	19/09	
04	अगस्त	05/59	19/06	
09	अगस्त	06/01	19/03	
14	अगस्त	06/03	19/00	



संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 291 • जुलाई 2023

• वीर नि.संवत् 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

- एलिचपुर के राजा श्रीपाल उर्फ ईल 08
- पू. आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज का उत्तम आचार्यत्व 12
- मन की शुद्धि के लिये आवश्यक कार्य 19
- जैन संस्कृत पुराणों के तत्व 21
- 400 वर्ष प्राचीन पाण्डुलिपि नैनागिरि में 24
- श्री नीरज जी जैन एक अलौकिक व्यक्तित्व 31
- प्रभाचन्द्र का समय 50
- वरिष्ठ नागरिक: ऑनलाईन वसीयत का रूझान 57
- हिचकी याद कर किसकी कारण व नियंत्रण उपाय 59

बाल कहानी

- कमलेश का कलश 62

कविता

- हो आत्म आभास 20
- हिन्दी दोहावली 22
- मुनीद्रों के स्वामी मुनिसुब्रत 26
- गरीबों के आंसू 30
- मूक पखेऊ जान बचाना 56
- धर्म पंथ पर 58

कहानी

- पायल की झंकार 44

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 18
- चलो देखें यात्रा : 23 • आगम दर्शन : 27 • पुराण प्रेरणा : 29 • कैरियर गाइड : 36
- माथा पच्ची : 37 • दुनिया भर की बातें : 37 • इसे भी जानिये : 42 • दिशा बोध : 43
- हमारे गौरव : 49 • हास्य तरंग-पाककला : 61
- बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-9425141697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-9412889449
डॉ. ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-9793821108
अभिनदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✽ आंतरिक सज्जा ✽
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगंबर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मादी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की
स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर
सहयोग करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : 2100/- (15 वर्ष)
-संरक्षक : 5001/- (सदैव)
-परम सम्माननीय : 11000/- (सदैव)
-परम संरक्षक : 15001/- (सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया - संस्कार सागर
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक - ब्र. जिनेश मलैया
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)
• आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)



में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय - संस्कार सागर
श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर - 10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

पाती
पाठकों
की....

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी की गई किन्तु सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें तत्काल रिहा करने के आदेश दिये उनकी गिरफ्तारी के दौरान पूरे पाक में अराजकता फैल गई और पाकिस्तान में गृह युद्ध की स्थिति बन गई। अब देखना यह है कि पाकिस्तान का हर प्रधानमंत्री सत्ता छोड़ने के बाद या तो जेल में होता है या विदेश भाग जाता है या फिर उसे फांसी पर चढ़ा दिया जाता है पाक की राजनीति है जब आतंक अथवा सेना गठजोड़ करके चलती ही तब परिणाम इसके दूसरे आयेंगे ऐसी उम्मीद ही की जा सकती है और इसके सिवाय पाक राजनेतों का भविष्य क्या हो सकता है कंगाल पाकिस्तान का भविष्य ही क्या होगा।

इन्द्रकुमार मंडलोई, बावनगजा

• सम्पादक महोदय, बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने भारत के सभी विपक्षी मुख्य मंत्रियों से मुलाकात कर विपक्षी एकता करने का प्रयास किया है। किन्तु विपक्षी एकता आँवले की पोटली बनाने के समान है। एक तरफ से आँवले सम्हलते तो दूसरी तरफ आँवले निकलने को बेताव हो जाते हैं। ठीक उसी तरह से एक तरफ से विपक्ष संगठित होता हुआ चुनाव के पहले दिखता है किन्तु जब सीटों का बँटवारा होने लगता है तब विपक्ष बिखर जाता है विपक्ष जब तक लक्ष्य निष्ठ नहीं बनेगा तब तक विपक्षी एकता मात्र दिखावे के सिवाय और कुछ नहीं होगी। विपक्ष को गंभीर और विकास का पक्षधर बनना ही होगा जाति आधारित राजनीति से ऊपर उठकर सोचना होगा। वोट बैंक के लिये नहीं ही नहीं अपितु राष्ट्रवादी विचार धारा का हामी बनना होगा।

डॉ. शुभिमारीरा, इंदौर

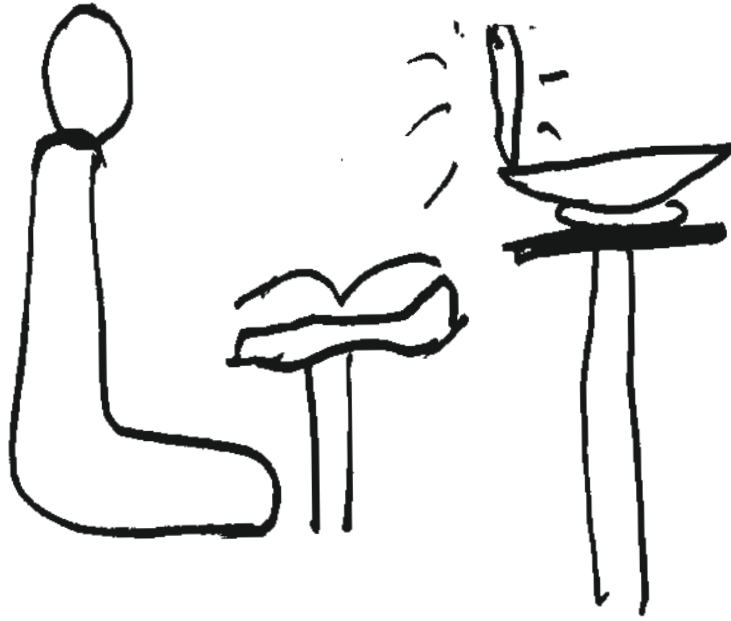
• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अंक में हमारे गौरव स्तंभ के अंतर्गत आचार्य आर्यनंदी का परिचय हुआ प्राप्त जिन्होंने ने तीर्थरक्षा की दृष्टि से उल्लेखनीय कार्य किया है, 70 के दशक में आचार्य आर्यनंदी जी के द्वारा तीर्थ रक्षा के लिये जो धनसंग्रहण किया था वो आज हर प्रकार से उपयोगी सिद्ध हो रहा है, परंतु दुःख का विषय है कि वर्तमान तीर्थक्षेत्र के पदाधिकारी पंथ संतवाद के चक्कर में पड़कर तीर्थक्षेत्र की रक्षा के लिये संवेदनशील नहीं हैं शायद इसी कारण से आचार्य श्री की आत्मा कभी-कभी तड़प उठती होगी, तीर्थक्षेत्र के पदाधिकारियों एवं कमेटी के सदस्यों का परम कर्तव्य है कि भारत वर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी को मात्र चुनाव का अखाड़ा न बनाये अपितु तीर्थ रक्षा हेतु हर स्तर पर जागरूक रहें।

राकेश जैन, सिरोंज

• सम्पादक महोदय, श्री धवल का रचनाकार शीर्षक से संस्कार सागर के जून के अंक में अनेकांत के साभार से लेख पढ़ा। सिद्धांत ग्रंथ की श्रृंखला में धवल टीका का महत्वपूर्ण स्थान है, धवल टीका में मात्र सिद्धांत का विवेचन नहीं है। नय प्रमाण निक्षेप और न्याय की गंभीर चर्चा धवल टीका में उपलब्ध होती है। तथा आचार्य वीरसेन जी द्वारा शंकाओं के समाधान गुंथियों को सुलझाने में प्राचीन काल से आज तक दर्पण का कार्य कर रही हैं, ऐसे आचार्य वीरसेन जी के द्वारा रचित ग्रंथ कोई सौभाग्यशाली ही पढ़ सकता है, बहुत पुण्यवान जीवों को इस ग्रंथ का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होता है, संस्कार सागर ने प्राचीन ग्रंथों के लेखों की श्रृंखला चलाकर संसार के सामने उन विद्वानों को जीवित करने की कोशिश की है जो काल के गहरे गर्त में समा चुके थे। इस प्रशंसनीय कार्य के लिये संपादक मंडल को साधुवाद।

डॉ. कमलेश बसंत, अलवर

भक्ति तरंग तारणहारी जिनवाणी



तारन को जिनवाणी ॥ टेक ॥

मिथ्या चुरै सम्यक् पूरे, जनम-जरामृत हानी ॥ तारन ॥1॥

जड़ता नाशै ज्ञान प्रकाशै, शिव-मारग-अगवानी ॥ तारन ॥2॥

द्यानत तीनों-लोक व्यथाहर, परम-रसायन मानी ॥ तारन ॥3॥

संसार-सागर से पार उतारने के लिये अर्थात् अज्ञान को दूर करने के लिये जिनवाणी ही सक्षम व समर्थ है।

यह मिथ्या पक्ष का नाश करती है, सम्यक् पक्ष को आलोकित करती है। यह जन्म, बुढ़ापा व मृत्यु की स्थिति का नाशकर अजर-अमर होने की राह बताती है।

जिनवाणी अज्ञान का नाश करती है, ज्ञान का प्रकाश फैलाती है। मोक्षमार्ग पर अग्रसर करती है।

द्यानतराय कहते हैं कि तीनों लोकों के कष्टों का हरण करने वाली यह जिनवाणी परम रसायन है।



2023 का वर्षायोग कैसे मनायें

जैन संत वर्षायोग के चार माह साधना प्रभावना स्वाध्याय और समाज संस्कार निर्माण में व्यतीत करते हैं। साधना तप और ध्यान के रूप में होती है, तप अनशन अवमौदर्य, वृत्ति परिसंख्यान, रस परित्याग, विविक्ति शय्यासन कायक्लेश इन तपों का वर्णन जिनागम में मिलता है। वर्षायोग में संत साधु सभी बाह्य तपों की साधना शक्ति के अनुसार करते हैं। शक्ति के अनुसार तप करने से साधना अपनी चरम स्थिति पर पहुंच सकती है लेकिन जो तन शक्ति से बाहर निकलकर साधना करते हैं वे मानसिक क्लेश को ही जन्म देते हैं। यह क्लेश आर्त रौद्र ध्यान का कारण बन जाता है। अंतरंग साधना प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग, ध्यान इस प्रकार की अंतरंग साधना में बाह्य तप का महत्वपूर्ण योगदान होता है बिना बाह्य तप के अंतरंग तपों साधना संभव नहीं होती है।

साधना के बाद वर्षायोग में प्रभावना तत्त्व को भुला देना एक गंभीर भूल होती है। तप, विद्या, और कला की योग्यता से समाज में व्याप्त जिनशासन के प्रति अज्ञान को समाप्त कर देने का नाम सच्ची प्रभावना है। वर्तमान में वर्षायोग के अंतर्गत कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। किन्तु आयोजन का प्रयोजन स्पष्ट न होने से प्रभावना की फिल्म पिट जाती है। प्रदर्शन प्रतिष्ठा और प्रतिस्पर्धा के चक्रव्यूह में प्रभावना घिरकर रह जाती है, इन तीनों के रहते जिनशासन की महिमा वृद्धिगत नहीं हो पाती है। प्रभावना के मौलिक उद्देश्य को भूलकर तत्त्व प्रभावना से दूर हटकर व्यक्ति प्रभावना में केन्द्रित साधक ख्याति लाभ पूजादि चाह से ठगा हुआ रह जाता है और प्रभावना करने के बाद भी आत्म कल्याण से दूरियाँ बढ़ती चली जाती हैं।

वर्षायोग में स्वाध्याय तत्त्व को साधक यदि अपने समक्ष रखता है तो श्रमण और साधु की ज्ञान उन्नति अवश्य होती है क्योंकि ज्ञान के बिना वैराग्य स्थिर होना असंभव सा होता है अतः आचार्य समंतभद्र देव ने तपोधन के लक्षण में ज्ञान, ध्यान और तप की लीनता को सर्वोपरि स्थान दिया है। स्वाध्याय रूपी दीपक जिसके हाथ में होता है वह कभी पतन के गर्त में नहीं गिर सकता है।

समाज और संस्कार निर्माण में संत की भूमिका सदैव आपेक्षित रही है। भावी पीढ़ी के चरित्र और चिंतन को सदाचार की उत्कृष्ट पहचान देने के लिये संस्कार निर्माण अहम बिन्दु है। व्यसन मुक्ति के संस्कार आदर्श समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। अतः उपयुक्त चार बिंदुओं के आधार पर वर्षायोग को सार्थक किया जा सकता है।

वर्तमान में तीर्थरक्षा का प्रश्न भी गंभीर रूप से समाज में उभर रहा है। तीर्थरक्षा से ही हमारी प्रतिष्ठा रक्षित होती है तथा मोक्षमार्ग का भविष्य-रूप भी सुनिश्चित होता है। शिरपुर तीर्थ दिगम्बर जैन समाज अपने दिगम्बरत्व स्वरूप की रक्षा के लिये याचना कर रहा है। अपेक्षा यह है कि यदि समाज के सभी जन और सभी वर्ग के लोग यदि इस तीर्थ की रक्षा के लिये संवेदनशील हो जायेंगे तो शिरपुर के अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान का मूल स्वरूप बदलने का कुत्सित प्रयास असफल अवश्य होगा। मुझे विश्वास है कि भारतवर्ष की संपूर्ण दिगंबर जैन समाज जाति, पंथ, संप्रदाय, संघ, संतभेद को भुलाकर तीर्थ में अपना योगदान सुनिश्चित करते हुये वार्षिक, मासिक कार्यक्रम बनाकर शिरपुर की यात्रा अवश्य करेंगे।

एलिचपुर के राजा श्रीपाल उर्फ ईल

✽ नेमिचंद धनुसा जैन, देवलगांव राजा ✽ (अनेकांत फरवरी 68)

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ के बस्ती मंदिर में जो सफेद पाषाण की पद्मावती माता की दिगम्बरी प्रतिमा है, उनके सामने वहां की सुवासिनी स्त्रियां यह मंगल आरती नित्य गाती हैं।

जाउ चला ग सखे, गाउ चला ग सखे, जाउ लवकारी ॥

चेउनी हाली दीपक ज्योती, रत्नखचित हिरे माणिक मोती दैवाची पद्मावती, काय सांगू साजणी ग जाउ लवकारी ॥1॥

भूपाल राजाची कन्या संगोनी, श्रीपाल राजाची ऐका कपानी गंधोद घे ग सखे, मन्न प्रभावना। ग जाउ लवकारी ॥2॥

(जसी) सूर्य सुन्दर राती, (तसी) श्रीपाल राजामती।

प्रसन्न हो ग सखे, मनप्रभावना। ग जाउ लवकारी ॥3॥

इसमें दूसरा तथा तीसरा भाग ऐतिहासिक महत्व रखता है। जब श्रीपाल राजा को कुष्ठ रोग हुआ और विश्राम के लिये उसने श्रीपुर का आश्रय लिया था। तब उसके साथ भूपाल राजा की कन्या थी। जिसने राजा को मंत्र साधना में साथ देकर तथा कूपजल याने मूर्ति संसर्गित जल यानि गंधोदक उससे स्नान कराकर व्याधि से राजा को मुक्त किया था। वह कैसी थी? तो जैसी सूर्य को सती, वैसी वह श्रीपाल राजा को रानी थी। उसका नाम राजा मती था। मंत्र प्रभाव से माता पद्मावती ने राजा को साक्षात्कार देकर मूर्ति की प्राप्ति कराई थी।

श्रीपाल राजा की रानी के उल्लेख तो अनेक साहित्य में है। उनके उतारे यहां देने की आवश्यकता नहीं है। तथा जब दूसरा प्रबल विरोधी प्रमाण हमारे सामने नहीं आता तब तक इसको ग्राह्य मानने में कोई आपत्ति नहीं आयेगी।

तथापि इसके प्रमाण के लिये मुनि कनकामर रचित 'करकंडु चरित्र' की प्रशस्ति में उल्लेखित 'राजा भूपाल' के काल और स्थल पर यदि उचित प्रकाश पड़े तो अच्छा होगा। उससे श्रीपाल राजा के समदी राजाओं की परंपरा का पता चल जायेगा। इसके लिये श्री पं. परमानंद शास्त्री 'जैन-ग्रंथ-प्रशस्ति-संग्रह' द्वितीय भाग पृष्ठ 136 पर लिखते हैं- "करकंडु चरित जिनके अनुराग बश बनाया गया था, ग्रंथकार ने उनका नाम कही भी उल्लिखित नहीं किया। कवि ने उन्हें धर्मनिष्ठ और व्यवहार कुशल बतलाया है। वे विजयपाल नरेश ने स्नेह पात्र थे। उन्होंने भूपाल नरेश के मन को मोहित कर लिया था। वे कर्णदेव के चित्त का मनोरंजन किया करते थे।

उक्त राजा गण कब और कहां हुये इसी पर यहां विचार किया जाता है- एक लेख में लिखा है कि विजय पाल नरेश विश्वामित्र गोत्र के क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुये थे। उनके पुत्र भुवनपाल थे, उन्होंने कलचूरी, गुर्जर और दक्षिण को विजित किया था। यह लेख दमोह जिले के हटा तहसील में मिला था। जो आजकल नागपुर के अजायब घर में सुरक्षित है।

दूसरा लेख- बांदा जिले के अंतर्गत चंदेले की पुरानी राजधानी कालिंजर में मिला है। उसमें विजयपाल के पुत्र भूमिपाल का दक्षिण दिशा और राजा कर्ण से जीतने का उल्लेख है।

तीसरा लेख- जबलपुर जिले के अंतर्गत 'तीवर' में मिला है, इसमें भूमिपाल के प्रसन्न होने का स्पष्ट उल्लेख है।

सं. 1097 के लगभग कालिंजर में विजयपाल नाम का राजा हुआ। यह प्रतापी कलचूरि नरेश कर्णदेव के समकालीन था। आदि।

मुनि कनकामर इन सबके समकालीन होने से अगर ये भूपाल और भूमिपाल एक ही व्यक्ति हो तो भूपाल नरेश का संबंध दक्षिण में आता है। अतः उसकी लड़की जिसका घरेलू नाम शायद 'संगोनी' हो और ब्याह समय या व्यवहार में जिसे 'राजा मती' कहते थे, उसकी शादी इन राजा श्रीपाल से हुई तो कोई बाधा नहीं आती।

सिर्फ अभी उनके निश्चित समय तथा स्थान और कार्यक्षेत्र पर अधिक प्रकाश पड़ना चाहिये।

(2) अब राजा श्रीपाल के गजब का धर्मप्रेम तथा वीर और अभिमानी मृत्यु प्रसंग का ज्ञान पाठक गण को कराते हैं। यह वार्ता अमरावती जिला गजेटियर में उल्लेखित मुसलमानी कथा के अनुसार इस तरह है।

“ किसी एक समय एक मुसलमानी फकीर एलिचपुर के राजा ईल के दरबार में पहुंचा, और उसने राजा को इस्लाम धर्म स्वीकारने को कहा तथा धर्म प्रचार की अनुमति मांगी। राजा ने उसको चले जाने को कहा। लेकिन उसके हठ के कारण उसके हाथ कटवा दिये।

फकीर ने भारत छोड़ा और अपनी दैन्यावस्था शाह अब्दुल रहमान के सामने रखी। रहमान उस समय गजनी में था, और वह वहां के राजा महमूद का भांजा था। उस समय उसकी शादी का उत्सव मनाया जा रहा था। फकीर की वह करुण दशा देखकर उसका धर्मप्रेम जाग उठा और उसने वह समारंभ बाजू रखकर एकदम कई हजार सैनिकों के साथ बेरार (विदर्भ) की ओर चल पड़ा। उसके साथ उसकी माता बीबी मलिका-ई जहान भी थी।

उस समय उत्तर भारत में वकद (Vakad) खेरला शिलालेख के अनुसार जिसका नाम उछेद बकल था। राजा राज्य करता था। इसको एक समय ईल राजा ने पराभूत किया था वह अब्दुल रहमान को मिल गया याने उसकी इस युद्ध में सहायता की। यह आक्रमण का हाल सुनते ही ईल राजा ने सेनापति को उसका प्रतिकार करने को सैन्य भेजा। दोनों सेनाओं की भेट खेरला में हुई जो बैतूल जिले में है। प्रारंभ में मुसलमानों की हार होने लगी। इतने में आकाशवाणी हुई, उससे अब्दुल रहमान ने उत्तेजित होकर शिर कटा लिया और लड़ने लगा। उन्होंने हिन्दुओं को लूटा और एलिचपुर तक पीछे नहीं देखा।

यहां फिर खुद राजा ईल से संग्राम हुआ, वहां भी ईल पराभूत हुआ और उसने शहर का आश्रय लिया। उसको पकड़कर अब्दुल रहमान के सामने लाया गया। अब्दुल रहमान ने उसको इस्लाम धर्म स्वीकारने को कहा, इसको राजा ने एकदम नकार दिया। बाद में राजा की पूछा गया

कि आप अगर विजयी होते तो क्या करते ?

राजा ने उत्तर दिया कि “मैं अब्दुल रहमान को उड़ा देता। तीक्ष्ण शास्त्रों से उसकी चमड़ी (खाल) निकालकर उसको जला देता। किसी भी तरह का समय न लगाते हुये इसी तरह की शिक्षा राजा को देने की अब्दुल रहमान ने आज्ञा दी और उसको एक प्रमुख नरक में भेज दिया। घटना का समय हिजरी सन् 392 याने 1001-2 सन् ईस्वी है। अब्दुल रहमान गाजी के अनुयायी, जिन्होंने राजा ईल को पकड़ा था, साधारणतः पंचपीर या पंचपीर के नाम से प्रसिद्ध थे। आदि।

गजेटीयर के अन्त में लिखा है कि जनश्रुति के अनुसार इस गाजी का सिर उड़ा दिया गया है।

यह है एक शहीद की पुण्य गाथा, जो खुद मुसलमान लेखक ने उसको अमर बनाने के लिये लिखी, कहाँ ? गजमी में। कहते हैं कि उस पर से ‘तवारीख-ई-अमजदिया’ नाम की एक छोटी पुस्तिका पारसी में एलिचपुर के खतीफ ने प्रकाशित की थी।

यहाँ ऊपर की कथा में एक असंभव बात बताई गई है कि अब्दुल रहमान ने अपना सिर कटा लेने पर भी वह जीवित रहा, तथा उसने ईल राजा को भी हराया।

इसके सत्यासत्य के लिये थी यादव माधव काल के ‘कहाडचा इतिहास’ के लेख का उल्लेख देखना उचित है पृष्ठ 71 पर- गाजी रहमान दुल की ओर ईल राजा की लड़ाई हुई। उसमें राजा ईल और शाह रहमान दोनों ही पड़े। इस लड़ाई में मुसलमानों के ग्यारह हजार सैनिक खर्ची पड़े। उन सबको एक जगह गाड़ दिया गया है। उस पर एक बड़ा इमाला बंधाया है। उनको ‘गंजशहीदा’ कहते हैं। दुल रहमान की बड़ी कबर हाल में ही एलिचपुर में मौजूद है। उसके खर्च के लिये ‘कांडली’ यह गांव अभी तक जहागीर है। यह जहागीर एलिचपुर के नबाब ने दी है। दुल रहमान गाजी की कबर प्रथम अलाउद्दीन खिलजी ने बंधायी थी। हाल की इमारत बाद में की है। नजदीक ही ईल राजा को गाड़ दिया है। आदि।

ऊपर के उल्लेख से यह तो स्पष्ट हुआ कि रहमान गाजी इस लड़ाई में मारा गया था। तथा खेरला के पास रहमान गाजी के मुंड की कवर बनाई जाती है, इससे और मुसलमानी कथा से रहमान दुल का सिर खेरला में ही काटा गया था और उससे उनकी हार हो रही थी। लेकिन ऐसा लगता है कि उसकी मां बीबी मलिका-ई-जहान ने उस समय धैर्य रखकर अपनी सेना को उत्तेजित करने हुये ऐसा कहा होगा कि “अल्ला की आवाज आने से और अपने को विजय मिलने के लिये दुला रहमान ने अपना सिर कटा लिया है और वे इमदाद माँगने के लिये अल्ला के दरबार में पहुँच गये हैं। तब क्या आप भाग जाओगे ? क्या काले मुंह वहाँ बतायेंगे ? क्या आपकी प्रतिज्ञा-जियेंगे तो इस्लाम के लिये, और मरेंगे तो इस्लाम के लिये-आप भूल गये ? जब जिहाद की पुकार करो और लड़ो। अल्ला आपकी मदद करेगा।”

इस तरह आवाज सुनकर मुस्लिम सैन्य उत्तेजित हुई, और रहमान गाजी के गिरने से उनके सैन्य की घबड़ाहट देखकर राजा ईल के सैनिक गाफिल रहे होंगे। अचानक बीबी मलिका ने उन पर कड़ाके में हमला किया।

अबकी बार ईल राजा के सैनिक पीछे हटे। पीछे हटने से शायद राजा का सेनापति मारा गया होगा। इसलिये राजा के सैनिक नेतृत्व के अभाव के कारण एलिचपुर भाग आये। और उनका पीछा करते हुये मुसलमानों ने रास्ते में जो मिला उनको लूटा और नष्ट भ्रष्ट किया।

एलिचपुर में मुसलमानों के ग्यारह हजार सैनिक मारे गये, इस पर से ऐसा लगता है कि वहाँ ईलराजा को नेतृत्व उचित रहा। शायद इस युद्ध में ईल राजा ही विजयी हुआ होगा। क्योंकि लड़ाई में पराजित होने वाला और आश्रय के लिये शहर में भागने वाला राजा पकड़े जाने पर वीर रस पूर्ण तथा स्वाभिमानी उत्तर नहीं दे सकता था। वीर युद्ध में ही मरण स्वीकार कतरे हैं। अतः युद्ध में सरलता ने विजय न मिलती देख बीबी मलिका ने युद्ध को समाप्त होने की घोषण कर कूटनीति अपनाई होगी।

एलिचपुर के कमानपुरे में एक देवडी में बाण की निशानी बनाई है। यह स्थान मुसलमान पूज्य मानते हैं। बाण की निशानी गांव में से बाहार की ओर बताई है। जनश्रुति तो यह है कि यहाँ ईल राजा की बाण लगकर मृत्यु हुई। अगर बाण से राजा की मृत्यु होती, तो पंचपीरों से उसका पकड़े जाना और स्वाभिमानी मरण यह घटना झूठी ठहरती। लेकिन राजा के वैसे मरण का स्पष्ट उल्लेख होने से बाण से मृत्यु की कल्पना ठीक नहीं बैठती जंचता तो ऐसा है कि जब पंचपीरों से राजा पकड़ा जा रहा था, तब एक पीर राजा से आये हुये तीर से घायल हो पड़ा हो, इसीलिये वह स्थान मुस्लिम लोग पूज्य मानते हैं।

इस बात पर विश्वास तो जरूर रखना पड़ता है कि उन पीरों के द्वारा राजा किसी भी तरह पकड़ा गया और इस गंधवार्ता को सुनते ही वीवी मलिका ने बचे हुये सैनिकों से फिर एक दम हमला कर नगर को कब्जे में कर लिया हो और विजय की पताका फहराई हो।

ऐसी असहाय स्थिति में ईल राजा को इस्लाम का उपदेश दिया गया। मगर उससे ऐसी स्थिति में भी स्पष्ट नकार आने से राजा की पूछा गया कि अगर आप विजयी होते और अब्दुल रहमान आपके हाथ पड़ता, तो आप क्या करते ?

जबाब वही मिला, जो कि ऊपर दिया गया है। धन्य है वह राजा, जिसने शरीर पर की खाल उतारने की अनंत वेदना सहन की मगर सच्चे धर्म का परित्याग नहीं किया। जिसने इस एक जीवन का नाश मान्य किया मगर अनंत भवों में दुःखदाई ऐसा भयावह परधर्म नहीं अपनाया। इसी का नाम धर्मप्रेक्ष है और इसी का नाम सम्यक्त्व है। उस धर्मनिष्ठ और वीर राजा श्रीपाल उर्फ ईल को हमारा प्रणाम। उसके जीवन से हमें यहीं संदेश मिलता है कि आत्महितेच्छु जीव किसी भी परिस्थिति में धर्म का त्याग नहीं करते। उल्टा प्रसंग बीतने पर प्राण की वाजी लगा कर धर्म की रक्षा करते हैं। तो क्या अभी हम उसी ईल राजा के निर्माण किये हुये इस श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ की रक्षा नहीं कर सकेंगे ? करेंगे, करेंगे, अवश्य ही करेंगे।

पू. आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज का उत्तम आचार्यत्व

✽ ब्र. मनीष ज्ञान, तेन्दूखेड़ा ✽

आचार्यतेऽस्मादाचार्यः ।

जिनसे आचार ग्रहण किया जाता है उन्हें आचार्य कहते हैं।

108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आचार के हिमालय हैं, उनके तप संयम समता समाधि साधना ने जैन जगत् का नाम उन्नत किया है। सम्पूर्ण जैन समाज उनके अहिंसक अनेकांतिक विचार आचार से अलंकृत हो रही है।

भगवान महावीर के तीर्थ में सदियों बाद सूर्य सम ज्ञानप्रकाश देने वाले तेजस्वी आचार्य को हम देख पा रहे हैं। चारित्रिक क्षेत्र में इस काल में नया कीर्तिमान रचने वाले आचार्य विद्यासागर जी महाराज हम सबके भाग्यविधाता तारण हारे हैं।

हमें विषय मिला है आचार्य विद्यासागर जी महाराज का उत्तम आचार्यत्व, पर ये विराट कार्य तो हमारे लिये ऐसा ही हो गया जैसे सागर को पार करने के लिये टूटी नाव या सूर्य को दीपक दिखाने जैसा उपक्रम।

उत्तम का अर्थ उत्तमः - प्रधानः।

मूलाचार में कहा है

मिच्छत वेदणीयं णाणावरणं चरित्र मोहं च ।

तिविह तमाहु मुक्का, तम्हाते उत्तमा होंति ॥

मिथ्यात्व वेदनीय ज्ञानावरण और चारित्रमोह इन तीन तम से मुक्त हो चुके हैं इसलिये वे केवली उत्तम हैं।

आज हमारे बीच केवली नहीं हैं, पर हमारे आचार्य श्री ही हमारे उत्तम हैं। हम ही नहीं उनके आचरण के प्रत्येक पग/शब्द कह रहे हैं।

आचार्यों का जो स्वरूप मूलाचार धवला आदि में कहा है उसके आधार पर हमारे सबके यह आचार्य देव सत् प्रतिशत खरे उतरते हैं।

लगता है प्रकृति ने सारे के सारे गुणों को एकत्रित करके आचार्य श्री में भर दिये। एक एक कदम में मूलाचार झलकता है। हर श्वास में पंचाचार महकता है। हर रोम से दया का दरिया निकलता है।

पवयव जलहि जलोयर ण्हायामल बुद्धिसुद्ध छावासो ।

मेरूव्व णिप्पकंपो सूरु पंचाण्णो वण्णो ॥29॥

देशकुल जाइ सुद्धो सोमंगो संग भंग उम्मुक्को ।

गयणव्व णिरूव्वलेवो आयरिओ ऐरिसोहोई ॥30॥

संगह णिगह कुसलो सुत्तथ विसारओ पहिय कित्ती ।

सारण वारण साहण किरियुज्जुत्तोहु आयरिओ ॥39॥ धवला 111/1

प्रवचन रूपी सुमुद्र के जल के मध्य में स्नान करने से अर्थात् परमात्मा के परिपूर्ण अभ्यास और अनुभव से जिनकी बुद्धि निर्मल हो गयी है, जो निर्दोष रीति से छह आवश्यकों का पालन

करते हैं, जो मेरू के समान निष्कंप हैं, जो शूर वीर हैं, जो सिंह के समान निर्भीक हैं जो वर्य अर्थात् श्रेष्ठ हैं, देश कुल जाति से शुद्ध हैं, सौम्य मूर्ति हैं, अंतरंग बहिरंग परिग्रह रहित हैं।

आकाश के समान निर्लेप हैं ऐसे आचार्य परमेष्ठी होते हैं।

जो संघ के संग्रह अर्थात् दीक्षा और निग्रह अर्थात् शिक्षा और प्रायश्चित्त देने में कुशल हैं जो सूत्र अर्थात् परमागम के अर्थ में विशारद हैं जिनकी कीर्ति सब जगह फैल रही है जो सारण अर्थात् आचरण, वारण अर्थात् निषेध और साधन अर्थात् व्रतों की रक्षा करने वाली क्रियाओं में निरंतर उद्युक्त हैं उन्हें आचार्य परमेष्ठी समझना चाहिये।

आगम अभ्यास और अनुभव से बुद्धि निर्मल हो गई हैं- जिनवाणी की कृपा ही है, जो उसका अभ्यास और अनुभव करता है। उसकी सकारात्मक सोच बन जाती है। अनुभव से ही सम्यक्ज्ञान प्राप्त होता है। सम्यक्ज्ञानी हमेशा उपकार दया, अहिंसा, अनेकांत, समता के विचारों से ओत प्रोत होता है।

निर्मल परिणामों से ही कर्म निर्जरा होती है। ध्यान में स्थिर होने के लिये निर्मल परिणाम आवश्यक हैं। व्रतों के प्रति आदर निरातिचार पालन की शक्ति भी निर्मलता से मिलती है।

निर्दोष रीति से आवश्यक पालन- आचार्य श्री की सबसे बड़ी विशेषता है कि आवश्यकों को बड़े आदर से श्रद्धापूर्ण मन वचन काय से करते हैं। सामायिक पूर्ण समर्पण भाव जागृत भाव से करते हैं ऐसा नहीं लगता की कहीं फारमिल्टी रूप से कर रहे हों। चारों संध्याओं में सामायिक करते हैं। सामायिक में भी प्रमाद नहीं करते चाहे कैसी भी विषमता हो पर कभी भी विचलित नहीं होते, न ही प्रमाद आता दिखता है। पद्मासन में लकड़ी की ठूठ जैसे निश्चल परिषदों को सहते हुये आत्म ध्यान में लीन रहते हैं। स्तुति वंदना में लीन होते हैं तो पूर्ण समर्पित हो जाते हैं अरिहंत सिद्धों के गुण गान में कभी भी मन चलायमान नहीं दिखाई देता।

वाणी गद्गदयन वपुः पुलकयन् नेत्र-द्वयं श्रावयन् ।

मूर्द्धानं नमयन् करौमुकुलयंश्चेतोऽपि निर्वापयन् ॥

चाहे कितनी भीड़ हो चाहे कितने कार्य हो पर जब जो कार्य करते हैं पूर्ण जागृति में स्वाध्याय के समय जिनवाणी प्रति आदर भाव और ज्ञान के प्रति भक्ति अनुराग झलकता दिखाई देता है।

गंभीर से गंभीर प्रश्नों के उत्तर बड़े सहजता में देते हैं।

एक बार एक शिष्य ने व्यंग रूप में बोल दिया। क्या आप सर्वज्ञ हैं। इस बात पर क्रोध न करके हास्य रूप में टाल दिया और कहा हां हम सब सर्वज्ञ देव को मानने वाले हैं इसलिये हम सब सर्वज्ञ ही तो हैं। यही तो जिनवाणी की विनय है। उस समय अपने आप को सम्हाले रखना। बड़ी बात होती है।

प्रतिक्रमण में प्रत्येक शब्द पूर्ण लीन होकर उच्चारित करते हैं यहां वहां मन नहीं ले जाते। कायोत्सर्ग में कभी भी हाथ की अंगुलियां नहीं हिलती पूर्ण 27 श्वास-उच्छ्वास में पूर्ण करते हैं, कभी- कभी लोग दो-दो कायोत्सर्ग कर लेते जब उनका एक कायोत्सर्ग होता है। कभी भी जल्दबाजी नहीं करते।

मेरू के समान निकम्पः- आचार्य विद्यासागर जी महाराज प्रतिकूलता रूप आंधियों में भी निष्कंप रहते हैं।

महापुरुषों की यही तो निशानी है। छोटी-छोटी बातों में विचलित नहीं होते। जैसे समुद्र में नदियों का पानी कितना भी आ जाये पर उसका स्तर कभी बढ़ता नहीं है और कितना भी ताप हो जाये पानी सूखता नहीं है। कितने शिष्य कितनी योजनाएं, कितनी भीड़, कितना बिहार, फिर भी लेखन स्वाध्याय आदि कार्य चलते रहते हैं। हमेशा हर परिस्थिति में प्रसन्न रहते हैं। हमेशा श्रम करते रहते हैं।

शूर वीर:- आचार्य श्री जहां कदम रख देते हैं कभी पीछे नहीं हटते कभी-कभी संघस्थ जन भी सहमत नहीं होते, पर आचार्य श्री का सोचा हुआ कार्य पूरा होता है। क्योंकि महापुरुषों की सोच देखने में विपरीत लग सकती है, पर उसका एक रहस्य होता है, जो समय आने पर फलदायी होता है, लाभ देता है। कभी-कभी तो समाज भी विरोध करती है, पर कुछ समय पश्चात् समझ में आ जाता कि आचार्य श्री ने सही कहा था। इसलिये समाज आचार्य श्री की आज्ञा बिना किसी विचार के शिरोधार्य करती है।

कुण्डलपुर प्रसंग एक ऐतिहासिक घटना थी। कल वह मंदिर जैन शिल्प का अनुपम उदाहरण बनेगा हजारों वर्षों तक जैन धर्म की पताका फहराता रहेगा। देश विदेशों से लोग आकर बड़े बाबा के दर्शन करेंगे।

सिंह के समान निर्भीक- सिंह वृत्ति के धारक अनियत बिहारी हैं। कभी वसति का समाज मंदिर ग्राम नगर से ममत्व भाव नहीं रखते। परिहार विशुद्धि मुनि जैसी चर्या का पालन करने की चेष्टा करते हैं। कभी कांटा लग जाये तो निकालने का नहीं बोलते, औषधियों का प्रयोग नहीं करते। नगर ग्रामों में ज्यादा नहीं रुकते ज्यादा समय तो क्षेत्रों पर व्यतीत करते हैं। यहां गाजे बाजे मंच माइक लिये लोग खड़े हैं और पीछे से बिहार हो जाता एकाध किलो मीटर के बाद समाज को मालूम पड़ता है। बिहार हो गया। कभी लोग समझते हैं शौच क्रिया को जा रहे हैं, और बिहार हो गया। अनेखी वृत्ति के धारी हैं, कहीं कहीं के लोग 20-20 वर्षों से पुरुषार्थ कर रहे हैं, हमारे यहां का पंचकल्याण आचार्य श्री के सान्निध्य में करायेंगे। पर आचार्य श्री कुछ नहीं कहते। बहुत सारे प्रसंगों में सिद्धांत के आगे भय आशा स्नेह से झुकते नहीं हैं। न ही कभी किसी लोभ के कारण लल्लो चप्पो करते हैं।

श्रेष्ठ हैं:- मुनियों आचार्यों की जो विशेषताएं होती हैं उनमें श्रेष्ठ तो आचार्य विद्यासागर जी ही हैं, ज्ञान, विज्ञान, प्रवचन, काव्य, लेखक, सिद्धांत, साहित्य, व्याकरण, न्याय, अध्यात्म, तप, दया, संगठन, समाजोत्थान, शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, देश प्रगति की भावना, तीर्थोद्धार, महिला विकास आदि अनेक कार्यों में श्रेष्ठ हैं। और किसी संस्था कमेटी आदि से बंधे नहीं हैं। आचार्य श्री ने समाज को जो किया है उसका ऋण समाज हजारों वर्षों तक नहीं चुका सकती।

सौम्य मूर्ति:- समता सहजता तप संयम साधना, शुभ भावों के परिणाम स्वरूप छवि में ऐसा तेज है जो चांद तारों में नहीं, उनकी मुद्रा को देखते हुये कभी मन तृप्त नहीं होता। हजारों किलोमीटर से लोग दौड़े चले आते हैं। आचार्य श्री के रोम-रोम से वैराग्य झलकता है। अंग अंग की रचना मोहक है।

देश-कुल जाति से शुद्ध हो:- कर्नाटक देश हजारों वर्षों से जैन धर्म का केन्द्र रहा है, संस्कारित धार्मिक नैतिक परिवार में जन्म मिला जहां उनकी मां ने घुड़ी में संयम शिक्षा दी, जहां के वातावरण में वैराग्य घुला है। सारा का सारा परिवार संयमी हो गया। ऐसा कुल किसे मिलेगा।

उत्तम कुल ने ही उत्तम आचार्यत्व दिया है।

आज अच्छे से अच्छे साधक भौतिक सुविधाओं चकाचोथ में डगमगा गये हैं। पर एक मात्र आचार्य श्री सुविधा साधनों की आंधी में न बहकर महावीर के सिद्धांतों पर चल रहे हैं।

अंतरंग बहिरंग परिग्रह के ग्रह से दूर भेद विज्ञान की छेनी लेकर कर्म पर्वत को काट रहे हैं। समयसार मय जीवन स्वावलंबन का पाठ पढ़ा रहा है।

जो हर समय अपने परिणामों को पढ़ता हो, देखतो हो। अतिशययुक्ति नहीं होगी, सदियों बाद मूलगुणों के अभिप्राय को किसी ने अच्छी तरह से समझा और जिया है।

आचार्य श्री ने ही प्रवचन की नयी विद्या को जन्म दिया, जिनको सुनने होगी, सदियों बाद मूलगुणों के अभिप्राय को किसी ने अच्छी तरह से समझा और जिया है।

आचार्य श्री ने ही प्रवचन की नयी विद्या को जन्म दिया, जिनको सुनने हजारों लोग आने लगे, वह आचार्य श्री की ही कृपा है।

आज उत्तम चर्या धारक साधक दिख रहे हैं वह आचार्य श्री का जादू है।

आचार्य श्री अनलिमिटेड दीक्षा का बंपर आफर ला दें तो एक दिन में हजारों दीक्षाये हो जायेगी। हजारों भैया दीदी लोग दीक्षा हेतु तैयार ही बैठे हैं।

कीर्तिवान:- आचार्यों के गुणों में आता है कि आचार्य कीर्तिवान होना चाहिये आचार्य श्री की कीर्ति सात समुद्र को लांघ कर सम्पूर्ण विश्व में दिगम्बरत्व का पाठ पढ़ा रही है।

आचार्य श्री के समान कीर्ति आज किसी साधु की नहीं है। यह कीर्ति यंत्र-मंत्र-तंत्र ज्योतिष गण्डा-ताबीज, शनिग्रह निवारण, प्रवचन शैली से नहीं मिली, वह तो रत्नात्रय युक्त मूलगुणों की उत्तम साधना से प्राप्त हुई है।

आज अच्छे साधकों की तुलना आचार्य श्री से की जाती है, यही तो उनकी श्रेष्ठता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

आचार्य श्री की साधना शाश्वत है उधार नहीं। क्योंकि आचार्य श्री कहते हैं 'खरा सो मेरा' अभी तक सदियों के इतिहास में आचार्य विद्यासागर जी महाराज ऐसे उत्तम आचार्यत्व का धारण करने वाले संत हैं जिन्होंने सर्वाधिक दीक्षाएं दी हैं। उनमें भी सबसे ज्यादा साधु उच्च शिक्षित हैं।

आचार्य श्री केवल बालब्रम्हचारियों को ही दीक्षा देते हैं। अगमानुकूल संस्थान वालों को ही दीक्षा देते हैं।

संघ में कभी आर्यिका माता, ब्रह्मचारी भैया, ब्रह्मचारी बहनों, नौकर-चाकर, गाड़ी-घोड़ आदि नहीं रखते।

संघ में कोई साधु शीत ऋतु में चटाई का उपयोग नहीं करते। आज्ञानुवर्ती कोई कोई साधु चटाई का उपयोग करते हैं। अधिकांश साधुओं का नमक रस का त्याग है। आचार्य श्री का नमक, मीठा, तेल, दही, हरी सब्जी, फल मेवा आदि का त्याग है, अनाज दाल भी सीमित संख्या में लेते हैं।

आहार में हमेशा कुएं का जल उपयोग में लिया जाता है। कैसी भी परिस्थिति हो मुंह से कफ, थूक बाहर नहीं करते। यह भी व्रतों के प्रति सजगता है।

रात्रि में लाइट का उपयोग नहीं करते क्योंकि बिजली बनने में हिंसा है, उपयोग करने में

अनेक जीवो ही हिंसा होती है।

आचार्य श्री ऐसे संत हैं जो सदा संध्या कालीन सामायिक में बैठने से पहले लघुशंका जाते हैं फिर प्रातः कालीन सामायिक के पश्चात् जाते हैं। रात्रि में कभी भी लघुशंका या दीर्घशंका नहीं जाते। ऐसी साधना महान् साधकों ही होती है।

केशलॉच कभी न सभी में नहीं करते क्योंकि यह तो साधना, स्वावलम्बन, सिंहवृत्ति की पहचान है हमेशा दो माह बाद करते हैं।

अनियत बिहारी हैं:- भगवती आराधना में कहा गया है साधु को अनियत बिहारी होना चाहिये। कभी भी योजन बद्ध बिहार नहीं करते जिससे वसतिका, समाज, आदि से ममत्व न हो। देश-देश की चर्या, भिन्न वातावरण से परिचय होता है परिषद सहने से ज्ञान की वृद्धि होती है।

निर्यापकाचार्य:- ऐसे प्रथम आचार्य थे जिन्हें अपने गुरु श्री ज्ञानसागर जी ने अपना आचार्य पद देकर शिष्यत्व स्वीकार किया सबसे सफल सल्लेखना की। आचार्य श्री अपने गुरु की सेवा की कि युगों तक स्मृति रहेगी। यदि श्री ज्ञानसागर जी को मुंह में कफ आ गया तो आचार्य श्री अपने हाथों में कफ लेते थे, पूरा उपयोग और समय गुरु की वैयावृत्ति में लगा दिया था। नसीराबाद की भीषण गर्मी में ऐसी सेवा की जो युगयुगांतर स्मृत रहेगी। आचार्य विद्यासागर जी उत्तम निर्यापकाचार्य हैं।

भगवती आराधना में कहा है आचार्यत्व गुणों को धारण करने वाले आचार्य सर्व दोषों का त्याग करते हैं इसीलिये गणों में प्रवृत्त होने वाले दोषों से रहित ऐसे आचार्य निर्यापक होने के लायक होते हैं।

निर्यापकाचार्य जो संसार भय से मुक्त हैं, जो पाप कर्म भीरू हैं और जिन्हें जिनागम का स्वरूप मालूम हैं, ऐसे आचार्य के चरण मूल में वह यति समाधि मरणोद्दयमी होकर आराधना की सिद्धि करता है।

ये सब विशेषताएं आचार्य श्री पर शत प्रतिशत खरी उतरती हैं।

वास्तव में हमारे देव तो आचार्य श्री हैं।

क्योंकि कहा है

सर्वज्ञवीतरागस्य स्ववशस्यास्य योगिनः।

न कामपि भिदां कापि तां विद्यो हा जडा वयम्॥ नि. सा. 149

सर्वज्ञ वीतराग में और स्ववश योगी में कभी कुछ भी भेद नहीं हैं, तथापि अरेरे हम जड़ हैं कि उनमें भेद मानते हैं।

धर्म, अर्थ काम, मोक्ष तथा उनकी कारण भूत प्रव्रज्या को देने वाले ऐसे आचार्य देव हैं। बोध पा. धवला में रत्नात्रय की अपेक्षा नव पना है।

आयरिय पसाय:- आचार्यों के प्रसाद से विद्या मंत्र तंत्र की सिद्धि होती है।

बड़े बड़े मंचों पर बड़े बड़े लोगों से सम्मान प्राप्त करने वाले लोग भी आचार्य श्री के यहां आकर धक्का खाकर भी प्रसन्न होते हैं। यही तो उनका आचार्यत्व है, वह भी उत्तम।

पंचाचार्यों से परिपूर्ण पंचेन्द्रिय हाथी के मद का दलन करने वाले, धीर और गुण गम्भीर ऐसे

आचार्य होते हैं। नि.सा./मू./73

जिनके निमित्त व्रतों का आचरण करते हैं वह आचार्य कहलाता है। स.सि. 9/24/442

गंभीरो दुद्धरिसो सूरौ धम्मप्पहावणासीलो।

खिदिससिसायर सरिणो कमेण तं सो दु संपत्तो॥159॥ मूलाचार

जो गंभीर हैं दुर्धर्ष हैं शूर हैं और धर्म की प्रभावना करने वाले हैं भूमि, चंद्र और समुद्र के गुणों के सदृश्य हैं। इन गुण विशिष्ट आचार्य को वह मुनि क्रम से प्राप्त है।

आचार्य श्री वास्तव में समुद्र के समान गंभीर हैं, सुनते ज्यादा है बोलते कम हैं। कभी निर्णय में शीघ्रता नहीं करते, बोलने में भी एक-एक शब्द तौल कर निकालते हैं।

जैन धर्म की जितनी प्रभावना आचार्य श्री ने की उतनी सैकड़ों वर्षों में कोई नहीं कर पाया।

बुंदेलखंड में 3 दशकों से दान, पूजा करने वालों की संख्या बड़ी है नियम, संयम, व्रतों को धारण करने क्रांति आई प्रत्येक जगह मिल जायेंगे। ग्राम नगरों में पाठशालायें संस्कार का बड़ा कार्य कर रही हैं।

आचार्य श्री किसी को त्याग नहीं करवाते, आहारादि के प्रसंग में ज्यादा जटिल नियम लेने का नहीं बोलते पर लोग ज्यादा त्याग करते हैं।

सर्व कवि:- संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़, बंगला आदि भाषाओं में काव्य रचना करके साहित्यकारों को आश्चर्य में डाल दिया है।

आचार्य समंतभद्र स्वामी जैसे संस्कृत श्लोक, मुरजबंध, चित्र काव्य, अल्पअक्षरी काव्य, की रचना की अनेक ग्रंथों का हिन्दी में पद्यानुवाद करके आगम को सहज सरल कर दिया है।

मूकमाटी जैसा महाकाव्य जिस पर 35 केलगभग शोधार्थियों पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है।

हिन्दी साहित्य में वह कार्य किया है, जो बड़े-बड़े साहित्यकार नहीं कर पाये। उस साहित्य की समीक्षा में भेद-भाव किया जा रहा। जैसे हमारे पुराने हिन्दी साहित्य के साथ भेद-भाव हुआ है, वही भेद भाव आज भी हो रहा है। यदि और कोई होता तो उसे नोबल पुरस्कार मिल जाता।

आचार्य श्री के चिंतन से प्राचीन शिल्प कला फिर जागृत हो गयी है, अभी तो जो भी नये मंदिर बन रहे हैं आगे चलकर हमारी जैन संस्कृति के दर्पण होंगे।

आचार्य श्री के द्वारा जो बीज वचन किया गया है कुछ वर्षों पश्चात् बट वृक्ष बनेगा, तब हमारा झंडा दशों दिशाओं में कीर्ति फैलायेगा।

आचार्य श्री की उत्तम चर्या को हमारा संत समुदाय पचा नहीं पा रहा, क्योंकि संयम पालन का आचार्य श्री जैसा सामर्थ्य नहीं है। हमें लगता है आचार्य श्री जैसी साधना कर पाने के लिये लोगों की एक जन्म और लेना पड़ेगा। परिग्रह धारियों को सबसे ज्यादा डर आचार्य श्री के संघ से लगता है।

कुल मिलाकर आचार्य श्री जैन गगन के चंद्र हैं, संस्कृति के सितारे हैं, गरीबों के पालन हार हैं, संयमियों की खदान हैं। आचार्य श्री की चर्या में मूलाचार झलकता है। यदि कोई मूलाचार न पढ़ पाया हो जो आचार्य श्री की चर्या को देख लेना, फिर पढ़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

इन सब बातों से हम कह सब कहते हैं, आचार्य श्री उत्तम आचार्यत्व का धारण करने वाले महान संत हैं।



भयम स्वास्थ्य योग

श्वास से रोग निदान

प्राणायाम के समान स्वर विज्ञान वायु तत्व के सूक्ष्म उपयोग का विज्ञान है। इसके उपयोग से हम अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त कर सकते हैं। स्वर साधन का आधार हमारी श्वास-प्रश्वास की गति व कौन से स्वर से चल रहा है। स्वर दायाँ है या बायाँ है। सामान्य अवस्था में हमारी श्वास-प्रश्वास सामान्य चलती है। मन की अवस्था पर श्वास की गति निर्भर करती है श्वास की मनचाही गति देकर मनोवांछित सुख पाया जा सकता है।

श्वास-प्रश्वास दोनों स्वरों से क्रमशः ढाड़ घंटे चलते हैं। दाएँ स्वर से श्वास लेते हैं तो सूर्य स्वर चलता है। बाएँ स्वर से श्वास लेते हैं तो चन्द्र स्वर चलता है। जब दोनों स्वर समान गति से चलते हैं तो उसे सुषुम्ना में चलना कहते हैं।

स्वर का परीक्षण: - श्वास भरते समय व छोड़ते समय थोड़ी गति तीव्र कर हथेली सामने रखें। जिस स्वर से तेजी से श्वास चले वही स्वर उस समय चलता है या तो बायाँ या दायाँ। सुषुम्ना सिर्फ योगियों का चलता है, किन्तु आम आदमी नाड़ी शोधन के अभ्यास से अपना सुषुम्ना चला सकते हैं।

स्वर का नियंत्रण: - स्वर परीक्षण के पश्चात इच्छानुसार स्वर चला सकते हैं। यदि बायाँ स्वर चलाना हो नासिका से स्वर चल रहा हो उस करवट लेटने से विपरीत स्वर चलने लगता है।

बायाँ स्वर: - जिस समय बायाँ स्वर चलता हो उस समय स्थिर, सौम्य एवं शांति वाला कर्म करने से वह कार्य सिद्ध होता है। ईश्वर भक्ति, मित्रता करना, चिकित्सा, विवाह, दान, यज्ञ, मकान बनाना, खरीद, बिक्री, बीज बोना व विद्या का अध्ययन इस स्वर की अवस्था में करना चाहिये।

दायाँ स्वर: - जिस समय दायाँ स्वर चल रहा हो उस समय कठिन कार्य, व्यायाम, विषय भोग, स्नान व भोजन करना चाहिये।

सुषुम्ना: - जिस समय दोनों स्वर चलते रहते हों, उस समय भगवान का ध्यान, चिन्तन, योगाभ्यास किया जाना चाहिये स्वर साधना का पंचतत्त्वों से संबंध है। इस स्वर चलते समय कोई न कोई तत्व मौजूद रहता है।

मन की शुद्धि के लिये आवश्यक कार्य

* प्राचार्य डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद *

संसार का प्रत्येक प्राणी हर समय कर्म कर रहा है। कर्म के अनुसार कर्म बंध भी कर रहा है संसार में कर्म ही सबसे बड़े बलशाली हैं। क्योंकि ये किसी भी संसारी प्राणी को नहीं छोड़ते। भगवान आदिनाथ स्वामी, पांच पांडवों सहित अनेक तपस्वियों ने भी कर्म के अनुसार फल भोगा। अतः व्यक्ति को बंधनों से मुक्त होने के लिये पुरुषार्थ करना चाहिये। धर्म हमें यह शिक्षा देता है कि हम कर्म बंधनों से मुक्त कैसे हो सकते हैं। कर्म बंधनों से मुक्त होने से पूर्व यदि यह जान लेते हैं कि कर्म बंधन रूप आश्रव को ग्रहण नहीं करना है तो उसका ज्ञान सार्थक हो जाता है।

तत्त्वार्थ सूत्र के छठे अध्याय में यह बताया है कि मन वचन और काय के द्वारा आस्रव बंध होता है। अतः सर्वप्रथम मन को संभालना जरूरी है मन दो रूपों में हमारे सामने आता है किसी का मन अच्छा होता है तो किसी का मन बुरा। दोनों स्थितियों के लिये पूर्व उपार्जित कर्मों की प्रमुख भूमिका होती है अतः यदि अशुभ कर्मों से बचना है तो सर्वप्रथम देव पूजा, भगवान की भक्ति करो और यह भावना रखो कि मेरे द्वारा किसी का बुरा (अहित) न हो। ऐसा हो भी सकता है।

श्रीमद् भागवत गीता में कहा गया है-

अशस्यं महाबाहो मनो दु रनिग्रहं चलम।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च ग्रहयते॥

हे अर्जुन ! इसमें संदेह नहीं है कि मन चंचल है और उसे वश में करना कठिन है किन्तु अभ्यास तथा वैराग्य के द्वारा मन वश में किया जाता है इसका तात्पर्य यह है कि मन को भी वश में करके परिवर्तित किया जा सकता है इसके लिये दो कार्य जरूरी हैं प्रतिदिन भगवान की भक्ति अर्थात् पूजन, भजन तथा शुद्ध सात्विक भोजन (शाकाहारी भोजन)। हम प्रतिदिन सच्चे देव की पूजा कर उनका गुणानुवाद करें। गुणों की आराधना भजन के माध्यम से भी होती है। अतः कुछ लोग भगवान की भक्ति में अभिषेक, पूजन, पाठ करते हैं तो कुछ लोग भगवान की भक्ति के लिये आध्यात्मिक एवं धार्मिक भजनों का सहारा लेते हैं दोनों से मन शुद्ध रहता है या मन की शुद्धि होती है राग, द्वेष, वैर, विरोध छल ईर्ष्या से रहित निर्मल आत्म गुणों की प्राप्ति करना मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिये। यह तभी संभव है जब मन शुद्ध होगा। अतः मन की शुद्धि के लिये सर्वप्रथम वीतराग परमात्मा की भक्ति, भजन, पूजन आवश्यक है।

मन की शुद्धि के लिये बाहरी क्रियाओं में सबसे पहले भोजन शुद्धि पर जोर दिया गया है। कहा गया है- कि जिसका भोजन शुद्ध नहीं उसका मन शुद्ध नहीं। हमारा भोजन शुद्ध सात्विक एवं शाकाहारी हो ताकि हमारा शरीर हृष्ट पुष्ट तथा निरोगी बना रहे। जो व्यक्ति अंडा, मांस, मछली

का सेवन करते हैं। उनका जीवन तामसिक होता है तामसिक व्यक्ति का मन शुद्ध नहीं होता है। हिंसा के भाव तामसिक भोजन की उपज हैं। ऐसे व्यक्ति में अहिंसा भाव यानि जीव दया नहीं रहती। अतः वह किसी से भी लड़ाई, झगड़े करता है। जीव की हत्या करने पर भी उसे पश्चाताप नहीं होता। अतः वह अशुभ कर्म बंध कर दुर्गति का पात्र बनता है अतः भोजन की शुद्धता पर भी ध्यान रखना चाहिये।

आज हमारे देश और समाज का बदलता खान-पान चिंता का विषय बनता जा रहा है। जैन समाज भी इससे अछूता नहीं है। रात्रि भोजन का फैशन बढ़ रहा है। अखाद्य और अपेय वस्तुओं में रुचि बढ़ रही है जो चिंता का विषय है। यदि रात्रि भोजन, बिना छना जल काम में लेंगे तो मन शुद्ध कैसे होगा। मन की शुद्धि नहीं होगी तो मोक्ष कैसे प्राप्त होगा। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है-

आचरण तुम्हारा शुद्ध नहीं, कल्याण तुम्हारा कैसे हो।

कर्म बंधनों से मुक्त होने के लिये भोजन और भजन दोनों जरूरी है। अतः शुद्ध भोजन रखें ताकि शरीर से तपस्या कर सकें और भजन करें ताकि मन की पवित्रता बनी रहे। दोनों में जब एक रूपता आयेगी तभी मन पवित्र रहकर मोक्ष की तरह आसान बनायेगा तथा कर्म बंधनों से भी मुक्ति मिलेगी।

कविता

हो आत्म आभास

डॉ. निर्मल शास्त्री

जिनवाणी जो करे प्रकाशित लोक आलोक स्वरूप को ।
तत्त्व, पदार्थ, द्रव्य को भासित, साधन साध्य प्रमाण रूप को ॥
सदाचरण के सत्य मार्ग को, बतलाती माँ जिनवाणी ।
अपने अपने कर्तव्य मार्ग को, जतलाती माँ जिनवाणी ॥
जिनवाणी सुख राह बताती, करती शुभ कल्याण हैं ।
जग माता का रूप मनोहर, देती शिव अविराम हैं ।
द्वादशांग वाणी विमल हो, मंगल रूप स्वरूपी माँ ।
सम्यक् श्रद्धा उपजाती हो, आतम मार्ग निरूपी माँ ॥
जिन की वाणी का हुआ, लिपि बद्ध अंकन ।
श्रुत पंचमी का दिन, वह जिसको हैं वंदन ॥
जिनवाणी समरस भरी, सरस आत्म की छाँव ।
इनका चिन्तन जो करे मोक्ष रमा को पाय ॥
जिनवाणी सम रत्न जड़ी, तत्व अनेकान्त भास ।
स्याद्वाद अरु नय प्रमाण से, हो आतम आभास ॥



जैन संस्कृत पुराणों के तत्व

* डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर *

जैन संस्कृत पुराण शास्त्रों में निहित राजनैतिक तत्वों पर प्रस्तुत किया शोधलेख भरत-बाहुबली के अहिंसक युद्ध और स्वतंत्रता की लड़ाई में लड़ा गांधी जी का अहिंसक युद्ध कहीं तो धार्मिक नैतिक मूल्यों को सहेजता ही है।

स्वच्छ राजनीति के लिये आशा की एक किरण पुराणों में नजर आती है।

पुराणों में निहित राजनैतिक तत्वों से वर्तमान राजनैतिक माहौल में आ सकता है क्रांतिकारी परिवर्तन।

ललितपुर- सुप्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र महावीर जी, राजस्थान में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परंपरा के पट्टाचार्य वात्सल्य वारिधि, राष्ट्रसंत आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज के विशाल ससंध सान्निध्य में प्रभावना जनकल्याण परिषद (रजि.) के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी, पुरस्कार अलंकरण समारोह में नगर के मनीषी डॉ. सुनील संचय ने।

जैन संस्कृत पुराण शास्त्रों में निहित राजनैतिक तत्वों पर शोधलेख प्रस्तुत किया। अध्यक्षा प्रतिष्ठाचार्य हंसमुख धरियावाद ने किया। निर्देशक ब्र. जयकुमार निशांत जी रहे। संचालन महामंत्री प्रद्युम्न शास्त्री जयपुर ने किया।

सेमिनार में डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने अपना शोध-पत्र प्रस्तुत करते हुये कहा कि किसी भी पौराणिक या ऐतिहासिक ग्रंथ में राजनैतिक संदर्भों का आना स्वाभाविक है क्योंकि राजनीति और समाज परस्पर सापेक्ष हैं। पद्मपुराण के अनुसार भोगभूमि वं कल्पवृक्षों की धीरे-धीरे समाप्ति पर कुलों की व्यवस्था की गयी। अंतिम कुलकर नाभिराज हुये। राजा नाभिराज और मरूदेवी के गर्भ से प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म हुआ। भगवान ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प और विद्या इन 6 कलाओं का उपदेश देकर कर्मरूपी युग का सूत्रपात किया। उन्होंने नगर ग्राम, खेत कर्वट आदि के साथ ही काशी, कौशल आदि जनपदों की स्थापना की और उनका एक-एक राजा नियुक्त किया यहीं से मानव जीवन में राजनैतिक व्यवस्था का सूत्रपात हुआ।

उन्होंने कहा कि पद्मपुराण में आठवें बलभद्र पद्म (राम) आठवें नारायण लक्ष्मण और प्रतिनारायण रावण आदि के परिवारों से संबंधित वंशों का चरित्र चित्रण किया गया है। राम की शासन व्यवस्था को सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था के रूप में स्मरण किया जाता है। व्यावहारिक जीवन में आज भी मर्यादा पुरुषोत्तम राम और उनके राम-राज्य को समय-समय पर याद किया जाता है। पुराण यद्यपि राजनैतिक ग्रंथ नहीं हैं फिर भी यथा स्थान राजनैतिक व्यवस्था के जो आदर्श उपस्थित हैं वे न केवल अनुकरणीय हैं वरन् वर्तमान समय में भी उनकी उपयोगिता है।

जैन पुराणों में निहित राज व्यवस्था में भी राजा ही सर्वोपरि है जनता का संपूर्ण विकास करना अच्छे राजा के राज्य में ही संभव है, यहां तक कहा गया है कि राजा के बाहुबल की छाया का आश्रय लेकर प्रजा सुख से आत्म ध्यान करती है और आश्रमवासी विद्वान निराकुल रहे हैं।

पुराणों में राजा के गुण एवं कर्तव्य, मंत्रिपरिषद, कोश और दुर्ग, न्याय, प्रजापालन, सेनापति आदि का विशद वर्णन है जो आज के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक हैं।

उन्होंने कहा कि जैनपुराण अहिंसा पर बल देते हैं, पद्मपुराण में भी हम देखते हैं कि युद्धों को रोकने की यथासंभव कोशिश की गयी। साम, दाम, दण्ड और भेद की नीति के द्वारा जब सफलता नहीं, मिली तब युद्ध शुरू होते थे। युद्ध के बाद प्रायश्चित और वैराग्य की भावना प्रबल हो जाती थी। उद्देश्य एक है कि मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे।

आज राजनीति का स्वरूप विकृत होता जा रहा है। इन सबका समाधान पुराणों में है।

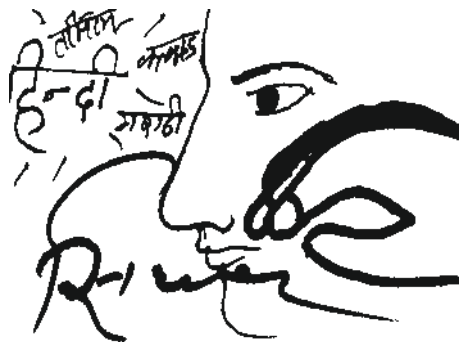
इतिहास करवटें बदलता रहता है उतार चढ़ाव आते रहते हैं फिर भी हम अपनी संस्कृति और परम्पराओं को सहेजे चलते रहे। पद्मपुराण में निहित भरत-बाहुबली के अहिंसक युद्ध और स्वतंत्रता की लड़ाई में लड़ा गांधी जी का अहिंसक युद्ध कहीं तो धार्मिक नैतिक मूल्यों को सहेजता ही है। हमने कभी भी अलगावाद या आतंकवाद का समर्थन नहीं किया है। फहियान, हेनसांग जैसी विदेशी यात्रियों ने हमारी भारतीयता को जाना पहचाना और विश्व पटल पर उसे सामने लाये। आज भी राजनैतिक, सामाजिक और नैतिकता से हम अनेक बार अडिग रहे हैं। पुराणों में निहित गौरवशाली अतीत पर हम गर्व कर सकते हैं पर आत्ममंथन और क्षमाप्रियता के इस दौर में कुछ सार्थक राजनैतिक चिंतन प्रस्तुत होगा। ऐसी आशा है।

आशायें धूमिल ही धूमिल दिखाई दे रही हैं। पुराणों के अध्ययन चिन्तन और मनन में ही हमें आशा की एक किरण दिखाई देती है।

संगोष्ठी में ब्र. जयकुमार जी निशांत भैया, प्रतिष्ठाचार्य हंसमुख धरियावद, विजय कुमार झां शोधाधिकारी, राजेन्द्र महावीर, डॉ. महेन्द्र जैन आदि ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये। आभार सुनील शास्त्री टीकमगढ़ व मनीष विद्यार्थी शाहगढ़ ने व्यक्त किया। आयोजन समिति महावीर जी प्रबंधकारिणी समिति ने सम्मानित किया।

कविता

हिन्दी दोहावली



मौलिक चिंतन शून्य है सदा विदेशी भाषा
उन्नति का आधार है जग में हिन्दी खास
भावों की भाषा सदा हिन्दी नेक महान
भारत की पहचान है इससे बढ़ती शान
संस्कृत की पुत्री बड़ी वैभव जिसका पूर्ण
हिन्दी करूणा प्रेम मय करे शाप सब चूर्ण
आर्यों की भाषा सरल मौलिक चिंतन खान
भारत की पूंजी बड़ी हिन्दी का अवदान
राष्ट्र एकता की डगर हिन्दी से निजगान
सरल सुबोध भाषा यही
आनंद मय सुखखान

चलो देखें यात्रा

जैन तीर्थ भातकुली जैन

महत्व एवं दर्शन: क्षेत्र पर 3 मंदिर है। भगान आदिनाथ की प्रतिमा मनोज्ञ एवं 300 वर्ष प्राचीन है। अनेकों प्राचीन प्रतिमायें हैं। मानस्तंभ छोटा किन्तु कलात्मक एवं आकर्षक है। क्षेत्र पर विकास कार्य जारी है। कार्तिक कृष्ण पंचमी को मेला एवं रथयात्रा आयोजित की जाती है।

क्षेत्र पर कई विकास कार्य जारी हैं। परिसर नवीनीकरण भगवान पार्श्वनाथ एवं चंद्राप्रभु मंदिर का जीर्णोद्धार 7 शिखरों का निर्माण विशाल प्रवचन हॉल, 2 सर्वसुविधा युक्त अतिथि निवास, 10 कमरों की धर्मशाला, नवीन भोजनशाला आदि का निर्माण कार्य जारी है।

समीपवर्ती स्थल: मुक्तागिरि-60, रामटेक-230, बडोरा रामनाथ-60, अकोला- 100, कांरजा-75, अमरावती-18, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ-150 किमी।

मार्गदर्शन- अमरावती से 15किमी नागपुर हाइवे पर टोल नाके के पास, आवास व भोजन सुविधा है। फोन: श्री विराज देवचंद गरीबे-09423450944, श्री हेमंत कुमार धार-08421651703

नाम एवं पता- श्री आदिनाथ स्वामी दिगंबर जैन संस्थान, भातकुली जैन, जि. अमरावती (महाराष्ट्र) 444721, फोन: 0721-2389041
प्रबंधक: श्री दिलीप जयकुमार भोगाड़े (2389385) संपर्क सूत्र : श्री सतीश संगई, अध्यक्ष अमरावती- 09823039299, श्री राजकुमार ढोणगांवकर - 09422960524, 09422855666

सुविधायें- सुविधायुक्त 13 एवं सामान्य 20 कमरे हैं। आधुनिक अतिथि निवास बन चुका है। भोजन अनुरोध पर सशुल्क।

विशेष:- नजदीक के शहर अमरावती में 14 मंदिर एवं 22 चैत्यालय है। नागपुर से अमरावती होते हुये भातकुली 178 किमी पहुंचा जा सकता है।

श्री पद्मप्रभु दिगंबर जैन मंदिर संस्थान, मु.पो. नांदगाव पेठ, तह. जिला अमरावती -444901, संपर्क: 09860201529, 095612-21386।

400 वर्ष प्राचीन पाण्डुलिपि नैनागिरि में

✽ डॉ. महेन्द्रकुमार जैन मनुज ✽

आचार्य श्री देवनन्दि दिगम्बर जैन स्वाध्याय एवं शोध संस्थान, नैनागिरि में एक लगभग चार सौ वर्ष प्राचीन पाण्डुलिपि (हस्तलिखित ग्रंथ) 'राम-हनुकथा रास' संरक्षित है। मजे बी बात यह है कि यह 1681 पद्यों में रचकर संवत् 1681 में पूर्ण हुआ। शेष 11 पद्य पुष्पिका वाक्य अर्थात् लेखक, लेखन, संवत् आदि का परिचय है। इस ग्रंथ में 107 पत्र अर्थात् 214 पृष्ठ हैं। पत्र 11.5 इंची चौड़ा और 7 इंची लंबा है। प्रत्येक पृष्ठ में 14 पंक्तियां, प्रत्येक पंक्ति में 28 से 32 अक्षर हैं। लेखन में काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

प्रारंभ में लिखा है- '॥60॥' ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ हनिमंतचरितुसमायनुलिष्यते ॥ हनुमत् चरित्र लिखने की प्रतिज्ञा की गई है। प्रारंभ में लिखे गये इस '॥60॥' शुभंकर का भी अपना इतिहास है। प्राचीन पाण्डुलिपियां ताडपत्रों पर और कन्नड़ भाषा में प्राप्त हुई। बाद में उनका देवनागरी में लिपिकरण किया गया। प्रारंभ में शुभंकर को नकलकार यथावत् रखते रहे। कन्नड़ में 'ओ' अक्षर की बनावट लगभग देवनागरी के '6' अंक जैसी होती है। कन्नड़ में अनुस्वर या बिन्दु को अक्षर के बगल में रखा जाता है, इसलिये वहां 'ओ' रखकर 'ओम' लिखा जाता है। उस कन्नड़ के ओम् को देवनागरी प्रतिलिपिकारों द्वारा शुभंकर चिह्न के रूप में प्रत्येक पाण्डुलिपि में ॥60॥ के रूप में अपना लिया और देवनागरी का ओम अलग से लिखा जाने लगा।

पाण्डुलिपि वाचक अभी तक ॥60॥ का कोई ठीक ठीक उत्तर नहीं दे पाते हैं।

इस पाण्डुलिपि में मंगलाचरण स्वरूप एक संस्कृत का श्लोक है। फिर चौपाईयों में मंगलाचरण और रचयिता का लघुता प्रकाश। उपरांत किसकी कथा लिखी जा रही है। और किस आधार पर वह निम्नांकित चौपाई से स्पष्ट होता है-

राम हनू वर सुगुननि (सारूम)॥ पंडित गुनियन करहु विचारू ॥

पदम पुराण जानहु परवान ॥ दंत कथा यह करिय सुजान ॥5॥

अर्थात् यह श्रीराम व हनुमान का कथानक है, इसे इन्होंने पद्य पुराण से दंत कथा के रूप में लिया है। कथा का प्रारंभ कैसे होता है- समवशरण रचना वर्णन, जैन धर्म संबोधन, वीरनाथ वैराग्य, वीरनाथ समोसरन, राजा श्रेणिक संबोधन, गौतम स्वामी के मुख से कथानक, नगर वर्णन, पवन कुमार जन्म, महेन्द्रपुर नगर वर्णन, अंजनिकुमरि वर वर्णन, सखी कुंवर उपहास, सीता हरण, सीता को हनुमान का संदेश, राम-रावण युद्ध, सीता की पुनः वापसी रामचंद्रराज्य आदि का इसमें वर्णन है।

आश्चर्य जनक रूप से यह रचना हिन्दी, मरु, गुर्जर और अपभ्रंस इन चार भाषाओं के मिश्रित रूप को लेकर सृजित की गई है। इसमें बीच-बीच में प्रसंग वस संबंधित संस्कृत श्लोक दिये गये हैं, किन्तु ये श्लोक कवि द्वारा रचित नहीं, बल्कि अन्य ग्रंथों से उद्धृत हैं। इस ग्रंथ में मुख्य रूप से चौपाई छंद का प्रयोग किया गया है, लेकिन प्रसंग बदलते समय अन्य अन्य छंदों का प्रयोग करके पुनः चौपाई छंद में रचना है। अन्य छंद-दोहा, सोरठा, अडिल्ल, सुंदरीबंध दोहरा, कवित्त, छप्पय, सवैया आदि हैं।

ग्रंथ के 1682 वें पद्य में कवि कहता है-

रिधि वृद्धि मंगलु करै ॥ मनवंदित फलु भोग ॥

श्री राम हनू कथा सुनै ॥ परमारथ सुभुगता भोग ॥

अर्थात् जो यह राम हनुमत् कथा पढ़े सुने, उसे रिद्धि-सिद्धि होती है, मंगलकारी है, मनोवांछित फल प्राप्त होता है और वह परमार्थ का शुभ भी प्राप्त करता है।

इस ग्रंथ के रचयिता ने अपना व अपने गुरु का नाम, लेखन का संवत् और स्थान का उल्लेख भी किया है। यथा-

संवत्तु सोलासै इक्यासी ॥ सुदि वैसाख उज्यारी पीछे ॥

गुरुवर अष्टमी दिन जानि ॥ पुखनक्षत्र कथा कथिवानि ॥1683॥

राइसैनगढ़ विसकर्मा रचेउ ॥ देउ समान नग्न बहुत विधि सुचेउ ॥

कोट अटा मंदिर चैवार ॥ मढेबुल उतंग अपार ॥1685॥

चंद्राप्रभ चैत्यालय सुभ गिनु ॥ मुनिवर धरमु करत वखानु ॥

भवियन सुनत रहसै मन सोइ ॥ जिनवर भाखित कथा मुनि होइ ॥1686 ॥

देसु मालवौ गहिर गंभीर ॥ डग डग पोरी पग पग नीर ॥

श्री ललितकीर्ति भट्टारक जानि ॥ महिमा तासु महिमंडल परवानि ॥1687॥

भए परोषि गए सुर्गवास ॥ ता सुतनें सिख कथेउ यह रास ॥

आर्यब्रह्म नाम देउदास ॥ विरचित कथा मन अधिक हुलास ॥ 1689॥

कवि ने इस कथा का प्रसंग बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के शासनकाल का बताया है। उपरोक्त पद्यों के अनुसार यह ग्रंथ संवत् 1681 में वैशाख शुक्ला अष्टमी, गुरुवर के दिन पुष्प नक्षत्र में मालवा के रायसैनगढ़ नगर के चंद्रप्रभ चैत्यालय में पूर्ण हुआ। इसके लेखक श्री ललितकीर्ति भट्टारक के शिष्य ब्रह्म देवदास हैं। कवि ने अपनी उपजाति का संकेत किया है, एक पद्य में प्रथम गोलापूर्व का उल्लेख किया है, इससे अनुमानित होता है कि वे गोलापूर्व जैन थे। इन्होंने इसमें उत्तीसौ नैत को अपना धर्मबंधु कहा है। वह पद्य इस प्रकार है-

गोलाहपूर्व गोलहकार ॥ जैनधर्म ध्यान जानिहि उपगार ॥

अवर लमैचू धर्म के कंद ॥ छत्तीसौ न्याति अपने धर्मबंध ॥1690॥

ग्रंथ के अंत में लिखा गया है- ॥ इति श्री रामहनु कथा संपूर्ण समाप्ता मिति शुभ ॥

यह राम हनुमंत कथा रास मेरी जानकारी में अप्रकाशित है। ब्रह्म देवदास की अन्य रचनाओं की जानकारी भी प्राप्त नहीं होती है। संवत् 1450-1525 के कवि ब्रह्म जिनदास द्वारा राम सीता रास लिखे जाने की जानकारी तो प्राप्त होती है, किन्तु प्रस्तुत ग्रंथ अप्रकाशित है, जिसकी पाण्डुलिपी नैनागिरि के आचार्य देवनंदि शोधसंस्थान में सुरक्षित है। इस संस्थान का स्थापन आचार्य देवनंदि मुनिराज के आशीर्वाद से मान्य सुरेश जैन (आईएस) भोपाल के सदप्रयासों से किया गया था। इस पाण्डुलिपि का अवलोकन आलेख लेखक ने 12 मार्च 2022 को करके उसमें से पूर्ण जानकारी एकत्रित की है।

कविता

मुनीद्रों के स्वामी मुनिसुव्रत

मुनिसुव्रतनाथ स्तवन (शिखरणी छन्द)

रचयिता- निर्यापक श्रमण
मुनि श्री योगसागर जी महाराज

अहो मैं क्या गावूं अमृतमय गाथा दमकता ।
 उषा की आभा ज्यों सकल जगती को सुखदता ॥
 सुगंधी पुष्पों की महक सम कीर्ति बहती ।
 अनेकों जीवों में सहज उर में ज्योति जलती ॥
 मुनीद्रों के स्वामी मुनिसुव्रत तीर्थकर प्रभो ।
 फंसे हैं कर्मों के दलदल महा दुर्दर विभो ॥
 कृपा के धारी हैं अखिल जग ही नाम जपता ।
 सभी बेचारों के तव शरण में हो सफलता ॥
 धने काले-काले अद्यतम घटायें उठ रहे ।
 निवारू कैसे मैं बहुत भयकारी लग रहे ॥
 विशुद्धी भावों की तब स्मरण से जागृत हुई ।
 स्तुति के द्वारा तो झर झर झरे कर्म सब ही ॥
 बहे सर्वांगों से मधुरमयी वाणी अमृत-सी ।
 असंख्यातों प्राणी श्रवण कर के शीतल हुये ॥
 भ्रमितों को सच्चा प्रशस्त पथ का दर्शन हुआ ।
 पुरुषार्थी जीवों को अनुपम सुपन्थ लगता ॥
 महाअज्ञानी में विविध गति का भाजन हुआ ।
 सुमिथ्यात्वी होके अपरमिह पापास्रप किया ॥
 करूं सम्यक् आस्था अनुपम विशुद्धी प्रगट हो ।
 यह मेरी इच्छा सकल अघ ही पुण्यमय हो ॥

अपभ्रंश भाषा का ग्रंथ
परमात्म प्रकाश

जो इंद्र अध्यात्मवादी है, कवि नहीं। अपभ्रंश में शुद्ध अध्यात्म विचारों की ऐसी सशक्त अभिव्यक्ति अन्यत्र नहीं मिल सकती है। इनके “परमात्मप्रकाश” में दो अधिकार हैं। प्रथम अधिकार में 126 दोहे और द्वितीय में 219 हैं। इन दोहों में क्षेपक और स्थलसंख्या बाह्य प्रक्षेपक भी सम्मिलित हैं। ब्रह्मदेव के मतानुसार परमात्मप्रकाश में समस्त 345 पद्य हैं इनमें पांच गाथाएँ, एक स्रग्धरा और एक मालिनी है। किन्तु इन पद्यों की भाषा अपभ्रंश नहीं है। एक चतुष्पादिका भी है और शेष 377 दोहे हैं। जो अपभ्रंश में निबद्ध हैं।

विषय वर्णन की दृष्टि से प्रारंभ के सात पद्यों में पंचपरमेष्ठि को नमस्कार किया गया है। आठवें, नवें और दसवें दोहे में भट्टप्रभाकर जोइंदु से निवेदन करता है-

हे स्वामिन् ! इस संसार में रहते हुये अनंतकाल बीत गया, परंतु मैंने कुछ भी सुख प्राप्त नहीं किया। प्रत्युत महान् दुख ही पाता रहा। अतः चारों गतियों के दुखों से सन्तप्त प्राणियों के चारों गति सम्बंधी दुखों का विनाश करने वाले परमात्मा का स्वरूप बतलाईये। उत्तम में जोइंदु ने आत्मा के तीन भेदों का कथन किया है। 1 - मूढ़, 2. विचक्षण, 3. ब्रह्मा।

जो शरीर को ही आत्मा मानता है, वह मन है। जो शरीर से भिन्न ज्ञानमय परमात्मा को जानता है। वह विचक्षण या पण्डित है। जिसने कर्मों का नाश कर शरीर आदि पर द्रव्यों को छोड़ ज्ञानमय आत्मा को प्राप्त कर लिया है वह परमात्म है।

द्वितीय अधिकार में मोक्ष, मोक्ष का फल एवं मोक्ष के कारण का कथन किया है। जो इन्दु ने पुण्य और पाप की समता बतलाते हुये लिखा है कि जो जीव पुण्य और पाप को समान नहीं मानता, वह मोह के वशीभूत होकर चिरकाल तक भ्रमण करता है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जून २०२३

ਗਗਨ ਤੜਾਨ

प्रथम-

हर प्रयास का मूल्य कभी
बेकार नहीं होता
हिम्मत रखने वाला व्यक्ति
लाचार नहीं होता
आसमान में दृष्टि रखकर
गति होती अविराम
पंखों को दे गति सदा ही
भरती गगन उड़ान

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

मन में जब हम ठान ले मेंटें अज्ञान
हो निशंक विद्या गहें भर लें गगन उड़ान
राजकुमार जैन, इंदौर

तृतीय-

मौत का न डर जिसे
श्वांस श्वास मग बढ़े
हौंसले बुलंद हो डर से न संबंध हो
उच्च हो अरमान सदा गमन उड़ान

शशांक जैन, गढ़ाकोटा

वर्ग पहेली क्र. 283

मई 2023 के विजेता

प्रथम : श्रीमती रश्मि जैन, इंदौर

द्वितीय : कु. आसमा जैन, भोपाल

तृतीय : अनिल जैन, अहमदाबाद

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

माथा पच्ची

1. आदअदअदण् आ अल् अर्षद्
2. ईओ अस् आक् अर् अर्प् वन् त् त्रस्
3. क्ङओत्ङआय्ग्त्ङआङ्न्दएद्शप्र
4. स्अर्अआदआस्अव्ङर्अर्प्अव्दय्गवि
5. अस्क् आर् अआस्ग् अर्स्

परिणाम :

अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश
(3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श



पुराण प्रेरणा

त्याग भोगों का हो धर्म का नहीं

सद्भावना से पास में आये हुये मनुष्यों को ठगने में क्या चतुराई है ?
गोद आकर सोये हुये को मारने वाले का पुरुषार्थ क्या पुरुषार्थ है ? हे श्रीभूति !

एवं नित्यं निशाप्रान्ते रोरोत्यारूह्य भूरूहम् ।

कृत्ये कृच्छ्रेऽपि सत्त्वाढया न व्यजन्ति समुद्यमम् ॥

इस प्रकार वह भद्रमित्र प्रतिदिन प्रातः काल के समय किसी वृक्ष पर चढ़कर बार-बार रोता था सो ठीक ही हैं क्योंकि धीर वीर मनुष्य कठिन कार्य में भी उद्यम नहीं छोड़ते ॥

अन्यायेनान्यवित्तस्य स्वीकारश्चौर्यमुच्यते ।

नैसर्गिकं निमित्तोत्थं तदेवं द्विविधं स्मृतम् ॥

अन्याय से दूसरे का धन ले लेना चोरी कहलाती है वह दो प्रकार की मानी गई है एक जो स्वभाव से ही होती और दूसरी किसी निमित्त से ॥

यहच्छया वनं यातमवलोक्य दुराशया ।

साऽखादत्स्वसुतं कोपाच्चित्रं किं नाशयमङ्गिःनाम् ॥

एक दिन भद्रमित्र अपनी इच्छा से असना वन में गये थे। उसे देखकर दुष्ट अभिप्राय वाली व्याघ्री ने उस अपने ही पुत्र को खा लिया सो ठीक ही है क्योंकि क्रोध से जीवों का क्या भक्ष्य नहीं हो जाता ॥

अधिरत्नायुधं राज्यं कृत्वा चक्रायुधान्तिके ।

वज्रायुधौऽण्यगाद्दीक्षां किं न कुर्वन्ति सात्विकाः ॥

अब ब्रजायुध ने भी राज्य का भार रत्नायुध को लिये सौंपकर चक्रायुधके समीप दीक्षा ले ली सो ठीक ही है क्योंकि सत्वगुण के धारक क्या नहीं करते ?

त्यागोभोगाय धर्मस्य काचायैव महामणेः ।

जनन्या इव दास्यर्थं तस्मान्तादृक् व्यजेद् बुधः ॥

भोग के लिये धर्म का त्याग करना ऐसा है जैसा कि कांच के लिये महामणिका और दासी के लिये माता का त्याग करना है। इसलिये विद्वानों को चाहिये कि वे भोगों का सदा त्याग करें।

बाबा की सीख

अब तो पहनी लाल घघरिया

* अशोक पाटनी, आर.के.मार्बल्स *

प्रायः हम लोग बाबा के चरण स्पर्श करने रोज जाया करते थे। एक दिन हम तीनों भाई एक साथ होकर चरण स्पर्श करने पहुंच गये। बाबा ने तीनों के सिर पर हाथ रखते हुये कहा मेरे बेटो बैठो। तुम लोगों से थोड़ी मुझे बात करना है। हम तीनों भाई उनके पास बैठ गये। बाबा के पास बैठने से हम लोगों को ऐसा नहीं लगता था कि हम लोगों की शादी हो गई है। और हम बड़े हो गये हैं। अपितु बालसुलभ ही स्थिति बन जाती थी।

बाबा ने बड़ी गंभीरता से कहा कल इस घर में किसी के ऊपर बहुत डांट-फटकार चल रही थी। क्या बात है मेरी एक बात सुनो तुम लोग जब कोई घड़ा पककर लाल हो जाता है। तब उस पर दो काम नहीं हो सकते। एक तो उस पर कोई मिट्टी चढ़ाकर कोई बदलाव नहीं लाया जा सकता। और दूसरा लाल घड़े पर कोई चोट नहीं की जा सकती है। हाँ यह अवश्य है कि जब तक वह कच्चा रहता है। तब तक उस पर मिट्टी चढ़ाकर कोई भी सुधार किया जा सकता है। अथवा उस पर की जाने वाली मार से वह परिवर्तित हो जाता है। क्योंकि जब वह घड़ा लाल घघरिया पहन लेता है। तब वह कोई भी मार सहन नहीं सकता है। फूट सकता है पर बदल नहीं सकता है।

मैंने धीरे से कहा बाबा कौन किसको डांट रहा था। बाबा ने कहा देखो बेटा मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहता हूँ। जो डांट रहा होगा वह खुद समझ जायेगा। मैं प्रत्यक्ष रूप से किसी को सीख नहीं देता हूँ। मैं तो परीक्षा ही सीख देता हूँ। सोलह वर्ष के बाद अपने बच्चे के साथ मित्रवत व्यवहार करना चाहिये। तुम लोग समझदार बच्चे हो मेरी बात ठीक-ठीक समझ गये होगे। अब इस बात को कभी नहीं दोहराना।

कविता

गरीबों के आंसू

धनिकों के, अमीरों के, पूंजी पतियों के
विलासियों के, व्यसनधरी के, ऐशो आराम
आमोद प्रमो के साधन खरीदे जाते
गरीबों के आसूँ से विलासता वे भोगते हैं
निर्धन गुलाम अपने आँसु से उनके मौज की
कीमत चुकाते हैं, निर्धन के बच्चे शिशकियाँ भरकर
दिन लम्बा रात लम्बी गुजारते हैं।



श्री नीरज जी जैन-एक अलौकिक व्यक्तित्व

* लेखक- सुषमा जैन, भिलाई *

आदि अनादि कालीन प्रकृति प्रदत्त देश के हृदयस्थली प्रांत मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड की रत्नगर्भा धरती से समय-समय पर ऐसे रत्न मिले जिसके प्रकाश से चहूँ-ओर उजियारा हुआ। ऐसी ही अलौकिक प्रतिभा के धनी श्री नीरज जैन जिन्होंने अपने बहु आयामी व्यक्तित्व से अत्यंत सरल, मर्मस्पर्शी, काव्यात्मक एवं आत्मकथ्य शैली में ज्ञान का आलोक बिखेरा। इनका जीवन संघर्षों से भरा हुआ होते हुये भी सदैव उन्होंने अदम्य साहस का परिचय दिया। हिन्दी, उर्दु तथा लोकभाषा के कवि, शेरशायरी के शौकीन पत्रकारिता और धार्मिक अध्ययन इनकी रुचियाँ रही। प्राचीन इतिहास और मूर्ति कला शोध के लिये समर्पित, फोटोग्राफर और चित्र संकलन का शौक इन्हें सदैव प्रेरित करता रहा। श्री नीरज जैन प्रतिमा विज्ञान के जानकार, ओजस्वी वक्ता एवं बोलचाल की सीधी-सरल भाषा के धनी प्रभावक प्रवचनकार एवं अनेक समाज सेवी एवं साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े रहे।

31 अक्टूबर 1926 को छोटे से गांव रीठी में सिंघई श्री लक्ष्मण लाल एवं मथुरा बाई के घर इनका जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा से ही संघर्षमय जीवन का शुभारंभ हुआ। जुझारू, स्वभाव, कर्म में विश्वास रखने की मनोवृत्ति एवं सहनशील व पुरुषार्थी व्यक्तित्व के धनी श्री नीरज जी (दादा) को समाज में गरिमामय व स्तुत्य स्थान प्राप्त है। आज वे जब हमारे बीच नहीं हैं तब उनकी स्मृतियाँ एक चलचित्र की भांति मेरे मानस पटल पर उतरती चली आ रही हैं उनके विराट व्यक्तित्व के कुछ बिन्दुओं पर मैं लिखने का साहस कर रही हूँ। बहुत कुछ उनके ही शब्दों की संयोजना है। मैं तो बस उस सूत्र (धागा) का काम कर रही हूँ जो पुष्प समूह से कुछ पुष्प चुनकर के माला बना देता है मैंने भी ऐसा प्रयास किया।

श्री नीरज जैन को जन्म से ही इस शताब्दी के महान मानवतावादी संत श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी का आशीर्वाद एवं उनके चरणों का संपर्क मिला। वर्णी जी द्वारा ही चार वर्ष की आयु में ही उनका अक्षर अभ्यास शुरू हुआ। घर में ही पढ़ाई प्रारंभ हो गई थी जब स्कूल में दूसरी कक्षा में इनका नाम लिखाया गया उसके पूर्व ही ये मंदिर में पुराण पढ़कर सुनाने लगे थे। रीठी ग्राम में प्राइमरी चौथी कक्षा के आगे पढ़ने की सुविधा उपलब्ध नहीं थी अतः पढ़ाई के लिये कटनी गये तथा एक वर्ष में कुछ थोड़ा सा धार्मिक अध्ययन करा परन्तु इसी बीच अचानक इनके पिता का स्वर्गवास हो गया और पढ़ाई अधूरी रही गई। पन्द्रह वर्ष की आयु में ही परिस्थितियों ने इन्हें परिवार प्रमुख बना दिया। अपनी चौथी कक्षा की अल्पपुंजी लेकर गरीबी के भारत तले जीवन संग्राम में जूझने के लिये विवश होना पड़ा। इन्होंने अपने अदम्य साहस के सहारे वह दुर्गम यात्रा प्रारंभ कर दी।

अठारह वर्ष की आयु में ही शांति देवी के साथ विवाह संपन्न हुआ और उसके एक महीने बाद ही माता का वियोग झेलना पड़ा। पत्नी ने यथानाम तथा गुण की कहावत को चरितार्थ करते हुये इस परिवार के सुख-दुख अपने बना लिये और सहज मातृत्व भाव से निष्ठा पूर्वक अपने कर्तव्य का पालन आज भी कर रही हैं। कुछ दिन पश्चात् अपना जन्म स्थान छोड़कर सागर पहुंच

गये। आजीविका के लिये बार-बार स्थानांतरित होना पड़ा। 1945-1949 तक सागर फिर जबलपुर और वहाँ से 1951 में सतना जाकर नौकरी करी। कुछ वर्षों तक सेलटेक्स की वकालत करी इसी बीच 8 दिसंबर 1954 को सतना में कुछ मित्रों के सहयोग से 'सुषमा प्रेस' की स्थापना कर ली। इस प्रतिष्ठापन ने आर्थिक सहारा तो दिया ही प्रतिष्ठा भी दिलाई।

कॉलेज की शिक्षा पिता-पुत्र की साथ-साथ हुई। पढ़ना और अनवरत पढ़ते रहना इनके जीवन का शौक रहा है। इन्हें कॉलेज की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर छोटे पुत्र के साथ मिला। इससे पहले शायरी का शौक पूरा करने के लिये उर्दू के कुछ इम्तिहान जामिया मिल्लिया-अलीगढ़ से दिये थे। स्वाध्याय से संस्कृत का ज्ञान भी अर्जित किया पर प्राचीन इतिहास और कॉलेज की पढ़ाई की ललक मन में थी। "प्राचीन भारतीय इतिहास और कला" विषय में एम.ए. किया। इतिहास और पुरातत्व के साथ प्राचीन धरोहर के प्रति जागरूकता का शौक नशों की तरह इनके जीवन में समाया हुआ था। इस शौक से मिलने वाला आंतरिक आनंद इन्हें इतना लुभाता था कि कोई भी विपत्ति कोई भी धमकी इन्हें इस मार्ग से विमुख नहीं कर पाती थी।

विदेश प्रवास-सतना जिला सहकारी भूमि विकास बैंक के संस्थापक सचिव पद से लेकर मध्यप्रदेश राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक भोपाल से उपाध्यक्ष के गौरवशाली पद तक सन् 1962 से 1978 तक इससे जुड़े रहे। इसी संदर्भ में जेकोस्लोवाकिया में आयोजित 20वीं अंतराष्ट्रीय सहकारी कांग्रेस से भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के नेता के नाते श्री नीरज जैन ने 1975 में दो मास तक सेंट्रल यूरोप का अध्ययन दौरा किया। सन् 2000 में दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन नगर में आयोजित 'विश्व धर्म संसद' में भारतीय संस्कृति और अहिंसा विषय पर इन्होंने अपना भाषण दिया। प्रबुद्ध विचारक और सिद्धहस्त लेखक श्री नीरज जैन का वीरवाणी के प्रवक्ता के रूप में सम्मान पूर्ण स्थान है। वे लगातार चार वर्षों तक करीब एक माह के प्रवास पर धार्मिक प्रवचनों के लिये अमेरिका में रहे। सन् 2001 में उन्होंने डल्लास सेन जोश, ओरलेण्डो, मोण्ट गोमरी और न्यूयार्क में अपनी सरल भाषा में भगवान महावीर के अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धांतों पर धार्मिक प्रवचन दिये। इसके अलावा शिकागो में 2003 (5-8 जुलाई) तक आयोजित ग्यारह जैन कन्वेंशन में अतिथि वक्ता के रूप में सम्मिलित हुये। अमेरिका में ही गीता में देवी संपदाओं का स्वरूप विषय पर भी इनका प्रवचन हुआ।

श्री नीरज जैन को संतों के चरणों में बैठने और उनकी वाणी को हृदयंगम करने की सदैव रुचि रही। जब 19 वर्ष के थे और 80 रुपये माह के वेतन पर सागर के एक प्रेस में नौकरी करते थे तब उनके गुरु ने उन्हें "परिग्रह-परिमाण व्रत" की सीमाओं में जीवन भर के लिये बांध दिया था। इस नियम ने इनके जीवन को भौतिक आपाधापी से बचाया एवं देव शास्त्र गुरु के चरणों के शरण की ललक पूरी की 'परिग्रह-परिमाण व्रत' का ही सुफल है कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में 'मर्यादा-हीनता' का प्रवेश नहीं हुआ। अपने गुरु वर्णी जी के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा थी। प्रस्तुत चार पंक्तियाँ उन्होंने गुरु को समर्पित करी।

**“समता ममता क्षमता की शुचि धाराओं के संगम,
तुम्ही कर सके महावीर की वाणी को हृदयंगम।**

**मानवता की थाती केओ सबल, सचेतन प्रहरी,
तुम्हें हुई अनुभूति विश्वबंधुत्व, तत्व ही गहरी।”**

श्री नीरज जैन ने फरवरी 1944 से लिखना प्रारंभ किया। प्रकाश (जबलपुर), जैन संदेश (आगरा), विन्ध्य केशरी तथा दोहाती-दुनिया (सागर) में कई वर्षों तक निरंतर लिखा। हिन्दी उर्दु तथा लोकसभा में कवि सतना की साहित्यिक जागृति के अग्रदूत तथा 'अभिनव' साहित्य गोष्ठि के स्तंभ रहे। इनका कविता संकलन तुलादान जो अप्रैल 1960 में प्रकाशित हुआ उसके कुछ अंश कवि की देशभक्ति एवं कल्पना की उड़ान को दर्शाते हैं।

जगती को सांत्वना प्रदान करने के हेतु, प्राची ने दूत एक भेज दिया- प्लावित हो,
स्वर्ग-पथ गामी अरूणा रथ पर दिखाई दिया, आसमान भासमान करता रवि एक ओर।

'असहयोग तथा अवज्ञा आंदोलन' के दिन थे। एक दिन कुछ विद्यार्थियों के साथ सरकार के खिलाफ परचे चिपकाते पकड़ लिये गये उनकी उम्र तब मात्र 15 साल की थी। तहसीलदार महोदय ने दया करके इन बालकों को अपने घर ही रखा। अकस्मात् एक दिन इनके पिता की बीमारी की खबर मिलने पर सीधे घर जाने की तागीद देकर इन्हें छोड़ दिया गया। देशभक्ति का वह अंकुर उनकी इस 'तुलादान' रचना में पुष्पित व पल्लवित हुआ। आजाद हिन्द फौज के प्रमुख वीर सेनानी सुभाष चंद्र बोस (नेताजी) को स्वर्ण से तोला जा रहा था तब सहसा एक जापानी महिला ने प्रश्न किया और उसके उत्तर में श्री जैन की ये पंक्तियाँ उनके देश प्रेम को व्यक्त करती हैं -

सहसा एक जापानी महिला ने प्रश्न किया- “इस अपार धन का क्या होगा” एक सैनिक से।
“स्वतंत्रता मंदिर की एक सीढ़ी पर, यह संपत्ति न्यूछावर की जावेगी।

भारत जननी के परम पावन चरणों में, इसका हर कण-कण समर्पित हो जावेगा”

सैनिक प्रदत्त यह छोटा सा उत्तर सुन बोली वह रमणी चकित सी, सांस भरके

“तुलादान होता है हमारे सम्राट का, पर सारी संपदा से राजकोष भरे जाते हैं

किन्तु यह अतुल राशि सेवा में लगेगी तो भारत अवश्य बड़े विस्मय का देश है।”

देशभक्ति और साधर्मी वात्सल्य की प्रेरणा श्री नीरज जैन को अपने पिता से मिली थी। सतना में कांग्रेस के संगठन में भी इन्होंने स्थान प्राप्त किया और नगर पालिका की सदस्यता से प्रारंभ करके नगर पालिका के अध्यक्ष का पद प्राप्त किया।

सरस्वती पुत्र जी नीरज जैन ने रक्षाबंधन की पौरणिक कथा का लेखन करके प्रतिकार्थ को व्यक्ति के जीवन से जोड़ा है। लेखक के ही शब्दों में रक्षाबंधन का प्रतीकार्थ- “विराट पुरुष विष्णुकुमार के तीन पग रत्नत्रय के प्रतीक कहे जा सकते हैं। मनुष्य लोक को नापते-दोनों पग सम्यक-दर्शन और सम्यकज्ञान हैं। दोनों एक साथ समानंतर स्थित हो जाते हैं, और एक ही स्तर पर अपनी सार्थकता देते हैं। भले ही पूरा लोक इन दोनों पगों से नप जाए पर कषायों का मेरूदंड उनसे टूटता नहीं है। उसे पाने के लिये सम्यक चारित्र का तीसरा पग उठाना साधक के लिये अनिवार्य हो जाता है। उसी पदाघात से आश्रव का यज्ञ-ध्वंस होता है। रत्नत्रय के तीन डग भरकर नाप लेने पर ही उस मंगल भूमि का स्वामित्व प्राप्त होता है। जिस पर अनंत-चतुष्टय का निष्कटंक साम्राज्य स्थापित हो सके।”

“मानवता की धुरी” - लेखक की यह दस्तक सदाचार सहिष्णुता, संतोष, समानता और सह-अस्तित्व के आधार पर मानवीय गुणों के विकास में सहायक है। श्री जैन का यह चिन्तन सर्वधर्म मान्य चिन्तन परक जीवन पद्धति की प्रेरणा देने वाला। क्योंकि व्यक्ति की सारी दौड़ भौतिकता के लिये समर्पित होकर रह गई है। यदि एक बार संसार की दशा को समझ लिया जावे तो मानव मन के बहुत से विकार, तनाव स्वतः ही विसर्जित हो जावेंगे। उनका मानना है कि मानव जीवन सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट अवदान है। “स्व-हित और” “पर-हित” के लिये उद्देश्य बनाकर अपना जीवन सार्थक करना चाहिये। उनके ही शब्दों में जीवन एक महाभारत की तरह है।

गोमटेश गाथा- विश्व प्रसिद्ध जैन तीर्थ श्रवणबेलगोल पर श्री नीरज जैन ने विशेष शोध कार्य किया और उनकी तीन विख्यात कृतियाँ हैं- गोमटेश्वर महोत्सवदर्शन, गोमटेश गाथा, परम दिगम्बर गोमटेश्वर

गोमटेश गाथा को श्री नीरज जैन इतनी रोचक शैली में लिखा है कि वह तथ्यों की अभिव्यक्ति करते हुये एक सहज लोक कथा बनी रहती है। और एक समान्य पाठक भी उसे अंत तक बड़ी ही रुचि से पढ़ता चला जाता है। भगवान बाहुबली की सहस्र शताब्दी महामस्तकाभिषेक सन् 1981 के अवसर पर लिखे गये साहित्य में इस कृति का शीर्षस्थ स्थान है। गोमटेश गाथा में श्रवणबेलगोल से संबंधित सारी परिचयात्मक सामग्री बड़ी कुशलता से प्रस्तुत की गई है। विशेषकर इतिहास और संस्कृति का विपुल सामग्री को भी सहज रूप से प्रस्तुत किया गया। सम्राट चंद्रगुप्त के ऐतिहासिक तथ्यों से लेकर भगवान बाहुबली की मूर्ति के प्रतिष्ठापक प्रतापी चामुंडराय तक सब कुछ सार रूप में इस पुस्तक में आ गया है। लेखक की कल्पना दृष्टि ने रूपकार (शिल्पी) के अंतस के मनोभावों को अत्यंत सहजता से चित्रित किया है।

चन्दना- इस उपन्यास में जैन पुराण कथाओं में महासती चन्दना के मानसिक अंतरद्वंदों का अंकलन बहुत ही सशक्त एवं प्रभावशाली ढंग से लेखन ने किया है। मानों श्री जैन की कलम का स्पर्श पाकर यह पौरणिक कथा जो कि आत्मकथ्य शैली में लिखी गई जीवंत ही हो उठी है।

कर्मन की गति न्यारी- श्री लेखक ने बहुत ही सरल शब्दों में जैन दर्शन की ‘कर्मबंध और उसके उदय के विज्ञान’ की चर्चा की है। कैसे जीवन में हमारी ही करनी से कर्म बनते हैं और हमारी ही करनी से उनमें घट-बढ़ या बदलाव की संभावना होती है। अपना संसार चलाने के लिये हमारे पास तीन साधन हैं मन, वाणी एवं शरीर। पिछले बांधे हुये कर्मों को भोगते समय इन्हीं तीनों शक्तियों द्वारा कभी आनंद मनाकर कभी दुखी और संकलेषित होकर हम अपने ही पुरुषार्थ से नये कर्मों का बंध कर लेते हैं। और चारों गतियों की चौरासी लाख योनियों में हमारा भटकाव होता रहता है। लेकिन यदि हम प्रयास करें तो इन्हीं तीनों शक्तियों को नियोजित करके अनासक्त भाव से कर्म भोगकर कर्मभार हल्का भी कर सकते हैं। इसी प्रक्रिया को दादा ने अपनी पुस्तक में बहुत ही सूक्ष्म और वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

बारह भावना- सृष्टि का रहस्य जानने की उत्कण्ठा मनुष्य के स्वभाव में निहित है। कल्याण की दिशा में मानवता का मार्गदर्शन करने वाले सभी महापुरुषों और विचारकों ने इस रहस्य को समझने के प्रयत्न किये हैं। श्री नीरज जैन ने संसार की निःसारता का वर्णन भूधरदास की ‘बारह

भावना’ का आधार लेकर जीवन के सारे रिश्ते नाते, धन सम्पदा और उसकी अनित्यता का विचार करते हुये प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में प्रसिद्ध संत गोस्वामी तुलसीदास, संत कबीर और रहीम के जीवन परक चिन्तन को भी अत्यंत सहज रूप में प्रस्तुत किया है।

विशिष्ट सम्मान- गोमटेश्वर बाहुबली को व्याख्यायित करने वाली सरस एवं कालजयी कृति गोमटेश गाथा के रचनाकर श्री नीरज जैन को इस ऐतिहासिक उपन्यास के लिये ‘अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्युत परिषद’ द्वारा- “गोपालदास बैरैया पुरस्कार” से सम्मानित किया गया।

दिगम्बर जैन समाज दक्षिण भारत (चैन्नई) द्वारा सन् 200 में ओजस्वी वक्ता और जैन आगम के प्रभावक प्रवचनकारी श्री नीरज को ‘व्याख्यान वाचस्पति’ की उपाधि से विभूषित किया। सन् 2002 में दिगम्बर जैन समाज मध्य भारत (ग्वालियर) प्रबुद्ध विचारक श्री नीरज जैन को “वाणी भूषण” की उपाधि से सम्मानित किया।

विलक्षण साहित्य अभिरूचि- हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, उर्दू-गुजराती, कन्नड़ भाषाओं का अच्छा ज्ञानशायरी में विशेष रुचि होने से उर्दू की तालीम ली।

अनेक कवि सम्मेलनों एवं मुशायरों का संचालन तथा रचना पाठ तथा जैनदर्शन, इतिहास, राजनीतिक, पुरातत्व, हिन्दी व उर्दू साहित्य तथा सामायिक संदर्भों पर देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचयें प्रकाशित, रेडियो एवं दूरदर्शन पर प्रसारण।

अनेक पत्र-पत्रिकाओं, शोधग्रंथों, अभिनंदन ग्रंथों स्मारिकाओं का सम्पादन दो दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कुछ उल्लेखनीय पुस्तकें हैं-

गोमटेश गाथा, मानवता की धुरी, अहिंसा और अपरिग्रह, चंदना, आत्म निवेदन, गणेश वर्णी, बारह भावना, कुण्डलपुर, भट्टारक परम्परा, जैन नगर के बाहुबली, कराहता कुण्डलपुर, करमन की गति न्यारी, कौन्देय कौमुदी, महोत्सव दर्शन, खजुराहो के जैन मंदिर, रक्षाबंधन, सोनगढ़ समीक्षा, रत्नगिरि के बाहुबली, संत सौरभ, शांतिधारा आदि, गोमटेश गाथा मराठी एवं कन्नड़ में अनूदित, खजुराहो के जैन मंदिर अंग्रेजी में अनूदित, रत्नागिरि के बाहुबली कन्नड़ में अनूदित।

मुझे सदैव ऐसा लगता था कि दादा का प्यार दुलार सबसे ज्यादा मुझे ही मिल रहा है। हर पिता अपनी संतान को संस्कारों की विरासत सौंपते हैं लेकिन मेरे पिता ने मुझे संस्कारों की अनमोल विरासत जो बिरलों को ही मिलती है। इसका मुझे सदैव गौरव रहेगा। ऊपर से सख्त अनुशासन की चादर ताने हुये भी उनका कोमल कवि हृदय मानवीय संवेदनायें संजोए रहता था। जब भी किसी को आवश्यकता पड़ी तो बड़ी उदारता से सहयोग करने सदैव तत्पर रहते। उनका सम्बोधन जिसे मिल जाता है उसे वह प्रतिकूलता में बड़ा सम्बल देता था। उनकी अंतिम विदाई के चार दिन पूर्व से मुझे उनका चरण सान्निध्य मिला 22.03.2013 से 25.03.2013 तक। 25 की शाम प्रसंग आने पर उन्होंने बड़े आदर से अपने गुरु पूज्य श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी जी को याद करते हुये कहा “कि बाबा जी के परिग्रह परिमाण व्रत” ने उनके जीवन को भौतिक आपाधापी से बचाया एवं देव शास्त्र गुरु के चरणों में मेरा समय बीत रहा है। वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि मुक्ति मिलने तक भवों भवों में उन्हें देव शास्त्र गुरु की त्रिवेणी मिलती रहे इसी भावना के साथ उन्हें मेरा शत शत नमन।

करियर



व्यापार प्रबंधन में अवसर

किसी भी व्यवसाय अथवा उद्योग को सफलता उसके प्रबंधन पर निर्भर करती है। इसी कारण आज व्यापार प्रबंधन युवा पीढ़ी का क्रेज बन गया है। एम.बी.ए. कराने के लिये नये-नये निजी संस्थान खुल रहे हैं।

कार्य के क्षेत्र- किसी भी क्षेत्र में प्रबंधक का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण होता है और उसकी योग्यता व कुशलता के आधार पर ही उसे कार्य दिया जाता है। मुख्य रूप से प्रबंधक के कार्य के क्षेत्र निम्न हैं जो अलग-अलग कम्पनी में थोड़ा भिन्न भी हो सकते हैं। जैसे-वित्त, उत्पादन, मार्केटिंग प्रवेश हेतु योग्यता।

किसी विषय में स्नातक होने के पश्चात प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ही एम.बी.ए. में प्रवेश पाया जा सकता है। स्नातक स्तर बी.ए., बी.एस., बी.कॉम, बी.बी.ए. अथवा बी.टेक किया जा सकता है। स्नातक स्तर पर उत्तीर्ण अंकों का प्रतिशत हर संस्थान में प्रायः अलग-अलग है, फिर भी स्नातक स्तर पर 50 प्रतिशत से कम अंक नहीं होने चाहिये।

संस्थान का चुनाव- छात्र को किसी संस्थान में प्रवेश लेने के पहले यह पता लगा लेना चाहिये कि यह संस्थान ए.आई.टी.सी से मान्यता प्राप्त है अथवा नहीं।

अच्छे संस्थानों में एम.बी.ए. के पश्चात् समुचित नौकरी दिलाने को भी व्यवस्था होती है। उनके अच्छी कंपनियों व उद्योगों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सम्पर्क होते हैं। और अच्छे छात्रों को वहां नौकरी दिलाई जाती है। इन संस्थानों में शिक्षण स्तर बहुत अच्छा रहता है। छोटे संस्थानों से केवल एम.बी.ए की डिग्री मिल जाती है। फिर नौकरी की तलाश में भटकना पड़ता है।



■ 1 मई

- उत्तराखंड में जोरदार बर्फबारी होने से चार धामयात्रा रूकी।

- गलगौटीया यूनिवर्सिटी में आग लगी।

- बिहार के सांसद चंदन सिंह की गाड़ी के बोनट पर एक शख्स चिपका रहा गाड़ी तीन किमी. तक दौड़ी।

■ 2 मई

- शरद पंवार ने राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दिया।

- चीन के 232 एप पर भारत सरकार ने बैन लगाया परन्तु 300 नये एमएक्टिव हुये।

- महात्मा गांधी के पोते अरूण गांधी का निधन हुआ वे 89 वर्ष के थे।

■ 3 मई

- रूस के राष्ट्रपति भवन पर ड्रोन हमले की कोशिश हुई।

- कुपवाडा (ज.क.) सुरक्षा बलों ने घुसपैठ की कोशिश नाकाम की दो आतंकी मारे गये।

- सूड़ान से 231 भारतीयों का जत्था

मुंबई पहुंचा।

■ 4 मई

- बिहार में जाति आधारित जनगणना पर उच्च न्यायालय ने रोक लगाई।

- जंतर मंतर पर प्रदर्शन कर रहे पहलवानों से पुलिस की हाथापाई हुई। धरना स्थल पर छावनी बनी।

- 4 साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म हत्या के आरोपी बसंत संपत दुपारे की दया याचिका राष्ट्रपति द्रौपति मुर्मु ने खारिज कर दी।

■ 5 मई

- राकांपा प्रमुख शरद पंवार ने इस्तीफा वापिस लिया।

- राजौरी में कंडी जंगल में छुपे आतंकी हमले में सेना के 5 जवान शहीद हुये एक जवान जखमी हुआ।

- मुरैना: आपसी रंजिश में लेपाभेड़ा गांव में एक ही परिवार के छह लोगों की हत्या की गई जिसमें 3 महिला भी शामिल थी।

■ 6 मई

- दक्षिण कश्मीर में बदल फटने से 4 लोगों की मौत हुई।

- ब्रिटेन के राजा चर्ल्स तृतीय का राज्याभिषेक हुआ।

- खालिस्तानी आतंकी परमजीत सिंह

लाहौर में मारा गया।

■ 7 मई

- अमृतसर: स्वर्ण मंदिर के 1 किमी. दूर भोजनालय में विस्फोट हुआ 10 व्यक्ति घायल हुआ घरों के शीशे टूटे।

- पुलवामा: 6 किलो आई.ई.डी बरामद हुई और एक आतंकी को गिरफ्तार किया गया।

- रायसेन (म.प्र.) पहलवती बाई सुनील कुशवाह ने नाबालिग लड़की को 5000 रुपये में बेचा।

■ 8 मई

- भाजपा ने चुनाव आयोग से श्रीमती सोनिया गांधी की शिकायत करके उनके खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

- सूडान सशस्त्र लड़ाकों की झड़पों में 100 लोगों की मौत हुई।

- चुरू की 100 मीटर गहरी खदान में आग लगने से 27 लोग मरे 175 मजदूरों को सुरक्षित बचाया।

■ 9 मई

- पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को हाईकोर्ट परिसर से आर्मी रेंजर्स ने गिरफ्तार किया।

- खरगौन (म.प्र.) सुबह 8.30 बजे एक बस 50 फुट ऊँचे पुल से गिरने के बाद 24 यात्रियों की मौत हुई।

- सेना ने फैसला किया कि 1 अगस्त से ब्रिगेडियर और उससे ऊपर के रैंक के

अधिकारियों की वर्दी एक समान होगी।

■ 10 मई

- पाकिस्तान में इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद गृहयुद्ध की स्थिति बनी।

- मुजफ्फरनगर: तरबूज बेच रहे लोगों को ट्रक ने रौंदा 3 लोग मृत हुये।

- कोलकाता: राजभवन के निकट स्थित इमारत में आग लगी।

■ 11 मई

- पाक सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को रिहा किया।

- सुप्रीम कोर्ट ने एकनाथ शिंदे गुट और उद्धव गुट 16 विधायकों की अयोग्यता पर अहं फैसला सुनाया राज्यपाल और स्पीकर गलत थे पर उद्धव को सी.एम. नहीं बना सकते।

- सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली राज्य सरकार के हित में फैसला सुनाया कि केन्द्र सरकार को जमीन और कानून व्यवस्था पर ही नियंत्रण रहेगा।

■ 12 मई

- सुप्रीम कोर्ट चीफ जस्टिस डी. बाई चंद्रचूड ने ई-फायलिंग 2.0 सेवा का प्रारंभ किया। अब 24 घंटे मामला दर्ज करने की सुविधा होगी।

- परभणी (महाराष्ट्र) जिले के सोनपेठ तहसील भाउचाताडा में शौच टैंक सफाई करने उतरे 5 सफाई कर्मियों की मौत हुई।

- अफगानिस्तान के 8 प्रांतों टिड्डियों का

हमला हुआ। 25 प्रतिशत गेहूं फसल नष्ट हुई।

■ 13 मई

- कर्नाटक में विधानसभा चुनाव के परिणाम आये कांग्रेस को 123 सीटें मिली भाजपा को 64 जेडीएस को 20 अन्य 3 सीटें मिली।

- जालंधर लोकसभा सीट को आप के उम्मीदवार सुदर्शन रिकू जीते।

- कराची के जेल से 169 भारतीय मछुआरे रिहा हुये।

■ 14 मई

- केन्द्र सरकार ने कर्नाटक डी.जी.पी को सी.बी.आई का निर्देशक नियुक्त किया।

- मोका तूफान- बांग्लादेश म्यांमार तट से टकराया। पश्चिम बंगाल में हाई अलर्ट घोषित हुआ।

- गाजापट्टी में कई दिनों बाद संघर्ष विराम घोषित हुआ।

■ 15 मई

- इस्लामाबाद: इमरान की रिहाई खिलाफ पाकिस्तान डेमो क्रेटिक पार्टी ने सुप्रीम कोर्ट के सामने प्रदर्शन किया।

- इंदौर: तेजाजी नगर थाना क्षेत्र में शराबी पिता ने अपने ही प्रतीक मेढे की गला घोंठकर हत्या कर दी। शशिकांत की शादी हुई।

- पढ़ियाला गुरुद्वारा परिसर में शराब पी रही महिला परविंदर कौर की गोली मार हत्या कर दी।

■ 16 मई

- पंजाब की आई.ए.एस रबनीत कौर को कंपीटिशन कमीशन ऑफ इंडिया का चेयरपर्सन नियुक्त किया गया।

- पूर्व उपायुक्त निलंबित अधिकारी छवि रंजन को जेल भेजा गया उन्हें रांची सिविल कोर्ट में पेश किया गया था।

- प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने रोजगार मेला में 71000 युवाओं को नियुक्त पत्र दिये।

■ 17 मई

- सुप्रीम कोर्ट ने अदानी ग्रुप पर सी.बी.आई जांच के लिये 14 अगस्त तक समय दिया ग्रुप पर शेरर मूल्यों में हेराफेरी का आरोप है।

- हिन्दूजा समूह के चैयरमैन एस.पी. हिन्दूजा का निधन हुआ।

- भारत- यूरोपीय संघ की व्यापार एवं तकनीति परिषद की पहली बैठक हुई।

■ 18 मई

- कांग्रेस ने कर्नाटक के सिद्धार रमैया को मुख्यमंत्री पद हेतु नाम तय किया।

- किरण रिजिजू के स्थान पर कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल बने।

- अजमेर: बैठक से पूर्व कांग्रेसियों में मारपीट हुई।

■ 19 मई

- रिजर्व बैंक ने 2000 रुपये नोट को चलन से बाहर करने की घोषणा की।

- भारत के प्रधानमंत्री जापान यात्रा पर रवाना हुये। जापान में वन्दे मातरम के नारे गूँजे।

- सुप्रीम कोर्ट ने ज्ञानवापी में मिले शिवलिंग के वैज्ञानिक जांच पर रोक लगाई।

■ 20 मई

- लाहौर: हाईकोर्ट ने 123 पीटीआई समर्थकों को रिहा करने का आदेश दिया।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन और यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेस्की से मिले।

- सिक्किम में मूसलाधार बारिश और भूस्खलन में फंसे 500 पर्यटकों की रेस्क्यू की।

■ 21 मई

- पाकिस्तान में पहली बार सेना के अफसरों को आदेश न मानने पर कोर्ट मार्शल कार्यवाही शुरू हुई।

- वरिष्ठ साहित्यकार किशोर सानप का निधन हुआ वे 76 वर्ष के थे।

- भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पापुअन्यू गिनी में भव्य स्वागत हुआ पी.एम. मारापे ने पैर छुये।

■ 22 मई

- भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पापुआ न्यूगिनी फिजी ने चीफ का सर्वोच्च सम्मान किया।

फिलीपींस का 100 साल पुराना डाक

घर जलकर खाक हुआ।

- केरल में 15 वर्ष बाद यहूदी विवाह हुआ।

■ 23 मई

- यू.पी.एस.सी पहली बार 34 प्रतिशत महिलाएँ हिन्दी माध्यम के 54 उम्मीदवार सफल हुये।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आस्ट्रेलिया पहुँचे और कई कार्यक्रमों में भारतीय समुदाय को संबोधित किया।

- मैक्सिको: ज्वालामुखी फटा 30 लाख लोगों पर खतरा मडराया।

■ 24 मई

- 52 वर्षीय फिल्म अभिनेता नीतेश पांडे का निधन हुआ।

- उड़ीसा के शिवमंदिरों में गाँजे के प्रसाद पर राज्य सरकार ने रोक लगाई।

- जर्मनी ने नागरिकता पाने के लिये उम्र 8 से 5 वर्ष की थी।

■ 25 मई

- मेंगलुरु से दुबई जा रहे विमान से पक्षी टकराया यात्री बाल बाल बचे।

- विपक्ष नये सांसद भवन का उद्घाटन राष्ट्रपति से कराने पर अड़ा सुप्रीम कोर्ट में विपक्ष ने याचिका दायर की।

- शियोपुर: कूने नेशनल पार्क दो चीते शावक की मौत हुई। अब 8 चीते

■ 26 मई

- दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येन्द्र

जैन को चिकित्सा के आधार पर सुप्रीम कोर्ट ने अंतिम जमानत दी।

- नये संसद भवन से जुड़ी जनहित याचिका सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दी याचिका में नये संसद भवन का उद्घाटन राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू से कराने का अनुरोध किया।

- जापान में भूकम्प को तंज झटका आया 6.1 रेक्टर रहा।

■ 27 मई

- नीति आयोग की बैठक में 10 मुख्य मंत्र अनुपस्थिति रहे।

- उत्तर कोरिया के दम्पति के पास बाइबिल पाये जाने के आरोप में 2 वर्ष के बच्चे को भी उम्र कैद की सजा सुनाई।

- जबलपुर (म.प्र.) में एनआईए ने छापा मारा सैयद मूर अली मो. आदिलखान और मो. शहिद को गिरफ्तार किया गया।

■ 28 मई

- नये संसद भवन का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से इसमें गणोकार मंत्र का उच्चारण भी हुआ।

- चंडीगढ़- जींद जिले के चंदाना गांव के व्यक्ति ने शिकायत की कि नरवाना की महिला ने बलात्कार का केस दर्ज कर समझौते के लिये 25 लाख मांगे।

- मणिपुर फिर भड़की 40 उग्रवादी मारे गये।

■ 29 मई

- प्रवीण कुमार श्री वास्तव ने केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त पद की शपथ ली।

- अहमदाबाद: 7.85 लाख मूल्य की जाली नोट के साथ विक्की मधुकर के साथ 3 लोग गिरफ्तार हुये।

- इसरो ने श्री हरिकोटा में नेवीगेशन सैटे लाइट एन.वी.एस-01 का सफलता पूर्व लांच किया।

■ 30 मई

- शराबनीति मामले जुड़े मनीलेडिंग मामले हाईकोर्ट दिल्ली ने मनीष सिसोदिया की जमानत याचिका खारिज कर दी।

- काँग्रेस सांसद सुरेश नारायण धनोकर का निधन हुआ वे 47 साल के थे।

- गिरीशचंद मुर्मू डब्ल्यू.एच.ओ. के दो बार ऑडिटर चुने गये।

■ 31 मई

- आर.पी.एफ और महाराष्ट्र पुलिस ने बिहार-पुणे अभियान चलाकर 8-17 वर्ष 59 बच्चों को छुड़ाया 4 लोग गिरफ्तार किये।

- अंजुमन इंतजामिया कमेटी की याचिका इलाहाबाद हाईकोर्ट खारिज कर दी। श्रृंगार गौरी की पूजा नियमित पूजा का केस वाराणसी में चलेगा।

- जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिलेक में सेना ने 3 आतंकियों को दबोचा 100 करोड़ की हेराईन जब्त की।

इसे भी जानिये

चिकित्सा समाज सेवा में पुरस्कार

पुरस्कार सम्मान	पुरस्कार प्रदान करने वाले	पुरस्कार का विवरण	वर्ष	राशि
जमनालाल बजाज पुरस्कार	जमनालाल बजाज फाउण्डेशन	रचनात्मक सामाजिक कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान, ग्रामीण विकास हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग तथा महिलाओं एवं बच्चों के उत्थान व कल्याण कार्यों हेतु		5 लाख
गोविन्द वल्लभ पंत पुरस्कार	गोविन्द वल्लभ पंत फाउण्डेशन एवं संवैधानिक व संसदीय अध्ययन सोसाइटी	सर्वश्रेष्ठ सांसद को	1993	1 लाख
शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार	भारतीय औद्योगिकी एवं वैज्ञानिक के अनुसंधान परिषद	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करने वाले भारतीय वैज्ञानिकों को विभिन्न वैज्ञानिक विधाओं के अंतर्गत शोध कार्य हेतु देश का सर्वोच्च वैज्ञानिक पुरस्कार	1957	2 लाख
डॉ. बी. सी. राय पुरस्कार	भारतीय चिकित्सा परिषद्	चिकित्सा एवं संबंधित समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये	1966	1 लाख
धन्वन्तरि पुरस्कार	धन्वन्तरि फाउण्डेशन	चिकित्सा क्षेत्र में आजीवन सेवा हेतु	1971	
नायुदुम्मा पुरस्कार	भारत-जापान फ्रेंडशिप एसोसिएशन	भारतीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी में सराहनीय योगदान हेतु	1986	



दिशा बोध

लज्जाशीलता



- योग्य पुरुषों का लज्जाना उन कामों के लिए होता है, जो उनके अयोग्य होते हैं; इसलिए वह सुन्दर स्त्रियों की लज्जा से सर्वथा भिन्न है।
- आहार, वस्त्र और सन्तान - इन बातों में तो सभी मनुष्य समान हैं। वह तो एक लज्जा की भावना ही है जिससे मनुष्य-मनुष्य में अन्तर प्रगट होगा।
- शरीर तो समस्त प्राणों का निवास स्थान है; पर यह सात्त्विक लज्जा है, जिसमें पात्रता और योग्यता वास करती है।
- लज्जाशीलता क्या सत्पात्रों के लिए रत्न के समान नहीं हैं ? और जब वह उससे रहित होता है, तब उसकी शेखी और ऐंठ क्या देखने वाली आँख को पीड़ा पहुँचाने वाली नहीं होती ?
- जो लोग दूसरों का अपमान देखकर भी उतने ही लज्जित होते हैं, जितने कि स्वयं अपने अपमान से; उन्हें तो लोग लज्जा और संकोच की मूर्ति ही समझेंगे।
- ऐसे साधनों के सिवाय कि जिनसे उन्हें लज्जित न होना पड़े, अन्य साधनों के द्वारा योग्य व्यक्ति राज्य तक पाने के लिए मना कर देंगे।
- जिन लोगों में लज्जा की सुकोमल भावना है, वे अपने को अपमान से बचाने के लिए अपनी जान तक दे देंगे और प्राणों पर आ बनने पर भी लज्जा को नहीं त्यागेंगे।
- यदि कोई आदमी उन बातों से लज्जित नहीं होता है, जिनसे दूसरों को लज्जा आती है; तो उसे देखकर भद्रता भी शरमा जायेगी।
- कुलाचार को भूल जाने से मनुष्य केवल अपने कुल से ही भ्रष्ट होता है, लेकिन जब वह लज्जा को भूलकर निर्लज्ज हो जाता है, तब सब प्रकार की भलाईयाँ उसे छोड़ देती हैं।
- जिन लोगों की आँखों का पानी मर गया है, वे जीवित होकर भी मरे के समान हैं। डोरी के द्वारा चलने वाली कठपुतलियों की तरह उनमें भी एक प्रकार का कृत्रिम जीवन ही होता है।

कहानी

पायल की झंकार

लेखक: 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

पानी की बौछार तेज आ रही थी खिड़कियों को बंद करना पड़ रहा था और सारे के सारे रास्ते पर वाहन तेज गति से भाग रहे थे। तेजाजी नगर के ठाणे में भी स्थिति यही की यही बनी हुई थी। थानेदार साहब प्रकाश बिलोकर अपने



तब तक घड़ी के 10 बज चुके थे और चारों तरफ पानी पानी हो गया था। बिजली कड़क रही थी। बादल गरज रहे थे कि तभी मोबाइल की घंटी बजने लगी और द केरला स्टोरी की मजे को किरकिरा करने वाली इस मोबाइल की घंटी

चारों तरफ देख रहे थे। धीरे-धीरे पानी के घरघराहट के साथ देखते ही देखते ओले भी गिरने लगे थे परंतु जब ओले गिर रहे थे तो उन्होंने समय का सदुपयोग करने के लिये जब देखा की एक तरफ सारे लोग द केरला स्टोरी के लिये विरोध कर रहे हैं तो दूसरी तरफ बहुत सारे लोग इस स्टोरी फाइल के समर्थन में थे। तब उन्होंने कहा इस केरला स्टोरी में विरोध लायक ऐसा क्या है? इसे देखना चाहिये। और यही सोचकर प्रकार जी ने अपने मोबाइल पर केरला स्टोरी देखना शुरू किया तब पिक पोइंट पर वह मूवी पहुंची

को बहुत ही बोझिलता के साथ प्रकाश जी ने मोबाइल पे आ रही कॉल को उठाया और बोले हेलो कौन? तभी उधर से आवाज आया मैं प्रकाश बोल रहा हूँ। इन्होंने बोले अरे मैं भी प्रकाश आप भी प्रकाश बोल रहे हो उसी समय लाइट चली जाती है अंधेरा हो जाता है तभी उस तरफ से जो कॉल पे था बोलता है। साहब यहाँ पूरा अंधेरा है लेकिन एक घटना घट चुकी है। मेरा नाती प्रतीक अपने बिस्तर पर औंधा पड़ा हुआ है वह न कुछ बोल रहा है और न कुछ कर रहा है मेरा बेटा शशिकांत कहीं दिखाई दे नहीं

रहा है वह घर में पीकर आया था और पीकर करके आने से मैंने उसे डांट लगाई और डांट लगाने के बाद वह अपने कमरे में चला गया और कमरे में जाने के बाद उसने प्रतीक के साथ क्या कर दिया है यह समझ में नहीं आ रहा है।

प्रतीक पर पानी मारने के बाद वह कुछ होश में आया परंतु वह कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था और यह पता लगाना मुश्किल हो रहा था कि प्रतीक को किसने मारा है। तो प्रकाश की पत्नी ने रोकर कहा कि मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि कई दिनों से शशिकांत मारने की कोशिश कर रहा था और आज शशिकांत के पिताजी जी ने शराब पीने पर कहा कि भैया इतनी शराब पी करके आता है इतनी मेहनत से तू कमाता है और अपने पैसे को शराब खाने में फेक करके आ जाता है तो शशिकांत ने गुस्सा होकर भोजन न करके सीधे अपने कमरे में चला गया और कमरा अंदर से बंद कर लिया। ये शशिकांत की रोज की शराब की आदत होने के कारण से उसके लिये कुछ ज्यादा गंभीरता से प्रकाश ने नहीं लिया और बाहर कुछ आवाज भी नहीं और कुछ दो चांटे की आवाज आई तो स्कूल प्रतीक को बचाने के लिये दरवाजे के पास गई लेकिन दरवाजा अंदर से बंद होने के कारण कुछ कर नहीं सकी। थोड़ी देर बाद शशिकांत दरवाजा खोला और बाहर

निकला लेकिन प्रतीक कोने में पड़े होने के कारण समझ गई की कुछ तो गंभीर मामला है उसने प्रकाश को बुलाया और प्रकाश ने देखा और जब कॉल किया तो वह थानेदार प्रकाश बिलोकर भी वहाँ पर आ गये। अब ये कहानी कहा जाती है इसको समझने की आवश्यकता थी।

पुलिस ने सोचा सबसे पहलं पंचनामा किया जाये पुलिस ने डॉक्टर की सलाह दे पोस्टमार्टम के लिये भेजा गया पोस्टमार्टम होने में सुबह के दूसरे दिन पुनः 10 बज गये आखरी में प्रतीक के संस्कार परिस्थिति बनी और प्रतीक का अंतिम संस्कार किया जाये और यह भी तय किया गया कि शशिकांत अगर नहीं मिल रहा हैं तो उसकी पत्नी को बुलाया जाये। शशिकांत की पत्नी को बुलाने की व्यवस्था की गई और पुलिस शशिकांत की पत्नी को कॉल किया जो शशिकांत की पत्नी ने कॉल पे कहा कि मैं इंदौर नहीं आ सकती हूँ तो प्रकाश बिलोकर ने कहा क्या बात है आप इंदौर क्यों नहीं आ सकती है। तो उसने कहा कि हम साफ सुथरी बात कर चुके हैं कि हमारे पतिदेव जब तक प्रतीक को घर में रखेंगे तब तक इस घर में कदम नहीं रख सकती हूँ तो प्रकाश ने कहा बेटा तुम यहाँ आ जाओ प्रतीक अब रहा नहीं है वह इस दुनिया से चला गया है अब तुम आओ और अपने घर को संभालो तो उसने कहा की शशिकांत को भेज दो तो प्रकाश ने

कहा शशिकांत तो मिल नहीं रहा है और प्रतीक तुम्हारा मर चुका है अब तुम्हें आना पड़ेगा उसकी प्रतीक्षा करते हुये अंतिम संस्कार की स्थिति जब बनी तब प्रतीक की स्थिति देख करके सारे मोहल्ले के लोग अपने आँखों में आशु लिये वहां पर इकट्ठे हो रहे थे। 1 बजे उसका अंतिम संस्कार होने वाला था। मोहल्ले के लोग कह रहे थे कहानी सामने आ रही थी कि प्रतीक अपने माँ का अकेला बेटा था और प्रतीक की उम्र लगभग 7 साल की थी। पड़ोस में रहने वाले जिनका नाम जोगी था उन्होंने सारी कहानी बता दिया और कहा मेरे मकान की दीवाल शशिकांत के मकान की दीवाल से लगा हुआ है। शशिकांत की तीन सादी हो चुकी हैं और पहली पत्नी की लड़का प्रतीक है। प्रतीक की बचपन से ही बहुत अच्छी योग्यता थी पढ़ने होशियार था। जब उसकी माँ गुजर गयी तो शशिकांत की दूसरी शादी हो गयी। लेकिन दुर्भाग्य की बात इसकी शराबीपन के कारण से वो भी किरण जिसका नाम था छोड़ के चली गई। फिर इसकी तीसरी शादी पायल के साथ हो गई। पायल ने स्पष्ट शर्त रख दी क्यों की पायल मोहल्ले वालों के साथ बैठती उठती थी और मेरे साथ कई बार बात हुई मैंने पायल को समझने की कोशिश की। अजय जोगी ने बताया पायल को जब कई बार उसने तलाक लेने की बात कही तो मैंने पायल को कहा ये पागलपन

ऐसे पति के साथ कब तक निर्वाह कर सकती हूँ। अजय जोगी ने बताया थानेदार को सर मैंने उसे पुनः समझाया आपको प्रतीक को रास्ते से हटाने की अपेक्षा शशिकांत को सुधारना चाहिये और पत्नी ही ऐसी होती है जो अपने पति को सुधार सकती है। मैं भी पहले शराब पीता था और बहुत बड़ा शराबी था लेकिन मेरी पत्नी ने मुझे ऐसे कोई बात कही और ऐसा एक काम किया एक दिन ऐसा आया कि मेरा जन्मदिन आया और मैंने अपने जनमदिन पर एक पार्टी रखी लेकिन एक दिन मेरी पत्नी मेरे से कहती है कि आपने पार्टी रखी अपने जन्मदिन पर अब मेरा जन्मदिन आ रही है ओर आप मुझे क्या गिफ्ट दोगे तो मैंने कहा मैं हर चीज तुम्हें गिफ्ट में दे सकता हूँ क्या दिक्रत है तो मेरी पत्नी जिसका नाम मधुबाला है उसने कहा की अगर तुम मुझे दिल से चाहते हो तो मुझे एक ही चीज दे दो। मैंने सोचा आखिर क्या मांग सकती है, आसमान का तारा तो मांगेगी नहीं ज्यादा से ज्यादा कोई चीज मांगेगी सोने की कोई चीज मांगेगी या हार मांगेगी तो मैं उससे गिफ्ट दे दूंगा क्योंकि मैं भी कमाने में कम नहीं था मैं भी ठेकेदार हूँ, मेरी ठेकेदारी भी खूब चलती है साहब। मैंने पत्नी से कहा तो मेरा पत्नी ने साड़ी की पल्लू फैलाते हुये बोली की तुम अपनी शराब की बोतल मेरे पल्लू में डाल दो, मैंने शराब की बोतल उसके पल्लू में डाल दी। उसने पैर पकड़ कर बोली तुमने मुझे शराब की बोतल दी है और दोबारा शराब नहीं पियोगे। आज से शराब नहीं पीना है। उसकी बात सुनकर के लगा सचमुच में अब शराब छोड़ देना चाहिये क्योंकि बच्चे बड़े हो रहे हैं घर की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है और मैंने शराब पीना उसी दिन से छोड़ दिया। यह बात मैंने पायल को भी बताई लेकिन पायल ने एक बात सामने रख दी कि मेरी झंकार क्योंकि उसकी प्यारी सी बेटा जिसका नाम सारे मोहल्ले वालों ने मजाक ही मजाक में झंकार रख दिया था तो सब लोग पायल की झंकार बोलने लगे और ये सुन के पायल भी बहुत खुश होती थी तो उसने झंकार नाम स्वीकार कर लिया जब पायल की झंकार नाम सुनते तो वह खुश होती थी और शशिकांत के सामने एक ही बात रखती थी की मेरी बेटा का भविष्य क्या है। सारे पैसे तुम अपने बेटे प्रतीक पर लुटा देते हो और मेरी बेटा के लिये क्या खर्च कर सकते हो, तुम्हारे पास तो खर्च करने के लिये कुछ है भी नहीं। पायल की यह बात एक दिन पंचायत लगी तो उस पंचायत में भी शामिल था। साहब और यही बात हुई की पायल ने एक ही बात कह दी कि जब तक प्रतीक इस घर में हैं तब तक मैं इस घर में नहीं रह सकती हूँ। उसकी बात सुन हम लोगों ने बहुत समझाने की कोशिश की शशिकांत का शराब छुड़वा दो, पैसे भी बचेंगे और जो एक दिन में एक हजार कमाता है दो हजार भी कमा सकता है और यह बात

शशिकांत को भी हम लोगों ने कही की तुम में तो हुनर है और अपने हुनर से तुम अच्छा पैसे कमा सकते हो और ओवरटाइम काम करके भी तुम पहले से दो गुना कमा सकते हो लेकिन जब तुम पी लेते हो तो कुछ भी अच्छा नहीं कर पाते इसलिये तुम पीना बंद कर दो। शशिकांत ने मेरी बात को सिरे से खारिज कर दिया और पायल ने भी अपनी बातों को स्पष्ट तौर पर रख दिया। मुझे पता नहीं कि शशिकांत ने कब यह तय कर लिया की प्रतीक को इस रास्ते से हटा दिया जाये। यह मुझे पता नहीं और आज यही हुआ की प्रतीक को रास्ते से हटा दिया गया।

मोहल्ले के कई लोगों से प्रकाश बेलोकर जी ने बयान लिये और उनके बयान लेने के बाद सारे के सारे बयान इसी रूप में आये। और शशिकांत भी पकड़ में आ गया पुलिस ने अपने गिरफ्त में ले लिया। गिरफ्तार शशिकांत का बयान थानेदार प्रकाश बेलोकर जी ने लिये और प्रकाश बिलोकर जब बयान ले रहा था तब शशिकांत अपने बेटे की बिदाई पर फुट-फुट रो रहा था और पायल थाने में खड़ी सिर्फ शशिकांत को घूर रही थी और शशिकांत ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया मैं प्रतीक का हत्यारा हूँ तो प्रतीक की हत्यारन पायल को भी मानना चाहिये क्योंकि उसकी बिना इस शर्त में मैं अपने प्रतीक को मैं नहीं मार सकता था क्योंकि

प्रतीक के लिये सिर्फ एक ही बात पर मुझे मारना पड़ा क्योंकि पायल मुझे छोड़कर जाने वाली थी और छोड़कर जा चुकी थी मैंने कई बार इसके घर पर गया और समझाया की तुम प्रतीक को भी साथ में रहकर अपने घर चलो लेकिन पायल एक ही बात बोलती थी की जब तक प्रतीक उस घर में रहेगा मैं उस घर में नहीं रह सकती हूँ। साहब मैं अगर हत्यारा हूँ तो पायल को भी सह आरोपी क्यों नहीं माना जा सकता है। पायल से जब पूछा तब पायल ने कहा मैंने थोड़ी ना कहा था की प्रतीक को मार डालो, मैं तो कहती थी की उसे मामा के पास रख दो, कहीं भी रख दो घर में नहीं रखो, यही बात मैं कह रही थी इसीलिये मैं उनसे हमेशा के लिये ये कहना चाहती थी किसी हॉस्टल में रखकर उसे पढ़ा दो या किसी अनाथालय में रख दो लेकिन घर में नहीं रखो ये मेरा कहना था। यह बात सुनके प्रकाश बिलोकर ने पायल से कहा सचमुच में पायल तुम भी आरोपी हो आखिरकार पायल को भी गिरफ्तार किया गया और शशिकांत और पायल दोनों पर केस बना और केस बनने के बाद जब सजा जब मिली तो शशिकांत को उम्र कैद की सजा मिलती तो पायल को भी उम्रकैद की सजा मिली। अब बेचारी पायल की झंकार घर में अकेली रह गई, वह भी छोटी मासूम सी बेटि की पालन पोषण के लिये दादा और दादी ही शेष रहें।

हमारे गौरव

आचार्य देशभूषण

दक्षिण भारत के सुविख्यात आचार्य है। श्री देशभूषण जी महाराज। आपका जन्म दक्षिण भारत के बेलगांव जिले के कोथलपुर ग्राम में संवत् 1965 को श्री सत्यगौडा जी के यहां हुआ। आपका नाम बालगौडा रखा गया।

बालगौडा ने 16 वर्ष को आयु तक कन्नड़ और मराठी भाषा में शिक्षा प्राप्त की।

बालगौडा की विवाह योग्य उम्र होने पर परिवार ने विवाह का प्रसंग छेड़ दिया। पर इन्होंने दृढ़तापूर्वक निर्णय लेकर विवाह प्रस्ताव ठुकरा दिया। और आचार्य जयकीर्ति जी महाराज की शरण ले ली। अब वे गुरुवर के साथ ब्रह्मचारियों में रहे तथा उनकी प्रेरणा से कम समय में अनेक धार्मिक ग्रंथों का गहन अध्ययन व मनन किया।

आपकी ऐलक दीक्षा, रामटेक तीर्थक्षेत्र पर व मुनि दीक्षा कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर हुई। मुनि श्री देशभूषण जी की आचार्य पद कब और कहा मिला यह तथ्य अज्ञात है।

आपके प्रवचन जनसामान्य की भाषा में विषय के विवेचक व उदाहरणों से परिपूर्ण होते थे जो श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। आपकी विद्वता और चारित्र से प्रभावित होकर अनेक धार्मिक, राजनैतिक, प्रशासनिक व प्रतिष्ठित अनेकानेक व्यक्ति भी धर्माभूत पान करने आपकी शरण में आते थे।

आचार्य श्री कन्नड़, मराठी, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती आदि भाषाओं के विद्वान थे। उनके द्वारा रचित स्वतंत्र रचनाएं हैं- गुरुशिष्य संवाद चिन्मय चिंतामणी आदि। अनेक ग्रंथों का हिन्दी, गुजराती, मराठी में अनुवाद कर जन-जन के उपयोगी बनाया जिनमें प्रमुख हैं- भरतेश वैभव, रत्नाकर शतक, परमात्मप्रकाश, धर्माभूत, मेरूमन्दर पुराण आदि।

यद्यपि आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज आज हमारे बीच नहीं है, पर उनकी विद्वता, गंभीरता, निःस्पृहता, अदभुत क्षमता, अतुलनीय गुणगणिमा, तपतेजस्विता तथा साहित्य निर्माण से आप सदैव स्मरणीय रहेंगे।

प्रभाचन्द्र का समय

✽ लेखक- न्यायाचार्य पं. महेन्द्रकुमार जैन, काशी ✽

आचार्य प्रभाचन्द्र के समय के विषय में डॉ. पाठक, प्रेमी जी तथा मुख्तार साहब आदि का प्रायः सर्वसम्मत मत यह रहा है कि आचार्य प्रभाचन्द्र ईसा की 8वीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं नवीं शताब्दी की पूर्वार्धवर्ती विद्वान् थे। और इसका मुख्य आधार है जिनसेनकृत आदिपुराण का यह श्लोक-

“चन्द्रांशुशुभ्रयशसं प्रभाचन्द्रकविस्तुवे।

कृत्वा चन्द्रोदयं येन शश्वदाह्लादितं जगत्॥”

अर्थात्- “जिनका यश चन्द्रमा की किरणों के समान धवल है, उन प्रभाचन्द्र कवि की स्तुति करता हूँ। जिन्होंने चन्द्रोदय की रचना करके जगत् को आह्लादित किया है।” इस श्लोक में चन्द्रोदय से न्यायकुमुदचन्द्रोदय (न्यायकुमुदचन्द्र) ग्रंथ का सूचन समझा गया है। आचार्य जिनसेन अपने गुरु वीरसेन की अधूरी जयध्वला टीका को शक सं. 759 (ई. 837) की फाल्गुन शुक्ला दशमी तिथि को पूर्ण किया था। इस समय अमोघवर्ष का राज्य था। जय-ध्वला की समाप्ति के अनन्तर ही आचार्य जिनसेन की अंतिम कृति है। वे इसे अपने जीवन में पूर्ण नहीं कर सके थो। उसे इनके शिष्य गुणभद्र ने पूर्ण किया था। तात्पर्य यह कि जिनसेन आचार्य ने ई. 840 के लगभग आदिपुराण की रचना प्रारंभ की होगी। इसमें प्रभाचन्द्र तथा उनके न्यायकुमुदचन्द्र का उल्लेख मानकर डॉ. पाठक आदि ने निर्विवाद रूप से प्रभाचन्द्र का समय ईसा की 8वीं शताब्दी का उत्तरार्ध तथा नवीं का पूर्वार्ध निश्चित किया है।

सुहृद् पं. कैलाशचंद्र जी शास्त्री ने न्यायकुमुदचन्द्र प्रथम भाग की प्रस्तावना (पृ. 123) में डॉ. पाठक आदि का निरास करते हुये प्रभाचन्द्र का समय ई. 950 से 1020 तक निर्धारित किया है। इस निर्धारित समय की शताब्दियाँ तो ठीक हैं पर दशकों में अंतर है। तथा जिन आधारों से यह समय निश्चित किया गया है वे भी अभ्रांत नहीं हैं। पं. जी ने प्रभाचन्द्र के ग्रंथों में व्योमशिवाचार्य की व्योमवती टीका का प्रभाव देखकर प्रभाचन्द्र की पूर्वविधि 950 ई. और पुष्पदन्तकृत महापुराण के प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण को वि. सं. 1070 (ई. 1023) में समाप्त मानकर उत्तरावति 1020 ई. निश्चित की है। मैं व्योमशिव और प्रभाचन्द्र की तुलना करते समय व्योमशिव का समय ईसा की सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध निर्धारित कर आया हूँ। इसलिये मात्र व्योमशिव के प्रभाव के कारण ही प्रभाचन्द्र का समय ई. 950 के बाद नहीं जा सकता। महापुराण के टिप्पण की वस्तुस्थिति तो यह है कि- पुष्पदन्त के महापुराण पर श्रीचंद आचार्य का भी टिप्पण है और प्रभाचन्द्र आचार्य का भी। बलात्कारण के श्रीचंद्र का टिप्पण भोजदेव के राज्य में बनाया गया है। इसकी प्रशस्ति निम्नलिखित है-

“श्री विक्रमादित्यसंवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिकसहस्रे महापुराणविषमपदविवरणं सागरसेनसैद्धान्तात् परिज्ञाय मूलटिप्पणवाञ्छालोक्य कृ-मिदं समुच्चय टिप्पणम् अज्ञपातभीतेन श्रीमद्बला (त्का) रगणश्रीसंघाचार्यसत्कंविशिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निजदोर्दण्डाभिभूतरिपुराज्य विजयिनः श्रीभोजदेवस्य ॥102॥ इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचन्द्राचार्य (?) विरचितं समाप्तम्॥”

प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण जयसिंहदेव के राज्य में लिखा गया है। इसकी प्रशस्ति के श्लोक रत्नकरण्डकश्रावकाचार की प्रस्तावना से न्यायकुमुदचन्द्र प्रथम भाग की प्रस्तावना (पृ. 120) में उद्धृत किये गये हैं। श्लोकों के अनन्तर-“श्रीजयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्भारानिवासिना परापरपरमेष्ठिप्रणामोपार्जितामलपुण्यनिराकृताखिल मलकलङ्केन श्रीप्रभाचंद्रपण्डितेन महापुराणटिप्पण के शतत्र्यधिकसहस्रत्रयपरिमाणं कृतमिति॥” यह पुष्पि का लेख है। इस तरह महापुराण पर दोनों आचार्यों के पृथक-पृथक टिप्पण हैं। इसका खुलासा प्रेमी जी के लेख से स्पष्ट हो ही जाता है। पर टिप्पणलेखक ने श्रीचंद्रकृत टिप्पण के “श्री विक्रमादित्य” वाले प्रशस्ति लेख के अंत में भ्रमवश ‘इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचंद्राचार्यविरचितं समाप्तम्’ लिख दिया है। इसी लिये डी. पी. एल. वैद्य, प्रो. हीरालाल जी तथा पं. कैलाशचंद्र जी ने भ्रमवश प्रभाचंद्रकृत टिप्पण का रचना काल संवत् 1080 समझ लिया है। अतः इस भ्रांत आधार से प्रभाचंद्र के समय की उत्तरावधि सन् 1020 नहीं ठहराई जा सकती। अब हम प्रभाचंद्र के समय की निश्चित अवधि के साधक कुछ प्रमाण उपस्थित करते हैं -

1- प्रभाचंद्र ने पहिले प्रमेयकमलमार्तण्ड बनाकर ही न्यायकुमुदचंद्र की रचना की है। मुद्रित प्रमेयकमलमार्तण्ड के अंत में “श्री भोजदेवराज्ये श्रीमद्भारानिवासिना परापरपरमेष्ठिपद प्रणामोपार्जितामलपुण्यनिराकृतनिखिलामलकलङ्केन श्रीमत्प्रभाचंद्र पण्डितेन निखिलप्रमाणाप्रमेयम्बरूपोद्योतिपरीक्षामुखपदमिदं विवृतमिति ।” यह पुष्पिकालेख पाया जाता है। न्यायकुमुदचंद्र की कुछ प्रतियों में उक्त पुष्पिकालेख ‘श्री भोजदेवराज्ये’ की जगह ‘श्रीजयसिंहदेवराज्ये’ पद के साथ जैसा का तैसा उपलब्ध है। अतः इस स्पष्ट लेख से प्रभाचंद्र का समय जयसिंहदेव के राज्य के कुछ वर्षों तक, अन्ततः सन् 1065 तक माना जा सकता है। और यदि प्रभाचंद्र ने 85 वर्ष की आयु पाई हो तो उनकी पूर्वविधि सन् 980 मानी जाती चाहिये। श्रीमान् मुख्तार सा. तथा पं. कैलाशचंद्रजी प्रमेयमार्तण्ड और न्यायकुमुदचंद्र के अंत में पाये जाने वाले उक्त ‘श्रीभोजदेवराज्ये और ‘श्री जयसिंहदेवराज्ये’ आदि प्रशस्तिलेखों को स्वयं प्रभाचंद्रकृत नहीं मानते। मुख्तार सा. इस प्रशस्तिवाक्य को टीकाटिप्पणकार द्वितीय प्रभाचंद्र का मानते हैं तथा पं. कैलाशचंद्र जी इसे पीछे के किसी किसी व्यक्ति की करतूत बताते हैं। पर प्रशस्तिवाक्य को प्रभाचंद्रकृत नहीं मानने में दोनों के आधार जुड़े जुड़े हैं। मुख्तार साहब प्रभाचंद्र को जिनसेन के पहिले का विद्वान मानते हैं, इसलिये ‘भोजदेवराज्ये’ आदिवाक्य वे स्वयं उन्हीं प्रभाचंद्र का नहीं मानते। पं. कैलाशचंद्र जी प्रभाचंद्र को ईसा की 10वीं और 11वीं शताब्दी का विद्वान मानकर भी महापुराण के टिप्पणकार श्रीचंद्र के टिप्पण के अंतिम वाक्य को भ्रमवश प्रभाचंद्रकृत टिप्पण का अंतिमवाक्य समझ लेने के कारण उक्त प्रशस्ति वाक्यों को प्रभाचंद्रकृत नहीं मानना चाहते। मुख्तार साहब ने एक हेतु यह भी दिया है कि - प्रमेयकमलमार्तण्ड की कुछ प्रतियों में यह अंतिम वाक्य नहीं पाया जाता। और इसके लिये भाण्डारकर इंस्टीट्यूट की प्राचीन प्रतियों का हवाला दिया है। मैंने भी प्रमेयकमलमार्तण्ड का पुनः सम्पादन करते समय जैनसिद्धांतभवन आगरा की प्रति के पाठान्तर लिये हैं। इसमें भी उक्त ‘भोजदेवराज्ये’ वाला वाक्य नहीं है। इसी तरह न्यायकुमुदचंद्र के सम्पादन में जिन आ, ब,

श्र, और भां. प्रतियों का उपयोग किया है, उनमें आ. और ब. प्रति में 'श्री जयसिंहदेवराज्य' वाला प्रशस्ति लेख नहीं है। हाँ, भां. और श्र. प्रतियाँ, जो ताड़पत्र पर लिखी हैं, उनमें 'श्री जयसिंहदेवराज्य' वाला प्रशस्तिवाक्य है। इनमें भां. प्रति शालिवाहनशक 1764 की लिखी हुई है। इस तरह प्रमेयकमलमार्तण्ड की किन्हीं प्रतियों में उक्त प्रशस्तिवाक्य नहीं है, किन्हीं में 'श्री पद्मनन्दि' श्लोक नहीं है तथा कुछ प्रतियों में सभी श्लोक और प्रशस्ति वाक्य है। न्यायकुमुदचन्द्र की कुछ प्रतियों में 'जयसिंह देवराज्य' प्रशस्ति वाक्य नहीं है। श्रीमान् मुख्तार साहब प्रायः इसी में उक्त प्रशस्तिवाक्यों को प्रभाचन्द्रकृत नहीं मानते।

इसके विषय में मेरा यह वक्तव्य है कि- लेखक प्रमादवश प्रायः मौजूद पाठ तो छोड़ देते हैं पर किसी अन्य की प्रशस्ति अन्य ग्रंथ में लगाने का प्रयत्न कम करते हैं। लेखक आखिर नकल करने वाले लेखक ही तो हैं, उनमें इतनी बुद्धिमानी की भी कम संभावना है कि वे 'श्री भोजदेवराज्य' जैसी सुन्दर गद्य प्रशस्ति को स्वकपोलकल्पित करके उसमें जोड़ दें। जिन प्रतियों में उक्त प्रशस्ति नहीं है तो समझना चाहिये कि लेखकों के प्रमाद से उनमें यह प्रशस्ति लिखी ही नहीं गई। जब अन्य अनेक प्रमाणों से प्रभाचन्द्र का समय करीब-करीब भोजदेव और जयसिंह के राज्य काल तक पहुँचता है तब इन प्रशस्तिवाक्यों को टिप्पणकारकृत या किसी पीछे होने वाले व्यक्ति की करतूत कहकर नहीं टाला जा सकता। मेरा यह विश्वास है कि 'श्रीभोजदेवराज्य' या 'श्रीजयसिंहदेवराज्य' प्रशस्तियाँ सर्वप्रथम प्रमेयकमलमार्तण्ड और न्यायकुमुदचन्द्र के रचयिता प्रभाचन्द्र ने ही बनाई हैं। और जिन जिन ग्रंथों में ये प्रशस्तियाँ पाई जाती हैं वे प्रसिद्ध तर्कग्रंथकार प्रभाचन्द्र के ही ग्रंथ होने चाहियें।

2- यापनीयसंघाग्रणी शाकटायनाचार्य ने शाकटायन व्याकरण और अमोघवृत्ति के सिवाय केवलिभुक्ति और स्त्रीमुक्ति प्रकरण लिखे हैं। शाकटायनने अमोघवृत्ति, महाराज अमोघवर्ष के राज्यकाल (ई. = 14 से 877) में रची थी। आ. प्रभाचन्द्र ने प्रमेयकमलमार्तण्ड और न्यायकुमुदचंद्र में शाकटायन के इन दोनों प्रकरणों का खंडन आनुपूर्वी से किया है। न्यायकुमुदचंद्र में स्त्रीमुक्तिप्रकरण से एक कारिका भी उद्धृत की है। अतः प्रभाचन्द्र का समय ई. 900 से पहिले नहीं माना जा सकता।

3- सिद्धसेनदिवाकर के न्यायावतार पर सिद्धर्षिगणि एक वृत्ति उपलब्ध है। हम 'सिद्धर्षि और प्रभाचन्द्र' की तुलना में बता आये हैं कि प्रभाचन्द्र ने न्यायावतार के साथ ही साथ इस वृत्ति को भी देखा है। सिद्धर्षि ने ई. 106 में अपनी उपमितिभवप्रपञ्चा कथा बनाई थी। अतः न्यायावतारवृत्ति के द्रष्टा प्रभाचन्द्र का समय सन् 910 के पहिले नहीं माना जा सकता।

4- भासर्वज्ञ का न्यायसार ग्रंथ उपलब्ध है। कहा जाता है कि इस पर भासर्वज्ञ की स्वोपज्ञ न्यायभूषण नाम की वृत्ति थी। इस वृत्ति के नाम से उत्तरकाल में इनकी भी 'भूषण' रूप में प्रसिद्धि हो गई थी। न्यायलीलावतीकार के कथन से ज्ञात होता है कि भूषण क्रिया को संयोगरूप मानते थे। प्रभाचन्द्र ने न्यायकुमुदचंद्र (पृ. 282) में भासर्वज्ञ के इस मत का खंडन किया है। प्रमेयकमल मार्तण्ड छठवें अध्याय में जिन विशेष्यासिद्ध आदि हेत्वाभासों का निरूपण है वे सब न्यायसार से ही लिये गये हैं। स्व. डॉ. सतीशचंद्र विद्याभषणू इनका समय ई. 900 के लगभग मानते हैं। अतः प्रभाचन्द्र का समय भी ई 900 के बाद ही होना चाहिये।

5- आचार्य देवसेन ने अपने दर्शनसार ग्रंथ (रचना समय 990 वि., 933 ई.) के बाद भाव संग्रह ग्रंथ बनाया है। इसकी रचना संभवतः सन् 640 के आसपास हुई होगी। इसकी एक 'नोकम्मकम्महांग' गाथा प्रमेयकमलमार्तण्ड तथा न्यायकुमुदचंद्र में उद्धृत है। यदि यह गाथा स्वयं देवसेन की है तो प्रभाचंद्र का समय सन् 940 के बाद होना चाहिये।

6- आचार्य प्रभाचंद्र ने प्रमेयकमलमार्तण्ड और न्यायकुमुद बनाने के बाद शब्दम्भोजभास्कर नाम का जैनैन्द्रन्यास रचा था। यह न्यास जैनैन्द्रमहावृत्ति के बाद इसी के आधार से बनाया गया है। मैं 'अभयनन्दि और प्रभाचंद्र' की तुलना करते हुये लिख आया हूँ कि नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती के गुरु अभयनन्दि ने ही यदि महावृत्ति बनाई है तो इसका रचनाकाल अनुमानतः 960 ई. होना चाहिये। अतः प्रभाचंद्र का समय ई. 960 ई. से पहिले नहीं माना जा सकता।

7- पुष्पदन्तकृत अपभ्रंशभाषा के महापुराण पर प्रभाचन्द्र ने एक टिप्पण रचा है। इसकी प्रशस्ति रत्नकरण्डकश्रावकाचार की प्रस्तावना (पृ. 61) में दी गई है। यह टिप्पण जयसिंह देव के राज्यकाल में लिखा गया है। पुष्पदन्त ने अपना महापुराण सन् 965 ई. में समाप्त किया था। टिप्पण की प्रशस्ति से तो यही मालूम होता है कि प्रसिद्ध प्रभाचंद्र ही इस टिप्पण के कर्ता है। यदि यही प्रभाचंद्र इसके रचयिता हैं, तो कहन होगा कि प्रभाचंद्र समय ई. 965 के बाद ही होना चाहिये। यह टिप्पण उन्होंने न्यायकुमुदचंद्र की रचना करके लिखा होगा। यदि यह टिप्पण प्रसिद्ध तर्क ग्रंथकार प्रभाचंद्र का न माना जाय तब भी इसकी प्रशस्ति के श्लोक और पुष्पिकालेख, जिनमें प्रमेयकमलमार्तण्ड और न्यायकुमुदचंद्र के प्रशस्ति श्लोकों का पूर्व पुष्पिकालेख का पूरा पूरा अनुसरण किया गया है, प्रभाचंद्र की उत्तरावधि जयसिंह के राज्यकाल तक निश्चित करने में साधक तो हो ही सकते हैं।

8- श्रीधर और प्रभाचंद्र की तुलना करते समय हम बता आये हैं कि प्रभाचंद्र के ग्रंथों पर श्रीधर की कन्दली भी अपनी आभा दे रही है। श्रीधर ने कन्दली टीका ई. सन् 991 में समाप्त की थी। अतः प्रभाचंद्र की पूर्वावधि ई 990 के करीब मानना और उनका कार्यकाल ई. 1020 के लगभग मानना संगत मालूम होता है।

9- श्रवणबेलगोला के लेख नं. 40 (64) में एक पद्मनन्दि सैद्धान्तिक का उल्लेख है और इन्हीं के शिष्य कुलभूषण के सधर्मा प्रभाचंद्र को शब्दाम्भोरुहभास्कर और पथिततर्कग्रन्थकार लिखा है-

“अविद्धकर्णा दकपद्मनन्दि सैद्धान्तिकाख्योऽजनि यस्य लोके।

कौरमारदेवव्रतिताप्रसिद्धिः जीयातु सो ज्ञाननिधिस्स धीरः ॥15॥”

तच्छिष्यः कुलभूषणाख्ययतिपश्चारित्रबागंनिधिः, सिद्धान्ताम्बुधिपारगो नतविनेयस्तत्सधर्मो महान्।

शब्दाम्भोरुहभास्करः प्रथिततर्कग्रन्थकारः प्रभा चन्द्राख्यो मुनिराजपण्डितवरः श्रीकुण्डकुन्दान्वयः 16”

इस लेख में वर्णित प्रभाचंद्र, शब्दाम्भोरुहभास्कर और प्रथिततर्कग्रन्थकार विशेषणों के बल से शब्दाम्भोजभास्कर नामक जैनैन्द्रन्यास और प्रमेयकमलमार्तण्ड, न्यायकुमुदचंद्र आदि ग्रंथों के कर्ता प्रस्तुत प्रभाचन्द्र ही हैं। धवलाटीका का पु. 2 की प्रस्तावना में ताड़पत्रीय प्रति का इतिहास

बताते हुये प्रो. हीरालाल जी ने इस शिलालेख में वर्णित प्रभाचंद्र के समय पर संयुक्ति के ऐतिहासिक प्रकाश डाला है। उसका सारांश यह है कि- “उक्त शिलालेख में कुलभूषण के सिद्धांतवाराणिधि, सद्वृत्त कुलचंद्र नाम के शिष्य हुये। कुलचंद्र देव के शिष्य माघनन्दि मुनि हुये, जिन्होंने कोल्लापुर में तीर्थ स्थापन किया। इनक श्रावक शिष्य थे सामन्त केदार नारकस, सामन्त निम्बदेव और सामन्त कामदेव। माघनन्दि के शिष्य हुये-गण्डविमुक्तदेव, जिनके एक छात्र सेनापति भरत थे, व दूसरे शिष्य भानुकीर्ति और देवकीर्ति, आदि। इस शिलालेख में बताया है कि महामण्डलाचार्य देवकीर्ति पंडितदेव ने कोल्लापुर की रूपनारायण वसदि के अधीन केल्लंगरेय प्रतापुर का पुनरुद्धार कराया था, तथा जिननाथपुर में एक दानशाला स्थापित की थी। उन्होंने अपने गुरु की परोक्ष विनय के लिये महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भंडारी, अभिनवगंगदंडनायक श्री हुल्लराजने उनकी निपट्या निर्माण कराई, तथा गुरु के अन्य शिष्य लक्खनन्दि, माधव और त्रिभुवनदेव ने महादान व पूजाभिषेक करके प्रतिष्ठा की। देवकीर्ति समय पर प्रकाश डालने वाला शिलालेख नं. 39 हैं। इसमें देवकीर्ति की प्रशस्ति के अतिरिक्त उनके स्वर्गवास का समय शक 1085 सुभानु संवत्सर आषाढ़ शुक्ल 9 बुधवार सूर्योदयकाल बतलाया गया है। और कहा गया है कि उनके शिष्य लक्खनन्दि, माधवचन्द्र और त्रिभुवनमल्ल ने गुरुभक्ति से उनकी निषट्या की प्रतिष्ठा कराई। देवकीर्ति पद्मनन्दि से पांच पीढ़ी तथा कुलभूषण और प्रभाचन्द्र से चार पीढ़ी बाद हुये हैं। अतः इन आचार्यों को देवकीर्ति के समय से 100-125 वर्ष अर्थात् शक 950 (ई 1028) के लगभग हुये मानना अनुचित न होगा। उक्त आचार्यों के काल निर्णय में सहायक एक और प्रमाण मिलता है। कुलचन्द्र मुनि के उत्तराधिकारी माघनन्दि कोल्लापुरीय कहे गये हैं। उनके गृहस्थ शिष्य निम्बदेव सामन्त का उल्लेख मिलता है। जो शिलाहार गंडगदित्यदेव के उल्लेख शक सं. 1030 से 1058 तक के लेखों में पाये जाते हैं। इसमें भी पूर्वोक्त कालनिर्णय की पुष्टि होती है।”

यह विवेचन शक सं. 1085 में लिये गये शिलालेखों के आधार से किया गया है। शिलालेख की वस्तुओं का ध्यान से समीक्षण करने पर यह प्रश्न होता है कि- जिस तरह प्रभाचन्द्र के सधर्मा कुलभूषण की शिष्य परम्परा दक्षिण प्रान्त में चली उस तरह प्रभाचन्द्र की शिष्य परम्परा का कोई उल्लेख क्यों नहीं मिलता ? मुझे तो इसका यही संभाव्य कारण मालूम होता है कि पद्मनन्दि के एक शिष्य कुलभूषण तो दक्षिण में ही रहे और दूसरे प्रभाचन्द्र उत्तर प्रांत में आकार धारा नगरी के आसपास रहे हैं। यही कारण है कि दक्षिण में उनकी शिष्य परम्परा का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इस शिलालेखीय अंकगणना से निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि प्रभाचन्द्र भोजदेव और जयसिंह दोनों के समय विद्यमान थे। अतः उनकी पूर्वावधि सन् 990 के आसपास मानने में कोई बाधक नहीं है।

10- वादिराजसूरि ने अपने पार्श्वचरित में अनेकों पूर्वाचार्यों का स्मरण किया है। पार्श्वचरित शक सं. 947 (ई. 1025) में बनकर समाप्त हुआ था। इन्हीं ने अकलंकदेव के न्यायविनिश्चय प्रकरण पर न्यायविनिश्चयविवरण या न्यायनिविश्चयतात्पर्यावद्योतनी व्याख्यानरत्नमाला नाम की विस्तृत टीका लिखी है। इस टीका में पचासों जैन-जैनैतर आचार्यों कि ग्रंथों में प्रमाण उद्धृत किये गये हैं। संभव है कि वादिराज के समय में प्रभाचन्द्र की प्रसिद्धि न हो पाई हो, अन्यथा तर्कशास्त्र के रसिक

वादिराज अपने इस यशस्वी ग्रंथकार का नामोल्लेख किये बिना न रहते। यद्यपि ऐसे नकरात्मक प्रमाण स्वतंत्र भाव से किसी आचार्य के समय के साधक या बाधक नहीं होते फिर भी अन्य प्रबल प्रमाणों के प्रकाश में इन्हें प्रसङ्गसाधन के रूप में तो उपस्थित किया ही जा सकता है। यही अधिक संभव है कि वादिराज और प्रभाचन्द्र समकालीन और सम-व्यक्तित्वशाली रहे हैं अतः वादिराज ने अन्य आचार्यों के साथ प्रभाचन्द्र का उल्लेख नहीं किया है।

अब हम प्रभाचन्द्र की उत्तरावधि के नियामक कुछ प्रमाण उपस्थित करते हैं -

1. ईसा की चौदहवीं शताब्दी के विद्वान् अभिनवधर्मभूषण ने न्यायदीपिका (पृ. 16) में प्रमेयकमलमार्तण्ड का उल्लेख किया है। इन्होंने अपनी न्यायदीपिका वि.सं. 1442 (ई. 1385) में बनाई थी। ईसा की 13वीं शताब्दी के विद्वान् मल्लिषेण ने अपनी स्याद्वादमंजरी (रचना समय ई. 1293) में न्यायकुमुदचन्द्र का उल्लेख किया है। ईसा की 12वीं शताब्दी के विद्वान् आचार्य मलयगिरि ने आवश्यक निर्यक्ति टीका (पृ. 371ए) में लघीयस्त्रय की एक कारिका का व्याख्यान करते हुये ‘टीकाकार’ के नाम से न्यायकुमुदचन्द्र में की गई उक्त कारिका की व्याख्या उद्धृत की है। ईसा की 12वीं शताब्दी के विद्वान् देवभद्र ने न्यायावतारटीका टिप्पण (पृ. 25,79) में प्रभाचन्द्र और उनके न्यायाकुमुदचंद्र का नामोल्लेख किया है। अतः 12वीं शताब्दी तक के विद्वानों के उल्लेखों के आधार से यह प्रामाणिक रूप से कहा जा सकता है कि प्रभाचन्द्र ई. 12 वीं शताब्दी के बाद के विद्वान् नहीं है।

2- रत्नकरण्डश्रावकाचार और समाधितन्त्र पर प्रभाचंद्रकृत टीकाएँ उपलब्ध हैं। पं. जुगलकिशोर जी मुख्तार ने इन दोनों टीकाओं का एक ही प्रभाचंद्र के द्वारा रची हुई सिद्ध किया है। आपके मत से ये प्रभाचंद्र प्रमेयकमलमार्तण्ड आदि के रचयिता से भिन्न हैं। रत्नकरण्डटीका का उल्लेख पं. आशाधर जी द्वारा अनागारधर्मावृत टीका (अ 8 श्लोक 93) में किये जाने के कारण इस टीका का रचनाकाल वि. सं. 1300 से पहिले का अनुमान किया है, क्योंकि अ. घ.टी.वि.सं. 1300 बनकर समाप्त हुई थी अन्ततः मुख्तार सा. इस टीका का रचनाकाल विक्रम की 13वीं शताब्दी का मध्यभाग मानते हैं। अस्तु, फिलहाल मुख्तार साहब के निर्णय के अनुसार इसका रचनाकाल वि. 1250 (ई. 1193) मानकर प्रस्तुत विचार करते हैं।

रत्नकरण्डकश्रावकाचार (पृ. 6) में केवलिकवलाहार का न्यायाकुमुदगतशब्दावली का अनुसरण करके खंडन करते हुये लिखा है कि -“तदलमतिप्रसङ्गेन प्रमेयकमलमार्तण्डे न्यायकुमुदचंद्रे प्रपञ्चतः प्ररूपणात्।” इसी तरह समा. टी. (पृ. 15) में लिखा है- “यैः पुनर्योगसांख्यैः मुक्तौ तत्प्रच्युतिरात्मनोऽभ्युपगता ते प्रमेयकमलमार्तण्डे न्यायकुमुदचंद्रे च मोक्षविचारे विस्तरतः प्रत्याख्याताः।” इन उल्लेखों से स्पष्ट है कि प्रमेयकमलमार्तण्ड और न्यायकुमुदचंद्रग्रन्थ इन टीकाओं से पहिले रचे गये हैं। अतः प्रभाचन्द्रग्रन्थ इन टीकाओं से पहिले रच गये हैं। अतः प्रभाचंद्र ई. की 12वीं शताब्दी के बाद के विद्वान् नहीं हैं।

3- वादिदेवसूरि का जनम वि. सं. 1143 तथा स्वर्गवास वि. सं. 1226 में हुआ था। ये वि. 1174 में आचार्यपद पर बैठे। संभव है इन्होंने वि. सं. 1175 (ई. 1118) के लगभग अपने प्रसिद्ध ग्रंथ स्याद्वादरत्नाकर की रचना की होगी। स्याद्वादरत्नाकर में प्रभाचंद्र के

प्रमेयकमलमार्तण्ड और न्यायकुमुदचंद्र का न केवल शब्दार्थानुसरण ही किया गया है किन्तु कवलाहारसमर्थन प्रकरण में तथा प्रतिबिम्ब चर्चा में प्रभाचंद्र और प्रभाचंद के प्रमेयकमलमार्तण्ड का नामोल्लेख करके खंडन भी किया गया है। अतः प्रभाचंद्र के समय की उत्तरावधि अन्ततः ई. 1100 सुनिश्चित हो जाती है।

4- जैनैन्द्रव्याकरण के अभयनन्दिसम्मत सूत्र पाठ पर श्रुतकीर्ति ने 'पंचवस्तु प्रक्रिया बनाई है। श्रुतकीर्ति कनड़ी चंद्रप्रभचरित्र के कर्ता अगलकवि के गुरु थे। अगलकवि ने शक 1011 ई. 1089 में चंद्रप्रभचरित्र पूर्ण किया था। अतः श्रुतकीर्ति का समय भी लगभग ई. 1075 होना चाहिये। इन्होंने अपनी प्रक्रिया में एक 'न्यास' ग्रंथ का उल्लेख किया है। संभव है कि यह प्रभाचन्द्रकृत शब्दाम्भोजभास्कर नाम का ही न्यास हो। यदि ऐसा है तो प्रभाचंद्र की उत्तरावधि ई. 1075 मानी जा सकती है।

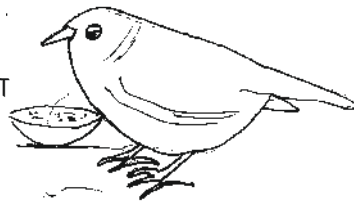
शिमांगा जिले के शिलालेख नं. 46 से ज्ञात होता है कि पूज्यपाद ने भी जैनैन्द्र न्यास की रचना की थी। यदि श्रुतकीर्ति ने न्यास पद से पूज्यपादकृत न्यास निर्देश किया है तब 'टीकामाल' शब्द से सूचित होने वाली टीका की माला तो प्रभाचंद्रकृत शब्दाम्भोजभास्कर को पिरोया ही जा सकता है। इस तरह प्रभाचंद्र के पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती उल्लेखों के आधार से हम प्रभाचंद्र का समय सन् 980 से 1065 तक निश्चित कर सकते हैं। इन्हीं उल्लेखों प्रकाश में जब हम प्रमेयकमलमार्तण्ड के 'श्रीभोजदेवराज्ये' आदि प्रशस्ति लेख तथा न्यायकुमुदचंद्र के 'श्रीजयसिंहदेवराज्ये' आदि प्रशस्ति लेख को देखते हैं तो वे अत्यन्त प्रामाणिक मालूम होते हैं। उन्हें किसी टीका टिप्पणकारका या किसी अन्य व्यक्ति की करतूत कह कर नहीं टाला जा सकता।

उपर्युक्त विवेचन से प्रभाचंद्र के समय की पूर्वावधि और उत्तरावधि करीब करीब भोजदेव और जयसिंह देव के समय तक ही आती है। अतः प्रमेयकमलमार्तण्ड और न्यायकुमुदचंद्र में पाये जाने वाले प्रशस्ति लेखों की प्रामाणिकता और प्रभाचंद्रकर्तृता में संदेह को स्थान नहीं रहता। इसलिये प्रभाचंद्र का समय ई. 980 से 1065 तक मानने में कोई बाधा नहीं है।

कविता

मूक पखेऊ जान बचाना

चूँ चूँ चिड़ियाँ आँगन आयी, पंख फैलाये सामने आयी
दाना ढूँढे ढूँढे पानी, जीवन मेरा दाना पानी
गर्मी के दिन चढ़कर आये, दाना पानी मिल न पाये
देख के गर्मी मन घबराये, स्वांसों की बाजी लग जाये
मेरी वाणी निकल न पाये, तुम हो गर भगवान के बच्चे
भक्त यदि तुम प्रभु के सच्चे, एक काम तुम हर दिन करना
एक सकोरा पानी भरना, मुट्ठी भर तुम दाना लाना
हम जैसों की जान बचाना, दया धर्म का फर्ज निभाना
मूक पखेऊ जान बचाना



क्रमांक-28 वरिष्ठ नागरिक



ऑनलाईन वसीयत का रूझान

बुढ़ापे से पहले बिल

यह लेख देखने में पहले कुछ अटपटा सा लगेगा, परन्तु इस में एक कटु सत्य छुपा हुआ है। एक सच्चाई को अपने दिमाग में रखकर यह लेख पढ़ें। आप किसी भी आयु में अपनी WILL बनवाये, उसके बाद आप 100 वर्ष तक भी जिन्दा रहते हो, आप जिन्दगी के किसी भी पढ़ाव में पहली WILL केन्सल कर के नई WILL बना सकते हैं। यहाँ तक कि जिन्दगी में जितनी बार मर्जी से पहली WILL केन्सल करवा कर नहीं WILL बना सकते हैं।

बेंगलूर की रहने वाली पूजा श्रीवत्स ने मात्र 39 वर्ष की आयु में अपनी पहली वसीयत तैयार की थी। ऐसे हुआ कुछ ही समय पूर्व उसके पिता बिना किसी वसीयत के ढेर सारी सम्पत्ति छोड़ स्वर्ग सुधार गये थे। इसी कटु अनुभव से प्रेरित होकर पूजा ने समय रहते अपनी वसीयत तैयार करने का फैसला लिया था। उसका कहना है "मैं नहीं चाहती कि सम्पत्ति या पैसा आपकी मनु-मुटाव का कारण बने। दूसरों को भला यह कृत्य कितना भी बेवकूफी भरा क्यों न लगे, मैंने अपने पास मौजूद मामूली-सी सम्पत्ति और पैसे का पूरा रिकार्ड अपनी वसीयत में दर्ज कर दिया है।"

इसी प्रकार पुणे के रहने वाले प्रमोद कुमार ने भी 40वें वर्ष में प्रवेश करते ही अपनी वसीयत तैयार कर ली थी। वह अकेले अभिभावक हैं और उनकी दो बेटियाँ हैं। इसलिये वह यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि किसी अनहोनी घटना के मद्देनजर उनकी बेटियों को बुरे दिन न देखने पड़ें।

ऐसे लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है, जो कोई भी बात भाग्य के सहारे नहीं छोड़ना चाहते। अब तो बहुत से लोग 40 वर्ष आयु के आसपास पहुँचते ही अपनी वसीयत तैयार करवा लेते हैं, यानि कि बुढ़ापा आने के बाद सम्पत्ति को लेकर कटु विवाद खड़े न हों। ऐसा वह इसलिये करना चाहते हैं कि उन्होंने अपनी आँखों से अनेक परिवारों की सम्पत्ति विवादों के कारण छिन्न-भिन्न होते देखा है।

वसीयत तैयार करवाने के इस रूझान की सहायता के लिये वर्तमान में कई सारे ऑनलाईन विकल्प उपलब्ध हैं। 'वकील सर्व' के संस्थापक तथा सी.ई.ओ. ऋषिकेश दातार का कहना है कि हर दो वर्षों दौरान ही वसीयत से संबंधित जानकारी मांगने वालों की संख्या दो गुना हो जाती है। उन्होंने बताया कि सन् 2012 में उनसे लगभग 200 लोगों ने इस संबंध में जानकारी मांगी थी जबकि सन् 2014 में यह संख्या 409 हो गई तथा सन् 2016 में 863 हो गई और वर्ष 2018 में यह आंकड़ा करीब 1000 हो गया है।

दातार का कहरना है “हर 4 सैकेंड बाद एक व्यक्ति बिना वसीयत किये ही मौत के मुँह में चला जाता है। उनकी प्यारी संतानों को उनकी सम्पत्ति का लाभ हासिल करने में औसतन एक दशक या इससे भी अधिक समय तक मुकदमबाजी में उलझना पड़ता है लोग असमय मृत्यु को एक असुखद मुद्दा समझ कर इसे टाल देते हैं और समय पर वसीयत नहीं करवाते।”

‘वकील सच’ चार्टर्ड अकाउंटेंट और वकीलों के लिये एक ऑनलाइन प्लेटफार्म हैं। जहां वसीयत लिखने की किट खरीदी जा सकती है। “राइटविल” नामक यह किट ऑनलाइन स्टोर एमाजोन पर भी 400 रुपये में खरीदी जा सकती है। इस किट में एक दस्तावेज होता है जिसमें प्रारंभिक या कच्ची वसीयत लिखने के साथ-साथ पक्की या निअंतिम वसीयत लिखने और इसे सफेद लिफाफे में सम्भालने के लिये मार्गदर्शन व प्रावधान उपलब्ध हैं।

बहुत से लोग इस भ्रांति के शिकार हैं कि वसीयत केवल स्टॉम्प पेपर पर ही लिखी जा सकती है। दातार कहते हैं “हमारा उद्देश्य लोगों को यह सहायता देना है कि वह केवल चाय पीते-पीते ही 10 मिनट में अपनी वसीयत तैयार कर इस पर हस्ताक्षर करें और इसे मोहरबंद कर लें।”

वैसे किसी भी रूप में बनाई गई वसीयत बहुत बढ़िया हैं, परन्तु फिर भी एक बात याद रखें कि स्टॉम्प पेपर पर लिख तथा सब रजिस्ट्रार से पंजीकृत वसीयत सबसे बढ़िया विकल्प है। इससे सरकारी झंझटों, पटवारी के ऑफिस तथा बैंकों इत्यादि में होने वाली परेशानी से छुटकारा पाने में आसानी रहती है।

कविता धर्म पंथ पर

साँझ सबेरे गीत प्रभु के गाता चल
जीवन सफल बनाकर अपना गीत खुशी के गाता चल
कौन है अपना कौन पराया क्षणभंगुर ये दुनिया है
तन नश्वर है मन चंचल है गोल मोल ये दुनिया है
झूठे रिस्ते तोड़ के सारे प्रभु को अपना बनाता चल
मृत्यु तेरी नहीं टलेगी शाश्वत शरण प्रभु की है
चारों गतियाँ भटका चेतन सच्ची संगति प्रभु की है
देह आत्मा भिन्न मानकर चेतन पथ पर चलता चल
भरी गंदगी इस काया में योगा शुभासुभ आस्रव है
जिनदर्शन से संवर पाले द्वादश तप से निर्जर है
शाश्वत लोक मनुज तन दुर्लभ धर्म पंथ पर बढ़ता चल



हिचकी याद करु किसकी-कारण व नियंत्रण उपाय

✳ जिनेंद्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ✳

पेट और फेफड़ों के बीच स्थित डायफ्राम के सिकुड़ने से फेफड़े तेजी से हवा खींचते जिससे हिक-हिककर की आवाज होती है जिससे व्यक्ति को हिचकी आने लगती है हिचकी आना हमारी शरीर की एक स्वाभिमिक प्रक्रिया है। अक्सर जब भी हिचकी आती है तो हम सोचते हैं कि कोई याद कर रहा है।

डायफ्राम एक गुम्बद के आकार पेशियों के बंधन ढांचा होता है जो वक्ष को उदरीय गुहिकाओं से पृथक् करता है। यह वक्ष का फर्श तथा उदर गुहिका की छत बनाती है। हम हम सांस लेते हैं तो डायफ्राम के सिकुड़ने से फेफड़े तेजी से हवा खींचते हैं जो वक्ष की बड़ी हुई गुहिका (Cavity) को भरने के लिये फैलते हैं और सांस छोड़ने पर यह डायफ्राम की पेशियों के रेशे आराम करते हैं जिससे गुम्बद ऊपर उठ जाता है और वक्ष की गुहिका का आकार छोटा होने से वायु फेफड़ों से बाहर निकल जाती है।

डायफ्राम अनेच्छिक पेशियों से बना होता है जो स्वचलित नस नियंत्रण में कार्य करता है। इनको वेगस नसें से फ्रेनिक नसें या फ्रेनिक नसें पेशियों का पोषण व गति और बल कम करने व सिकुड़ने में सहायक होती है। इन नसों को नुकसान पहुंचने या उत्तेजना होने के कारण डायफ्राम बार-बार सिकुड़ता है और फेफड़े तेजी से हवा खींचते हैं यही हवा हिचकी आने के कारण होती है जो आमतौर पर डकार से वापिस आ जाती है लेकिन कभी यह भोजन की तहों के बीच फस जाती है व हिचकी इस हवा को बाहर निकालने का उपाय करती है।

हिचकी आने के कई कारण हैं जिसमें प्रमुख पाचन या श्वसन तंत्र की गड़बड़ी ही है। इसके निम्नानुसार कारण हैं 1. कभी - कभी भोजन गले में फसने के कारण 2. अधिक तीखा भारी भोजन करना व भोजन के बाद पेट फूल जाना व बहुत जल्दी-जल्दी भोजन करना। 3. कैंडी या च्युइंगम चूसते समय हवा निगल जाने से। 4. एसिडिटी व गले में कुछ अटकना। 5. अत्याधिक मानसिक तनाव भय 6. कार्बोनेट ड्रिक्स या शराब का अधिक सेवन करना। 7. तापमान में अचानक परिवर्तन होना। 8. अधिक समय तक तेज दवाईयाँ का उपयोग करना। 9. प्लूरा, पेरिकार्डियम इत्यादि किसी बीमारी की प्रत्याव्रत क्रिया से पाकस्थली, लिवर, आंत की बीमारी होना। 10. एनिमिया (रक्त की कमी) व अत्याधिक रक्तस्राव होना या शरीर से तेज कारण किसी जली पदार्थ का स्राव होना। 11. किसी दुर्बल शरीर क्षयकारक रोग के साथ जैसे शुगर, ब्राइट्स रोग, टाइफाइड, ट्यूब कुलोरिस, कालरा, प्लुरिसी, बड़ा फोड़ा

इत्यादि। 12. ट्यूमर सा संक्रमण के कारण नर्वस तंत्र को नुकसान पहुँचना। 13. कृमि दोष व प्रदूषण, गर्भावस्था में हिचकी चलना।

सावधानियाँ- 1. पोष्टिक भोजन व कम मसालेदार भोजन करना व भोजन करते समय ज्यादा बातें नहीं करना व कारणों को ध्यान रखते हुये सावधानी रखना। 2. ज्यादा भीड़ वाली जगहों पर जाने से बचना। 3. पेट गरम होकर हिचकी आने पर अधिक दवा देना उचित नहीं है।

नियंत्रण उपाय- 1. ठंडा पानी, कच्चे नारियल का पानी पीने से आराम मिल जाता है। 2. नींबू का टुकड़ा थोड़ी-थोड़ी देर से चूसने से भी लाभ होता है। 3. हिचकी चलने पर नाक में कपड़े या पतला धागा डालकर हिलाने से आराम मिलता है। 4. हींग और घी का उपयोग एक चम्मच घी में 2-3 चुटकी हींग मिलाकर गमर करके और इसमें एक गिलास छाछ मिलाकर पीने से आराम मिलता है। 5. दही में नमक मिलाकर धीरे-धीरे खाने से भी आराम मिलता है। 6. एक चम्मच चीनी को मुँह में रखकर चूसे व इसके बाद पापी पीने से भी हिचकी में आराम मिलता है। 7. कभी कभी हिचकी बहुत बार मामूल हंसी व चुटकला सुनने से अपने आप बंद हो जाती है। इसका भोग काल 11-12 दिन तक रहता है। 8. थोड़ी देर तक सांस रोकसे से, छाती पर हला दबाव, जीभी निकालना, नाक पकड़कर पानी पीने से भी नियंत्रण हो जाता है।

सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर इलाज से आराम हो जाता है किन्तु बहुत सी हिचकिया एक साथ आने पर और हिचकी के साथ पूरा शरीर कांप उठे तो इससे या अनेक रोग होने पर यह सरलता से आरोग्य नहीं होती है अतः एलोपैथी पद्धति अपनाना उचित रहता है।

हमें जब भी हिचकी आती है तो यही कहा जाता है कि हमें कोई याद कर रहा है जहाँ तक वैज्ञानिक इसे नहीं मानते हैं किन्तु इसे पूरा सच मानना उचित नहीं है। हमारे मन व शरीर पर मानवीय संवेदनाओं का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है जो मस्तिष्क पर प्रभाव डालती है व इन संवेदनाओं से तंत्रिका तंत्र प्रभावित होकर हिचकी आने के कारण बनती है। व उस व्यक्ति की याद करने या हिचकी दूर हो आती है या कभी कभी याद करने वाला व्यक्ति आपके सामने आते ही हिचकी दूर हो जाती है क्योंकि तंत्रिका तंत्र की उत्तेजना शांत हो जाती है।

होम्योपैथी पद्धति में रोग के कारणों व लक्षणों के आधार पर प्रभावी नियंत्रण हो सकता है जिनमें प्रमुख औषधियाँ जिन्सेंग, नक्स, इग्नेशिया, नेट्रमम्यूर, हायोसाइमस, कोलचिकम, कुप्रमेट, लाइकोपोडियम, पल्सेटिला सिना आदि। इलाज के पूर्व अनुभवी समर्पित चिकित्सक की सलाह लेना चाहिये।



हास्य तरंग

1. नई नवेली पत्नी पति कही घूमने जा रहे थे। पति ने रास्ते में रूककर कर टॉफी खीदता है, तो पत्नी कहती है कि अपने लिये भी कुछ ले लो, पति मैं बिना खाये भी चुप रह सकता हूँ।

2. पत्नी से दुखित पति ने भोजन करते समय पत्नी से पूछा यह जो सब्जी बनाई है उसका क्या नाम है। पत्नी ने डाँटते हुये कहा तुम्हें खाने से मतलब रखना चाहिये। पति ने कहा मुझे ऊपर जाकर जबाब देना है कि क्या खाकर मरा था।

3. भावित अपने दादा जी के गांव गया वहां पर गाय को हरा चश्मा पहिने देखकर बड़े भाई से पूछता है कि गाय को चश्मा क्यों लगाया है। भाई 30 वर्ष पानी की कमी से हरा चारा नहीं है, गाय दूसरा सूखा चारा नहीं खाती है इसलिये हरा चश्मा लगाया है।

4. धार्मिक गुरु जी अपने भाषण में गुंजती हुई आवाज में बोल रहे थे आने वाला समय बहुत दुख भरा होगा। बादल गरजेगे, बिजलियाँ कड़केगी, सैलाब आयेगा, आंधी चलेगी, शोलों बरबात होगी। ऊँचे पहाड़ तिनको की तरह हवायें उड़ा ले जावेगी। तभी एक बच्ची मम्मी से बोली उस दिन स्कूल की छुट्टी तो हो जायेगी न ?

5. डॉक्टर (अपने दोस्त से) बचपन में फिल्में देखकर डांकू बनना चाहता था। दोस्त- डॉ. साहब आप बहुत भाग्यशाली है, आपके इलाज का बिल देखकर यही लगता है कि दुनिया में कितने सपने सच होते हैं, मात्र तरीका अलग है।

संकलन: जिनेंद्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

मैगी मसाला

धनिया - 1 चम्मच

जीरा - 1 चम्मच

मैथी - 1 चम्मच

सौंठ - 1 चम्मच

लौंग - 8 दाने

काली मिर्च - 10 दाने

तेजपत्ता - 2 पीस

नमक - 2 चम्मच

कोर्न फ्लोर - 1 चम्मच

अमचूर - 1 चम्मच

बूरा - 4 चम्मच

हल्दी - 1 चम्मच

विधि: 7 नंबर तक ही सभी चीजों को धीमी आंच पर हल्का-हल्का भून लें और ठंडा होने पर बारीक पीस ले फिर बाकी सब चीजें पिसें मसाले में मिला दें, व अब इन सब वस्तु को मिलाकर पिसे बस आपका स्वादिष्ट मैगी मसाला तैयार।

बाल कहानी

कमलेश का कलश



घटना 4 जून की है जब कुण्डलपुर में महामस्तकाभिषेक की भेरी बज चुकी थी कुण्डलपुर का पूरा तीर्थ क्षेत्र जयकारों की ध्वनि से गूँज रहा था परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज सिंहासन पर विराजमान थे उनका पूरा संघ गरिमामय सान्निध्य दे रहा था मुनि श्री प्रसादसागर जी के पास तभी एक बालक आकर कहने लगा महाराज जी क्या मैं अभिषेक कर सकता हूँ, मुनि श्री ने सिर हिलाकर हाँ कह दिया बोलियां लगना प्रारंभ थी बोली पर बोली चलती चली जा रही थी और बोली ढाई करोड़ में जाकर समाप्त हुई और यह बोली आर.के. मार्बल्स ग्रुप के मुखिया अशोक पाटनी मदनगंज किशनगढ़ ने ली थी।

कमलेश संपूर्ण सुरक्षा कवच को भेदकर बड़े बाबा की सीढ़ियों तक पहुंच गया उसका पुण्य इतना तेज था कि उसे किसी भी स्वयं

सेवक ने रोका तक नहीं जब अशोक पाटनी सीढ़ी पर कदम रखने ही वाले थे तब कमलेश ने पाटनी जी के पैर छूकर अपनी तोतली भाषा में कहा- दादा मुझे भी अभिषेक करना है पर हाथ फैरते हुये कहा- बेटा तुम जरूर अभिषेक करोगे और मेरे पहले अभिषेक करोगे इतनी बड़ी बात सुनकर कमलेश को यह विश्वास नहीं हुआ कि मैं बिना पैसे के अभिषेक कर पाऊँगा इसी बीच एक स्वयं सेवक लपककर आये और कमलेश का हाथ पकड़कर बोले तू यहां कैसे आया तब अशोक पाटनी जी ने कहा आप इसका हाथ छोड़ दीजिये और आप परेशान न हों इस बालक को मैंने अभिषेक करने का कह दिया है अशोक पाटनी जी से पहले कमलेश सीढ़ियों पर चढ़ा और उसने बड़े बाबा का प्रथम कलश किया तभी कुण्डलपुर के अध्यक्ष संतोष सिंघई ने कमलेश के सिर मुकुट भी लगा दिया पाटनी जी की यह गुप्त उदारता अभी तक अप्रकाशित है।

संस्कार गीत

भारत देश प्यारा



भारत है एक अपना
दुनिया में देश प्यारा
कण कण पवित्र जिसका
वह देश है हमारा

1.

तप त्याग की है माटी
गंगा जमुना की धारा
है मातृ भूमि सुंदर
सुरधाम धर्म न्यारा ॥

2.

आगम की ज्ञान गाथा
गीता का ज्ञान सारा
अध्यात्म साधना का सुख
सूत्र मोक्ष द्वारा

3.

सुख शांति का वतन
मन जन तंत्र का सहारा
समरसता उदाहरण है
विश्व में न्यारा

बाल कविता

धर्म अहिंसा



परम धरम है मात्र अहिंसा
संयम पथ, सोपान अहिंसा
धर्म अहिंसा वेद बताते
अष्टादश पुराण सिखाते
सब तप में तप धर्म अहिंसा
विश्व शांति का मंत्र अहिंसा
जहाँ अहिंसा है निष्काम
वहाँ देवगण करें प्रणाम
वेद विदित नित धर्म अहिंसा
सब धर्मों का सार अहिंसा

समाचार

समाधिमरण

बारा (राजस्थान)- क्षुल्लक श्री अरहंतसागर महाराज का समाधिमरण 26 मई 2023 को बारा राजस्थान में हुआ।

तिलवाराघाट (जबलपुर)- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित क्षुल्लक श्री धर्मसागर महाराज जी का समाधिमरण 27 मई 2023 को दोप. 12.35 बजे दयोदय तीर्थ तिलवारा घाट जबलपुर में हुआ।

लाल मंदिर (दिल्ली)- आर्यिका श्री चंद्रमति माताजी की शिष्या आर्यिका श्री दक्षमति माताजी का समाधिमरण 07 जून 2023 को श्री दिगम्बर जैन लाल मंदिर दिल्ली में आचार्य अतिवीर महाराज के सान्निध्य में हुआ।

अयोध्या- आचार्य श्री विपुलसागर महाराज जी का समाधिमरण 01 जून 2023 को मध्याह्न 11 बजे श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अयोध्या में हुआ।

जागृति एनक्लेव (दिल्ली)- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में क्षुल्लिका श्री जागृतमति माताजी का समाधिमरण 08 जून 2023 को हुआ।

धर्मतीर्थ क्षेत्र- आचार्य श्री गुप्तिनंदि महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में मुनि श्री रविनंदि जी महाराज का समाधिमरण 24 जून 2023 को 11.27 मिनट पर हुआ।

डोंगरगढ़ (छत्तीसगढ़)- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 12 जून 2023 को लगभग 1 बजे पं. लालचंद जी जैन (राकेश) गंजबासौदा का समाधिमरण 10 प्रतिमा लेकर हुआ।

दीक्षाये सम्पन्न

सागर- उपाध्याय विक्रसंतसागर महाराज जी

के करकमलों से श्रीमति कुसुम जैन की क्षुल्लिका दीक्षा 06 मई 2023 को हुई। जिनका नाम क्षुल्लिका श्री विदेहश्री माताजी रखा गया।

सागर- उपाध्याय विक्रसंतसागर महाराज जी के करकमलों से श्रीमति कुसुम जैन की आर्यिका दीक्षा 07 मई 2023 को हुई। जिनका नाम आर्यिका श्री विदेहश्री माताजी रखा गया।

जागृति एनक्लेव (दिल्ली)- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के करकमलों से श्रीमती मगनमाला राधेपुरी दिल्ली को क्षुल्लिका दीक्षा 08 जून 2023 को दी गई। जिनका नाम क्षुल्लिका श्री जागृतमति माताजी रखा गया।

डीमापुर गुवाहटी- गणिनी आर्यिका श्री गरिमामति माताजी के करकमलों से ब्र. उर्वशी दीदी को आर्यिका दीक्षा 1 जून 2023 को दी गई। जिनका नाम आर्यिका श्री विख्यातमती माताजी रखा गया।

मुरैना- आचार्य श्री ज्ञेयसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. नवीन भैया आगरा को श्रीज्ञानसागर तीर्थ मुरैना में मुनि दीक्षा 23 जून 2023 को दी गई। जिनका नाम मुनिश्री नियोगसागर जी महाराज रखा गया।

आगामी दीक्षाये

सोनागिर- मुनिश्री पुण्यसागर महाराज जी के करकमलों से 2 जुलाई 2023 को चातुर्मास स्थापना के समय श्रीमति सुनीता देवी छावडा गुवाहटी एवं श्रीमती तारा देवी जैन घाटोल को दीक्षाये दी जावेगी।

अरहंतगिरि- आचार्य श्री सुविधिसागर महाराज जी के करकमलों से 05 जुलाई 2023 को ब्र. सरला जैन मुरैना को क्षुल्लिका दीक्षा दी जावेगी।

शुभकामनायें

सागर- गौरव की बात है कि सागर जिले की तहसील खुरई ग्राम खिमलासा मालगुजार परिवार का बेटा श्रीमान कमलेश कुमार जैन सुपुत्र कल्पेश जैन को (एम.पी., पी.एस.सी) (डी.एस.पी) पद पर चयनित होने पर बहुत बहुत बधाई।



सागर- एम.पी. पी.एस.सी का रिजल्ट सागर जिले में शाहगढ़ तहसील अंतर्गत अमरमऊ गांव में खुशिया की सौगात लेकर आया। संदीप कुमार जैन ने पी.एस.सी चयनित होने पर उन्होंने जिले का मान बढ़ाया है। संदीप जैन को जी.एस.टी कमिश्नर के पद पर चयनित होने पर बहुत-बहुत बधाई।



छतरपुर- जिले के रहने वाले आयुष जैन ने मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग की परीक्षा में 13वां स्थान प्राप्त किया है। उनका चयन डिप्टी कलेक्टर पद पर हुआ है। इसके पहले उन्होंने ड्रग इंस्पेक्टर के पद पर मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

भाई-बहन ने किया कमाल



सागर जिले की तहसील शाहगढ़ की आर्यिका गुणमति माताजी अदावन परिवार में एक नहीं बल्कि दो परीक्षार्थियों ने पीएससी पास कर ली, बहन का चयन डिप्टी कलेक्टर तो भाई का चयन जिला शिक्षा अधिकारी पद पर चयनित होने पर बहुत बहुत बधाई। दोनों आपस में सगे भाई-बहन हैं।

चातुर्मास विशेषांक सूचना

आपके नगर में किसी भी आचार्य/उपाध्याय/साधु/आर्यिका माता जी/एलक जी/क्षुल्लक जी/ क्षुल्लिका माताजी का चातुर्मास होना तय हो गया हो तो उसकी जानकारी संस्कार सागर कार्यालय तथा व्हाट्स नम्बर 8989505108 ईमेल आई डी sanskarsagar@yahoo.com पर शीघ्र अतिशीघ्र दें ताकि आगामी अंक चातुर्मास विशेषांक रहता है। इसमें सभी साधु चातुर्मास कहा करें रहें कितने साधु है किसी एक या दो व्यक्तियों का सम्पर्क सूत्र पिनकोड सहित दिया जाता है। अतः उपरोक्त जानकारी देकर अनुग्रहीत करें। इस वर्ष में चातुर्मास के बाद हुई दीक्षाये एवं समाधि का विवरण भी शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

ब्र. जिनेश मलैया प्रधान सम्पादक संस्कार सागर

फोन नं.-0731-4003506, मो. 8989505108, 6232967108

वर्ग पहेली 285

1		2	3		4		5	
		6				7	8	
		9		10		11		
12	13			14	15			
	16		17		18		19	
20			21	22		23	24	
		25				26		
27	28		29		30			
31				32			33	

ऊपर से नीचे

- राग द्वेष रहित आत्म परिणाम -4
- छोना, पशु का बच्चा -3
- सहने का भाव -3
- यश, गुणकीर्ति -2
- फीजेट पार्टीज पक्षी -3
- पग, डग -3
- हस्त, हाथ, पंजा -2
- कमीना, पापी, नीच -3
- जन्म, पैदा होना, उत्पत्ति -3
- अर्जित करना -3
- मस्सा -2
- सिक्खों के प्रथम गुरु -3
- समयसार प्रवचनसार के टीकाचार आचार्य -4
- अचानक आने का भाव -4
- रोक रोकने का भाव -2
- स्वामी, मालिक, पति -2
- शव -2

बाये से दाये

- भ. महावीर का प्रथम देशना पर्व -8
- अन्य पुरुष सर्वनाम सः का अर्थ -2
- पर्यंत, सीमा का अंत -2
- सोना धतूरा -3
- पारा, एक धातु तरल चमकीली -3
- हाथी, 36 इंच का नाप -2
- नगदी, धन, गहना -3
- सभी, सारी सब कुछ -3
- पीटना, ताड़ना, वध करना -3
- आदमी, पुरुष -2
- अभ्यास करना, आदत डालना, तप योग साधना -3
- गीला आर्द्र -2
- वह (संस्कृत) में सर्वनाम -1
- झांकना देखना, ताक का भाव -3
- पलटन, वाहनी, अनीक -2
- अव्यवस्थित ध्वनि -4
- नाक का आभूषण -2
- विनाश, क्षय, नष्ट का भाव -2
- जय, विजय, फतह -2

वर्ग पहेली 284 का हल

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
ज्ञा	न	सा	ग	र	ज	न	क																						
ता	र		ग	त	ल		ह																						
	वा	म	न	अ	ज	मे	र																						
स	ह	ज	खा	द	रु																								
म	न	मा	नी	ब	का		स																						
य			र	थ	क	ज	य																						
सा	ध	न		स		ज	य																						
ग	म		श्री	मं	ती		म																						
र	स		दी		कः		ति																						

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

राहु के चंगुल में



नियम

- आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
- समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
- पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
- पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक
कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें



श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

सदस्यता क्र.

पता :

तीर्थ हमारी प्रतिष्ठा आस्था का केन्द्र है “तीर्थ रक्षा धर्म रक्षा”



शिरपुर की यात्रा
तीर्थ रक्षा का अमोघ अस्त्र है
आपकी उपस्थिति
तीर्थ रक्षा का आधार है

✽ अनुरोध ✽

दिगम्बर श्रमण संस्कृति के पूज्य मुनिवर से
श्रावक श्रेष्ठियों के लिये
शिरपुर यात्रा की प्रेरणा अवश्य दें।

✽ शिरपुर स्थिति ✽

शिरपुर जैन वाशिम महाराष्ट्र



मूल स्वरूप प्रकट करने हेतु मंत्र जाप

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीं अंतरीक्ष
पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ।

यह मंत्र जाप अवश्य करे ।

संस्कार सागर चर्चिए सिर्फ एक
Click पर

www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008